आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 1

हरमहिंदर चहल

अनुवाद : सुभाष नीरव

(1)

यह अफ़गानिस्तान का गज़नी शहर था। उस दिन वर्ष 2008 के जुलाई महीने की 17 तारीख़ थी। दिन भर बेइंतहा गरमी पड़ती रही थी। दिन ढलने लगा तो गरमी की तपिश भी कम होने लगी। आख़िर लंबा दिन गुज़र गया और थाने की दीवारों के साये अहाते के दूसरे सिरे पर जा पहुँचे। सूरज छिपने ही वाला था जब थानेदार गनी खां शहर का चक्कर लगाने के लिए उठा। आज उसका सारा दिन बाहर ही गुज़र गया था। सुबह से ही वह अमेरिकन फ़ौज़ की उस टुकड़ी के साथ घूम रहा था जो कि गाँवों की तरफ़ चक्कर लगाने गई थी। आजकल इस इलाके में तालिबानों का ज़ोर था। अमेरिकी फ़ौज़, इलाके की पुलिस को संग लेकर गाँवों की छानबीन के काम में लगी हुई थी। अमेरिकी फ़ौज़ों ने इस इलाके को तालिबानों से मुक्त करवाने का बीड़ा उठा रखा था। वे अपने मिशन में सफ़ल भी हो रहे थे। हर रोज़ सवेरे ही फ़ौज़ का काफ़िला चल पड़ता था। जिस इलाके में उन्हें जाना होता, वहाँ के थाने का अमला-फेला साथ जाता था। इसी तरह आज गनी खां के थाने के गाँवों की बारी थी। इसीलिए आज उसका पूरा दिन बाहर घूमते हुए ही गुज़र गया था। गनी खां की एक आदत थी कि वह कितना भी व्यस्त होता, पर शाम के वक़्त शहर का चक्कर अवश्य लगाता था। आज भी घर जाने से पहले उसने शहर का एक चक्कर लगाने का मन बनाया। उसके कहने पर हवलदार कुछ सिपाहियों को ले आया और ड्राइवर ने पिकअप ट्रक को थाने के गेट के आगे ला खड़ा किया। गनी खां आगे ड्राइवर के साथ बैठ गया और शेष अमला ट्रक के पीछे खड़ा हो गया। थोड़ा घूमकर ड्राइवर ने ट्रक को बाज़ार की ओर मोड़ लिया। बाज़ार में से गुज़रते हुए ट्रक गली का मोड़ मुड़ने लगा तो गनी खां ने सामने बंद पड़ी एक दुकान के आगे बुर्के से ढकी एक औरत की ओर देखा। वह औरत नीचे ज़मीन पर बैठी थी और उसके साथ करीब बारह वर्ष का एक लड़का था। गनी खां ने मन ही मन सोचा कि शहर में मंगतों की गिनती बहुत बढ़ गई है। मोड़ मुड़ते ही पिकअप ट्रक जब करीब से गुज़रा तो उसने बड़े ध्यानपूर्वक उस औरत की तरफ़ झांका। औरत ने पास रखे काले रंग के बड़े-से बैग को कसकर हाथों में पकड़

रखा था। तभी गनी खां का पुलिसिया दिमाग हरकत में आ गया। यह इतना बड़ा बैग क्यों उठाये घूमती है - उसने सोचा। उसको शक हुआ तो उसने ट्रक रुकवा लिया और नीचे उतरकर औरत के पास चला गया। एक पैर चबूतरे पर रख और हाथ वाला डंडा औरत की तरफ करके उसने पूछा, “ऐ बीबी, कौन है तू?“

“मैं तो एक गरीब औरत हूँ। अपने पति को खोजती फिरती हूँ जो लड़ाई में कहीं गुम हो गया है।“ इतना कहते हुए वह खड़ी हो गई। उसने पास में रखा बैग उठा लिया।

“तेरे साथ यह लड़का कौन है?“

“यह तो कोई अनाथ है। भूचाल में इसके माँ-बाप मारे गए थे। मैं इसको संग ले आई थी।“ इतना कहकर वह उठी, बैग को कंधे से लटकाया और लड़के की उंगली पकड़कर चल पड़ी।

“ऐ रुक जा।“ गनी ख़ां ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया। औरत के हावभाव और बोलने के ढंग ने उसके सन्देह को और भी बढ़ा दिया था। उसको पिछले दिनों किसी मुखबिर से मिली ख़बर याद हो आई कि कोई औरत यहाँ गवर्नर पर आत्मघाती हमला करने की ताक में है। इतने में सिपाहियों ने औरत को चारों ओर से घेर लिया। एक ने आगे बढ़कर उससे बैग छीना और उसको खंगालने लगा। कुछ काग़ज़ बाहर निकाले। गनी ख़ां ने काग़ज़ों को ध्यान से देखा तो वह बहुत हैरान हुआ। ये नक्शे वगैरह थे। उसके कहने पर पुलिस वालों ने उस औरत को बच्चे सहित ट्रक में बिठा लिया और थाने की तरफ़ चल पड़े। थाने पहुँचकर उसके बैग की अच्छी तरह से तलाशी ली गई। और भी हैरान करने वाली वस्तुएँ बैग में से मिलीं। दो बोतलों में कोई ख़तरनाक कैमिकल थे जो कि बम बनाने का मसाला प्रतीत होते थे। इसके अलावा दो किलो के करीब सोडियम सायनाइड मिला। बाकी हाथ से लिखे हज़ारों काग़ज़ मिले जो कि अधिकतर अंग्रेजी में थे। बैग में काफ़ी संख्या में नक्शे थे जिनमें एक यहाँ के गवर्नर के घर का भी था। उस औरत ने अपना नाम सलीहा बताया। गनी खां को पूरा यकीन हो चुका था कि यह औरत किसी आतंकवादी संगठन की ख़तरनाक मेंबर है और हो सकता है कि यहाँ के गवर्नर को आत्मघाती हमले में मारने निकली हो। उसने तुरन्त गवर्नर दफ़्तर को ख़बर की। उन्होंने आगे अमेरिका के बैगराम एअरपोर्ट बेस को सूचना भेजी। इस बीच रात में औरत की पिटाई भी हुई, पर उसने मुँह नहीं खोला। उसके साथ पकड़े गए लड़के को अलग कर दिया गया था। अगले दिन सवेरे ही अमेरिकन फ़ौज़ का कैप्टन राबर्ट सिंडर अपनी टुकड़ी लेकर ग़ज़नी थाने की ओर चल पड़ा। तब तक उस औरत को थाने में से निकालकर नज़दीक की एक इमारत के बड़े कमरे में बिठाया हुआ था। काबुल से अफ़गान

सरकार के कुछ बड़े अधिकारी भी उससे बात करने के लिए पहुँचे हुए थे। जब कैप्टन सिंडर अपने अमले-फेले के साथ वहाँ पहुँचा तो इमारत को स्थानीय अफ़गानियों ने घेर रखा था। वे हथियारबंद थे क्योंकि वहाँ बात फ़ैल चुकी थी कि थाने वाले किसी बेकसूर औरत को अमेरिकियों के हवाले करने जा रहे हैं। कैप्टन मन ही मन बोला, “जिस बात का डर था, वही हो गई।” उसने देखा था कि यहाँ अफ़वाहों का बहुत ज़ोर रहता था। ज़रा-सी बात हुई नहीं कि अफ़वाह उड़ी नहीं। यही नहीं बल्कि अफगानी लोग हथियारबंद होकर पहुँच जाते थे। आज भी ऐसा ही हुआ था। लोगों के हुजूम ने हथियार उठाये हुए थे। आसपास नज़र घुमाते हुए उसने मन ही मन सोचा, “आज यहाँ ज़रूर कुछ न कुछ होकर रहेगा। एक तो औरत का मामला है और ऊपर से उसे कल रात से पकड़ा हुआ है। लोग भी धड़ाधड़ इकट्ठे हुए जा रहे हैं। पता नहीं हालात कैसे बन जाएँ।” यही सब सोचकर उसने सबको पूरी मुस्तैदी के साथ रहने का हुक्म दिया और लोगों में से राह बनाता हुआ अपने खास दस्ते के साथ बड़ी इमारत के अन्दर चला गया। आगे करीब तीन सीढ़ियाँ चढ़कर वे इमारत के दरवाज़े तक पहुँच गए। दो व्यक्ति बाहर पहरे पर खड़े हो गए। कैप्टन और वारंट अफ़सर अंदर चले गए। दुभाषिया भी उनके साथ था। कैप्टन ने अंदर बैठे अफगानी लोगों और अफ़सरों की ओर देखते हुए झुककर सलाम किया। उसने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। पिछली ओर पर्दा तना हुआ था। वह समझ गया कि गिरफ़्तार की गई औरत इस पर्दे की ओट में होगी। कैप्टन और वारंट अफ़सर अन्य सभी के साथ नीचे फर्श पर ही बैठ गए। उन्होंने अभी बातचीत आरंभ ही की थी कि वहाँ गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ सुनते ही वारंट अफ़सर ने अपना पिस्तौल निकालकर गोली चला दी जो कि पर्दे के पीछे बैठी औरत के पेट में लगी। जब पता चला कि औरत ज़ख़्मी हो चुकी है तो कैप्टन ने अपने लोगों को आवाज़ दी। सभी ने तुरंत औरत को स्ट्रेचर पर डाला और पिछले दरवाज़े से अपने ट्रक तक पहुँचे। वहाँ से ज़ख़्मी औरत को संग लेकर वे बैगराम एअरफोर्स बेस की ओर चल दिए। वहाँ उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। साथ ही उसकी असली पहचान मालूम करने के लिए उसके फ़िंगर-प्रिंट लिए गए। दो घंटों के बाद एफ.बी.आई के दफ़्तर से उसकी सही पहचान की रिपोर्ट आ गई। जब सभी विभागों को उसके असली नाम का पता चला तो हर तरफ़ तहलका मच गया। वह कोई साधारण औरत नहीं थी। वह अमेरिकी एफ.बी.आई. द्वारा घोषित की गई विश्व की सबसे ख़तरनाक आतंकवादी औरत थी और उसका नाम था - आफ़िया सिद्दीकी।

आफ़िया सिद्दीकी का ज़िहाद - 2

(2)

इस्मत जेहान का जन्म 1939 में बुलंद शहर में हुआ। यहीं उसने बचपन बिताया। इस्मत ने स्कूल अभी पूरा भी नहीं किया था कि हिंदुस्तान का बंटवारा हो गया। वह परिवार के साथ पाकिस्तान चली आई। यहीं उसका विवाह मुहम्मद सुलेह सद्दीकी के साथ हुआ। सुलेह सद्दीकी पेशे से डॉक्टर था। विवाह के कुछ समय बाद वह इंग्लैंड चले गए। वहाँ वे कई वर्ष रहे। उनके परिवार में पहले बेटे का जन्म हुआ जिसका नाम उन्होंने मुहम्मद अली रखा। फिर 1966 में पहली लड़की फौजिया का जन्म हुआ। इसके बाद वे वापस पाकिस्तान लौट आए। यहीं मार्च, 1972 में उनकी दूसरी बेटी ने जन्म लिया जिसका नाम आफिया रखा गया। इसी साल जुलाई महीने में सुलेह के साले एस.एच. फारूकी का परिवार उनसे मिलने आया। फारूकी परिवार इस्लामाबाद में रहता था। नाश्ता-पानी से फुर्सत पाकर वे ड्राइंग रूम में बैठ गए। बातें चलीं तो शीघ्र ही वे मौजूदा मसले के बारे में बात करने लगे। बात शुरू करते हुए फारूकी बोला, "भाई साहब, भुट्टो ने मुल्क का बेड़ा डुबो कर रख दिया।"

"क्या किया जा सकता है। मगर अकेला वही तो जिम्मेदारी नहीं है। सभी ने मिलकर ही पाकिस्तान के मुँह पर कालिख मली है।"

"गर असल में पूछते हो तो यह काम याह्या खां के ज़माने से शुरू हुआ।" फारूकी की बीवी ने बातचीत में हिस्सा लेते हुए अपना विचार रखा।

"फौज तो सारी ही इस बदनामी का कारण बनी है।"

"अगर पहले ही संभलकर चलते तो क्या फर्क़ पड़ता था। आज ये दिन तो न देखने पड़ते।"

"सच बात तो यह है कि इन्होंने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की भावनाओं की कद्र नहीं की। जब मुजीब-उल-रहमान पाटी की पार्टी जीत गई थी तो हुकूमत उसके हवाले कर देते। उसूल तो यही कहता है।"

"उसूल आम लोगों के लिए हैं। इन रजवाड़ों के लिए नहीं। इन्होंने तो उन लोगों को कभी बराबरी का दर्ज़ा भी नहीं दिया था। फिर यह सब तो होना ही था।"

"इंडिया ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की मदद करके हमारी छाती पर मूंग दली है। इंशा अल्ला कभी मौका मिला तो हमें भी हिसाब बराबर करना चाहिए।" इस बार इस्मत बोली।

"इंडिया ने जो भी किया है, वह अपने हिसाब से सही किया है। उसकी जगह कोई दूसरा देश होता तो वह भी यही करता। राजनीति यही कहती है।" सुलेह सद्दीकी ने अपना विचार प्रकट किया।

“जो भी हुआ, अच्छा या बुरा यह अलग बात है। पर इस कार्रवाई ने कायदे-आज़म, अल्ला उनकी रूह को जन्नत बख्शे, का दो कौमों का सिद्धांत गलत साबित कर दिया है। इस बात ने पाकिस्तान का अस्तित्व ख़तरे में डाल दिया है।”

“और नहीं तो क्या… कितनी हसरतों से इधर आए थे कि मुसलमानों का अपना मुल्क बन गया है। अल्ला की मार पड़े इन लीडरों को जिन्होंने लोगों की भावनाएँ कुचल कर रख दी हैं। यह बंगला देश नहीं बना, यह तो हमारी जम्हूरियत के मुँह पर थप्पड़ है।”

“कौन सा बंगला देश? मैं नहीं मानती इसको। तुम पूर्वी पाकिस्तान कहो।” इस्मत नफ़रत में बोली।

“आपा, तुम्हारे कहने से क्या होता है। ज़रा गौर फरमाओ कि पिछले हफ़्ते ही तो हमारे वज़ीरे आलम भुट्टो साहिब शिमला समझौते पर दस्तख़त करके आए हैं। उस समझौते की मुख्य मद यही है कि पाकिस्तान बंगला देश के अस्तित्व को मानता है। उस पर दस्तख़त करने का मतलब है कि पाकिस्तान ने बंगला देश को मान्यता दे दी है।”

“यह समझौता भी तो भुट्टो ने अपनी छवि बचाने के लिए ही किया है। अगर उसको मुल्क की फिक्र होती तो वह उन एक लाख फौजियों की रिहाई की बात करनी न भूलता जो इंडिया ने जंगी-क़ैदी बनाए हैं।”

“अगर जनरल नियाज़ी ज़रा हिम्मत से काम लेता तो वह क़ैद ही नहीं होते और शायद बंगला देश भी न बनने देते।” यह विचार फारूकी की बेगम का था।

“बेगम क्या बात करती हो तुम। इसमें नियाज़ी साहब का रत्तीभर भी कसूर नहीं है। वह अपनी सरकार की मदद के बग़ैर कितनी देर लड़ सकता था।”

“अवाम कभी भी भुट्टो को मुआफ़ नहीं करेगी। न ही फौज करेगी। और तो और, उसने कश्मीर मसले को भी दूसरा ही रूप दे दिया। मकबूज़ा (अधिकृत) कश्मीर की हद को ‘लाइन-ऑफ़ कंट्रोल’ का रूप दे आया। कहता है कि भविष्य में इस मसले का हल बातचीत के जरिये ही निकाला जाएगा। कोई पूछ तो सही कि अगर भविष्य में कभी इंडिया, पाकिस्तान पर हमला कर दे तो उसका हल भी बातचीत से ही निकालना।”

“भाई साहब, यह सब तो होना ही था। और फिर जो हो चुका है, वह बदला नहीं जा सकता। हमें सच्चाई कुबूल करनी ही पड़ेगी।” सुलेह सद्दीकी ने यह बात कही तो सभी चुप हो गए। फारूकी ने बात का रुख बदलते हुए अन्य बात छेड़ दी, “भाई साहब, तुम्हारा अफ्रीका जाने का प्रोग्राम कैसे है?”

“बस, सब इंतज़ाम मुकम्मल हैं। जैम्बिया की लोअस्का यूनिवर्सिटी की ओर से नौकरी का ख़त भी आ चुका है। अब तो शायद इसी महीने रवाना हो जाएँ।”

फिर वे दूसरी बातें करने लगे। शाम ढले फारूकी परिवार जाने के लिए उठा। उन्होंने सभी बच्चों के सिर पर हाथ रखा। चादर में लिपटी पड़ी छोटी-सी आफिया का मुँह चूमा। फिर कार में बैठकर चले गए। इसके कुछ हफ़्ते बाद ही सद्दीकी परिवार जैम्बिया चला गया।

यहाँ आकर सुलेह सद्दीकी, लोअस्का मेडिकल युनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर की नौकरी करने लगा। इस्मत बच्चों को संभालती थी। वह सारा दिन घर में खाली रहती थी। उसने इस खाली समय को धर्म के कामों में लगाने के विषय में सोचा। धार्मिक कामों में वह प्रारंभ से ही बढ़-चढ़कर भाग लेती थी। इस्लाम पर चर्चा करना उसको बहुत अच्छा लगता था। यहाँ वह पड़ोसी स्त्रियों को दिन के समय एकत्र कर लेती और उनके साथ धार्मिक मसलों पर बातें करती। अच्छा वक्ता होना उसका बड़ा गुण था। शीघ्र ही, उसके घर आने वाली स्त्रियों की संख्या में वृद्धि होने लगी। फिर तो यह गिनती इतनी हो गई कि उसको कहीं बाहर जगह का प्रबंध करना पड़ा। उसने अपने संगठन का नाम भी रख लिया। यू.आई.ए. यानी युनाइटिड इस्लामिक ऑरगनाइजेशन। उसका प्रभाव यहाँ के मुस्लिम समाज में बढ़ने लगा। सारी एशियन कम्युनिटी में सद्दीकी परिवार मशहूर हो गया। इस्मत का नाम दिनों दिन हरेक की जुबान पर आने लगा। अपने लोगों को धार्मिक शिक्षा देने के अलावा, इस्मत यह भी कोशिश करती थी कि करीबी क्रिश्चियन भाईचारे में से लोगों को अपने धर्म में लाया जाए। इस काम में वह सफल भी हो रही थी। आफिया हालाँकि तब बहुत छोटी थी, पर उसकी माँ उसको हर रोज़ ऐसे जन-समूहों में संग लेकर जाती। आफिया बड़े ध्यान से माँ की बातें सुनती। आफिया यद्यपि पूरी तरह इन बातों को नहीं समझ सकती थी, पर ये बातें उसके अवचेतन पर उतर रही थीं। इस्मत कहीं भी जाती छोटी-सी आफिया उसके साथ होती थी।

आख़िर सुलेह की नौकरी का समय पूरा हो गया। पूरा परिवार पाकिस्तान वापस लौट पड़ा। आफिया उस वक्त सात वर्ष की थी। यह 1980 का वो समय था जब पाकिस्तान के आस-पड़ोस में उथल-पुथल हो रही थी। ईरान में खुमैनी की रिवोलिशनरी इस्लामिक सरकार ने सत्ता संभाल ली थी। हर तरफ़ खुमैनी की चढ़त थी। पाकिस्तान में वो सबकुछ बदल गया था जो कि उनके अफ़्रीका जाने के समय में था। वहाँ फौजी जनरल जियाउल हक़ की कमांड के नीचे डिक्टेटरशिप कायम हो चुकी थी। उससे पहले प्रधानमंत्री जुल्फ़िकार अली भुट्टो जो कि बहुत अमीर व्यक्ति था, मुल्क को धार्मिक प्रभाव से ऊपर उठाकर एक शक्तिशाली जनतांत्रिक देश बनाना चाहता था। इससे धार्मिक लोग अर्थात मुल्ला वग़ैरह उससे बहुत नाराज़ थे। ज़ियाउल हक़ ने मौके की नब्ज़ को पहचानते हुए राज पलट दिया। उसके आते ही मुल्लों की अच्छी सुनवाई होने लगी। ज़ियाउल हक़ ने मुल्क को धार्मिक रंग में रंगना शुरू कर दिया था, क्योंकि वह जानता था कि यदि स्थायी रूप में

राज स्थापित करना है तो लोगों को धार्मिक हथियार से काबू में करना पड़ेगा। इसके लिए उसने ज़रूरी काम प्रारंभ किए। उसने धार्मिक उसूलों को लागू करने के लिए कौंसिल आफ इस्लामिक आयडियोलॉजी कामय की। ऐसे धार्मिक संगठनों की मदद से जियाउल हक ने पाकिस्तान को धार्मिक स्टेट बनाने के लिए पूरे यत्न आरंभ कर दिए। उसका पहला कदम था - स्त्रियों को परदे और चारदीवारी में बंद करना। कितने ही नए धार्मिक रंग वाले कानून बनाकर जिया उल हक ने मुल्क के धार्मिक लीडरों का विश्वास जीत लिया। हर तरफ धार्मिक रंग उभर रहा था जो कि पश्चिम के खिलाफ़ था। पश्चिम के खिलाफ़ ज़ोर-शोर से प्रचार हो रहा था। इन्हीं दिनों ईरान में अमेरिकी एम्बेसी के स्टाफ को क़ैद कर लिया गया। सऊदी अरब में उग्र इस्लामिस्टों ने मक्के की पवित्र बड़ी मस्जिद काबा पर कब्ज़ा कर लिया। पाकिस्तान में उग्रवादियों ने अमेरिका की अमेरिका की इस्लामाबाद स्थित एम्बेसी को आग लगाकर जला दिया। पश्चिम के विरुद्ध हर जगह गुस्सा भड़क रहा था। तभी दिसम्बर 1979 में सोवियत यूनियन की फौजें अफ़गानिस्तान में दाख़िल हो गईं। इस घटना ने सब कुछ बदलकर रख दिया।

अमेरिका जो अब तक ज़िया उल हक की कार्रवाइयों के कारण बहुत गुस्से में था, उसको अब जिया उल हक की ज़रूरत महसूस हुई। सोवियत यूनियन को टक्कर देने के लिए वह जिस करीबी शक्ति को ढूँढ़ रहा था, जिया उल हक उसके बिल्कुल मुफ़ीद आता था। सऊदी अरब और अमेरिका ने मिलकर अफ़गानिस्तान में सोवियन यूनियन के खिलाफ़ लड़ने की योजना बनाई जिसमें उन्होंने जिया उल हक को आगे लगा लिया। जिया ने पाकिस्तान की खूफ़िया एजेंसी, आई.एस.आई. को इसकी कमांड सौंप दी। उन्हीं दिनों में अफ्रीका से लौटकर डॉक्टर मुहम्मद सुलेह सद्दीकी ने कराची की एक हाई सोसायटी 'गुलशने इकबाल' में बंगला खरीद लिया जहाँ कि बड़े-बड़े अफ़सर और अन्य प्रभावशाली लोग रहते थे। जिया उल हक के चीफ़ ऑफ स्टाफ मिर्ज़ा असलम बेग का परिवार, सद्दीकी का पड़ोसी था। इस प्रकार यह परिवार पाकिस्तान पर राज करने वाले ग्रुप के बहुत करीब आ गया।

इस समय आफिया अपने बचपन का आनंद ले रही थी जबकि उसकी माँ अपने धार्मिक संगठन यू.आई.ओ. के लिए अधिक से अधिक काम कर रही थी। इस्मत सद्दीकी दिनों दिन प्रसिद्ध हो रही थी। यहाँ तक कि जिया उल हक की बेगम शैफ़ीक भी उसके प्रभाव के अधीन थी और उसकी धार्मिक कक्षाओं में उपस्थित हो रही थी। उस वक़्त तक इस्मत ऊँची सोसायटी में एक बहुत ही सम्मानजनक मुकाम हासिल कर चुकी थी। जिया उल हक खुद उससे प्रभावित था। ज़िया, इस्मत से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसको उस बोर्ड का मेंबर बना दिया जो कि कुरान के अनुसार ज़कात अर्थात चैरिटी एकत्र करने और उसको खर्च करने का प्रबंध करता था। इस बोर्ड में आते ही इस्मत का अन्य बहुत बडे बड़े संगठनों से सम्पर्क हुआ जो कि किसी न किसी ढंग से अफ़गानिस्तान में चल रहे जिहाद के जुड़ी हुई थीं। अफ़गानिस्तान के लिए जाने वाला प्रथम लड़ाकू जिहादी दल, सद्दीकी परिवार के घर से कुछ ही दूर स्थिति बिनूरी कस्बे की मस्जिद से रवाना

मध्य एशिया में अपना दबदबा कायम कर लेगा। उसने अफ़गानिस्तान से फुर्सत पाकर दूसरे हिस्सों की तरफ देखना शुरू कर दिया। सबसे पहले उसने अपना मुख्य एजेंडा चालू करने की विचार बनाया। वह था - इंडिया की ओर कश्मीर की आज़ादी (पाकिस्तानी इसको मकबूज़ा अर्थात पाक-अधिकृत कश्मीर कहते हैं ज़ब कि पाकिस्तान की ओर के कश्मीर को आज़ाद कश्मीर कहा जाता है)। जिया ने अपने लोगों को कश्मीर आज़ाद करवाने का नारा दिया। इसके लिए उसने वही तरीका चुना जो कभी अमेरिका ने अफ़गानिस्तान के लिए चुना था। अर्थात पाकिस्तान परदे के पीछे रहकर सारी लड़ाई लड़ेगा जब कि कश्मीर में तैयार किए गए जिहादी असली लड़ाई लड़ेंगे। इसके लिए उसने एक्शन शुरू किया तो शांत पड़े जम्मू-कश्मीर में भूचाल आ गया। जगह-जगह जिहादी पैदा हो गए। इस खेल में जिया उल हक दो मोर्चे मारना चाहता था। एक तो था इंडिया से कश्मीर छीनना और दूसरा था, बंगला देश वाला हिसाब चुकता करना। वह यहाँ तक आत्मविश्वास से भर गया कि उसने सोचा कि कश्मीर के आज़ाद होने के पश्चात वह इस प्रॉक्सी वार को भारत के अन्य हिस्सों में फैला देगा और देश के टुकड़े-टुकड़े कर देगा। कश्मीर के साथ ही उसने पंजाब पर भी आँख रख ली। अपना अलग देश बनाने के लिए वह सिक्खों को भड़काने लगा। उसका कहना था कि असली लड़ाई तुम लड़ोगे और सारी मदद वह करेगा। जिया उल हक उस वक़्त बहुत ऊँची उड़ानें भर रहा था। परंतु कुदरत अपना खेल स्वयं खेलती है। एक दिन सद्दीकी परिवार के घर फ़ारूकी का फोन आया। फोन इस्मत ने उठाया तो उधर से वह बोला, “आपा गज़ब हो गया।”

“क्यों क्या हुआ?”

“जिया साहब नहीं रहे।”

“क्या कहा?” इस्मत को अपने कानों पर विश्वास न हुआ।

“अभी अभी पता चला है कि जनरल जिया उल हक हवाई हादसे में मारे गए।”

“हाय अल्ला...।”

इस्मत का शरीर सुन्न हो गया। वह कुर्सी के डंडे को पकड़कर वहीं गिर पड़ी। उधर से दो चार बार आवाज़ आई तो वह अपने आप को संभालती हुई बोली, “भाई जान, यह तो बहुत बड़ा क़हर हो गया। हम तो जीते जी ही मर गए। अपने लिए तो वही सब कुछ थे। अल्लाह ख़ैर करे, पता नहीं इनके बग़ैर मुल्क का क्या होगा। पर यह सब हुआ कैसे?”

“वो कहीं दौरे पर गए थे। साथ ही, बड़े फौजी अफ़सरों के अलावा अमेरिकी राजदूत भी था। लौटते हुए बहावलपुर से हवाई जहाज से रावलपिंडी आ रहे थे। शायद किसी ने जहाज में बम रखवा दिया। जहाज उड़ने से कुछ समय बाद ही तबाह हो गया। कोई भी सवार नहीं बचा।”

"भाई जान, कौन उनकी जान का दुश्मन बन गया होगा?"

"आपा, क्या कह सकते हैं। पर लगता है कि या तो अमेरिका ने यह सब करवाया है या फिर रशिया ने।"

"अमेरिका भला ऐसा क्यों करवाएगा? उसकी तो ज़िया साहिब ने इतनी मदद की है। रशिया की यहाँ तक पहुँच नहीं हो सकती।"

"और फिर किसने करवाया होगा यह काम?"

"अल्लाह दोजख की भट्ठी में झोके उसको, यह सब हिंदुस्तानियों का किया करवाया है। इस वक़्त सबसे ज्यादा हिंदुस्तान ही ज़िया साहब से डरता था।"

"आपा आपने दुरुस्त फरमाया है। ख़ैर, धीरे-धीरे पता लग जाएगा। पर हुआ बहुत बुरा।"

"बुरे से भी बुरा। अपना तो सब कुछ ही बर्बाद हो गया। अल्लाह जन्नत बख्शे उनको। हमें तो ज़िया साहब ने बड़ा आदर-सम्मान दिया था। अब पता नहीं आगे क्या होगा।"

"आपा, एक बार तो सारा मुल्क दहशतज़फा हो गया है। इस्लामाबाद शहर तो इस तरह लगता है मानो वहाँ कोई बसता ही न हो। लोग बहुत ज्यादा उदास है। अल्लाह ख़ैर करे, देखो आगे क्या होता है।" इतना कहते हुए फारूकी ने फोन काट दिया।

इस्मत को इस ख़बर ने तोड़कर रख दिया था। छोटी-सी आफिया माँ को दहाड़ें मारकर रोते देखती रही।

जहाँ ज़िया के समर्थक लोग इस हादसे से टूटकर बिखर गए थे, वहीं विरोधी इसको अपने लिए एक अच्छा वक़्त मान रहे थे। उनके अनुसार एक ज़ालिम हाकिम से पीछा छुड़वाने में अल्लाह ने उनकी मदद की थी। इन लोगों में सबसे ऊपर बेनज़ीर भुट्टो थी। कुछ वर्ष पहले ही तत्कालीन प्रधान मंत्री और बेनज़ीर के पिता जुल्फ़कार अली भुट्टो को ज़िया उल हक ने न सिर्फ़ गद्दी से नीचे उतारा था, बल्कि बाद में फ़ांसी पर भी लटका दिया था। पिता की मौत के बाद अपनी पार्टी को आगे बढ़ाते हुए बेनज़ीर ने बड़ी यातनाएँ सही थीं। ज़िया उल हक की सरकार ने उसको ख़त्म करने की कोई कसर नहीं छोड़ी थी, पर फिर भी उसने लड़ाई जारी रखी। पिछले कुछ समय से वह पाकिस्तान में रहते हुए, लोगों को लामबंद कर रही थी। यह अवसर उसको बिल्कुल मुफ़ीद बैठ गया। उसने ज़ोर-शोर से लोगों का जम्हूरियत के लिए जागरूक करना शुरू कर दिया। उसकी मेहनत का नतीजा ही था कि कुछ देर बाद हुए चुनाव में उसकी पार्टी बहुमत ले गई और बेनज़ीर भुट्टो किसी

इस्लामिक देश की पहले महिला प्रधान मंत्री बन गई। जिया के समय से जो लोग धार्मिक प्रभाव के नीचे दबकर रह गए थे, उन्हें बेनज़ीर के आने से नई उम्मीदें मिल गईं। मुल्लो की जकड़ में आया मुल्क, एकदम घुटन से बाहर आ गया। एकदम सभी हालात बदल गए। इस परिवर्तन को इस्मत ने नए नज़रिये से देखा। उसने सोचा कि यदि बेनज़ीर भुट्टो राजनीति में आगे बढ़ रही है तो आफ़िया क्यों नही राजनीति कर सकती। उसका विचार था कि आफिया किसी बात में भी बेनज़ीर से कम नहीं है। वह सत्रह वर्ष की हो चुकी थी। उसने प्रारंभिक पढ़ाई पूरी कर ली थी। पढ़ाई भी उसने पाकिस्तान के मशहूर सेंट जॉसिफ कालेज से की थी, जहाँ पर बड़े बड़े लोगों के बच्चे पढ़ते थे। उसने हर विषय में 'ए' ग्रेड लेते हुए क्लास में टॉप किया था। देखने में भी वह बहुत खूबसूरत थी। कद हालांकि उसका छोटा यानी पाँच फुट दो इंच ही था, पर उसका व्यक्तित्व देखने में बहुत प्रभावशाली था। परंतु इसमें एक अड़चन वह स्पष्ट देख रही थी। वह यह थी कि पाकिस्तान में रहते हुए आफिया की शीघ्र ही शादी हो जानी थी। यहाँ के रिवाज़ के अनुसार उसकी शादी की उम्र हो चुकी थी। उसकी माँ ने सोच-विचार करके यह तय किया कि यदि इसको पढ़ने के लिए विदेश भेज दिया जाए तो यह बहुत आगे बढ़ सकती है और इस प्रकार उसके विवाह वाला मसला भी पीछे रह जाएगा। आफिया का भाई मुहम्मद अली, पहले ही पढ़ाई करने के लिए अमेरिका गया हुआ था। उसने वहाँ पढ़ाई पूरी करने के बाद आर्चीटेक्ट का काम शुरू कर रखा था। आख़िर, इस्मत ने अली के साथ सलाह-मशवरा किया। उसका भी यही कहना था कि आफिया अभी छोटी है और साथ ही पढ़ाई में बहुत होशियार भी है। इसलिए इसको अमेरिका भेज दिया जाए। आफिया के माँ-बाप ने विचार-विमर्श करके आख़िर आफिया को अमेरिका भेजने की तैयारी आरंभ कर दी। ईद के हफ़्ताभर बाद ही वह अमेरिका जाने वो जहाज़ में बैठी हुई थी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 3

(3)

डेल्टा एअरलाइन्ज़ का जहाज़ नीचे होने लगा तो आफिया ने नीचे धरती की ओर गौर से देखा। उसको कुछ भी नज़र न आया। नीचे धुंध की चादर-सी बिछी हुई थी। जहाज़ नीचे होता गया, पर नीचे अभी कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। आफिया ने महसूस किया जहाज़ काफ़ी नीचे पहुँच गया है। फिर उसको मद्धम-सी रोशनियाँ दिखाई देने लगी और तभी जहाज़ लैंड कर गया। एक झटका-सा लगा और जहाज़ रन-वे पर दौड़ने लगा। जहाज़ की गति धीमी हुई तो आफ़िया ने बाहर की तरफ़ देखा। बाहर

“क्या बात है सिस्टर, आज इतनी उदास है?“ जॉर्ज ने पूछा।

“जॉर्ज, आज घर याद आ रहा है। खास तौर पर अम्मी।”

“न तू टी.वी. देखती है। न कोई किताब वगैरह पढ़ती है। फिर अकेली बैठी उदास ही होगी न।”

“इसी कारण मैं टी.वी. नहीं देखती और न ही कुछ पढ़ती हूँ।”

“मतलब?“ जॉर्ज हैरान हुआ।

“क्योंकि यह बातें सिर्फ़ वक़्तकटी के लिए हैं। ये इन्सान का वक़्त पास ही नहीं करवातीं, बल्कि बर्बाद भी करती हैं। इसीलिए इन बातों की हमारे धर्म में मनाही है।”

“खाली समय में फिर और क्या करना चाहिए।”

“अल्लाह की इबादत करो, या फिर सामाजिक भलाई के लिए काम करो।”

“अगर तुम टी.वी. नहीं देखोगे, कोई अखबार नहीं पढ़ोगे तो तुम्हें कैसे पता चलेगा कि संसार में क्या हो रहा है?“

“तेरे जैसों से पता चल ही जाता है कि संसार में क्या चल रहा है।” इतना कहकर आफिया हँस पड़ी। उसकी यह बात सुनकर जॉर्ज हैरान न हुआ। क्योंकि उसने पहले ही देख लिया था कि जो आजकल की युवा पीढ़ी कर रही है, आफिया उन बातों से कोसों दूर है। वह टी.वी. नहीं देखती, संगीत नहीं सुनती, कोई उपन्यास वगैरह नहीं पढ़ती और किसी लड़के के साथ घूमने जाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। उसके लिए बस दो ही बातें ज़रूरी थीं - अपनी पढ़ाई या फिर धर्म। वह कुछ देर चुप रहकर बोला -

“सिस्टर, तुम्हें मैं एक सलाह दूँ। तू टी.वी. वगैरह पर समाचार वगैरह अवश्य देख लिया कर। इससे इन्सान को इतना पता लगता रहता है कि हमारे आसपास क्या घट रहा है।”

“क्यों? कुछ ख़ास हो रहा है आसपास?“ आफिया ने बात फिर मज़ाक में डाल दी।

“तुम्हें नहीं पता कि आज क्या हुआ है?“

“नहीं तो।”

“इराक ने कुवैत पर हमला कर दिया है।”

“क्या!“ आफिया ने हैरान होते हुए जॉर्ज की तरफ़ देखा। वह एकदम सकते में आ गई।

“हाँ, यह सच है। पिछले कई दिनों से झगड़ा चल रहा था, यह तो तुम जानती ही होगी। पर आज सद्दाम हुसैन सारी दुनिया के रोकने के बावजूद न रुका और उसने कुवैत पर चढ़ाई कर दी।”

“सद्दाम हुसैन तो बुच्चड़ है, यह सभी जानते हैं, पर कुवैत के शेख भी कम नहीं।”

“सिस्टर, कुवैत का इसमें क्या कसूर है?“ जॉर्ज उसकी बात सुनकर हैरान हुआ।

“ये जितने भी डिक्टेटर, सुल्तान और ख़लीफे हैं, ये सभी शैतान हैं। सभी मुसलमान धर्म को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इन सबका ही खात्मा होना ज़रूरी है।”

“फिर , तेरे ख़याल में अब क्या होना चाहिए ?“

“पहले सद्दाम का टंटा साफ़ किया जाए। उसके बाद इन डिक्टेटरों का सफ़ाया हो। ”

“कौन करेगा यह सब ?“

“लोग। ” इतना कहकर आफिया ने जॉर्ज की तरफ़ देखा।

“लोग यहाँ कुछ नहीं कर सकते। इस वक़्त किसी बड़ी शक्ति की ज़रूरत है जो सद्दाम को नकेल डाले। “

“मतलब ?“

“मतलब यह है कि अमेरिका ने इराक को कह दिया है कि वह अपनी फौजें कुवैत से बाहर निकाले। नहीं तो फिर नतीजे भुगतने के लिए तैयार रहे। ”

“अमेरिका यहाँ बीच में कहाँ से आ गया। यह अरब मुल्कों का आपसी मामला है। ” आफिया तुरन्त बात का रुख बदल गई।

“तुम्हें नहीं मालूम , इराक तो कुवैत से भी आगे सऊदी अरब पर भी हमला करने की तैयारी किए जा रहा है। यदि उसको न रोका गया तो ...। ”

“मुझे यह सब एक साज़िश लगती है। ” जॉर्ज की बात बीच में ही काटते हुए आफिया बोली।

“साज़िश ! मतलब ?“

“अमेरिका शैतान की पार्टी है। आज यह दुनिया में किसी को भी टिक कर बैठने नहीं देता। हर देश के घरेलू मामलों में दख़ल देता रहता है। यहाँ भी इसने कोई न कोई शरारत की होगी।”

“मैं यह बात नहीं मानता। मुझे तो अमेरिका ऐसा करता कहीं दिखाई ही नहीं देता।”

“दूर जाने की ज़रूरत ही नहीं। मेरे अपने मुल्क पाकिस्तान की बात कर लेते हैं। वहाँ वही होता है जो अमेरिका को अच्छा लगे। मुल्क पर राज करने वाला कोई भी हो, उसको अमेरिका की बात माननी पड़ती है। असल में, हमारे मुल्क के सभी सियासतदान अमेरिका के पिट्ठू हैं। अपनी राजगद्दी बचाने के लिए वे कोई भी समझौता कर सकते हैं। ऐसा ही शेष देशों में हो रहा है। अरब देशों में अमेरिका एक दूसरे को लड़ा कर अपना मतलब निकाले जाता है।”

“पर हम बात इराक की कर रहे हैं।” जॉर्ज ने उसको टोका।

“ठीक है, इराक की सही। पहले तो अमेरिका इराक को इरान के ख़िलाफ़ उठाए रहा। इतने साल की इरान-इराक लड़ाई में इसने इराक की पूरी हिमायत की। अब वह लड़ाई ख़त्म हो गई तो इसने अपना अगला एजेंडा शुरू कर लिया।”

“सिस्टर, तू फिर मसले से दूर जा रही है। हमला, इराक ने कुवैत पर किया है न कि अमेरिका ने।”

“जॉर्ज, मैं सब जानती हूँ। पिछले कई महीनों से यह हल्ला चल रहा था। इराक ने अमेरिका के पास शिकायत भी की थी कि उसका कुवैत के साथ किसी इलाके को लेकर झगड़ा है। पर अमेरिका ने यह कहकर पल्लू झाड़ लिया कि यह तुम्हारा आपसी मामला है, जैसे चाहो सुलझाओ। वह इसमें नहीं पड़ेगा। असल में, यह कहकर अमेरिका ने इराक को एक किस्म की हल्लाशेरी दी थी कि वह जो मर्ज़ी में आए, करे, अमेरिका बीच में नहीं आएगा। सद्दाम ने भी उसका इशारा समझ लिया और अवसर मिलते ही कुवैत पर चढ़ाई कर दी। इराक के ऐसा करते ही अमेरिका अपनी बात से पलट गया। असल में, अमेरिका चाहता था कि किसी न किसी प्रकार इराक कोई कदम उठाए और उसको बीच में पड़ने का अवसर मिले। अब देख ले, अमेरिका के मन की हो गई। इराक को रोकने के लिए उसने सऊदी अरब को आगे लगा लिया।”

“सिस्टर आफिया, पहले यह बता कि तू इराक के उठाये इस कदम के हक में है कि इसके विरोध में?“

“मैं इसके बिल्कुल खिलाफ़ हूँ। मैं तो यहाँ तक कहती हूँ कि इस बुच्चड़ सद्दाम का खात्मा हो और इराक के लोगों का उससे पीछा छूटे। अकेला वही नहीं है, जैसा कि मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि अरब मुल्कों के सारे डिक्टेटरों और शेखों का खात्मा ज़रूरी है। ऐसा होने पर ही इस्लाम तरक्की कर सकता है। पर यह मामला मुसलमान लोगों का अपना है। मैं चाहती हूँ कि वे खुद ही इसे सुलझाएँ। अमेरिका को हमारे लोगों के मसलों में दख़ल देने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

“जो भी है सिस्टर, पर एक बात तय है कि कुछ ही दिनों में अमेरिकी फौजें सऊदी अरब की ओर कूच कर देंगी।” जॉर्ज ने चुटकी मारते हुए हँसकर कहा।

“ऐसा कभी नहीं होगा। मुसलमान लोग ऐसा नहीं होने देंगे।”

“यह तो समय ही बताएगा, पर अब मैं चलता हूँ। मुहम्मद को बता देना कि जॉर्ज आया था।” इतना कहकर जॉर्ज बाहर निकल गया, पर आफिया चिंता में डूब गई। उसके मन-मस्तिष्क को इराक वाले मसले ने घेर लिया। दिल से हालांकि वह चाहती थी कि सद्दाम का सफाया हो जाए, पर वह यह भी नहीं चाहती थी कि अमेरिका इस बात में दख़ल दे। उसने जब से होश संभाला था, उसने घर में अमेरिका के खिलाफ़ होती बातें ही सुनी थीं। उसने अफ़गानिस्तान वाला सारा मसला अपने सामने घटित होते देखा था। वह सोचा करती थी कि अपना काम निकालने के लिए पहले तो अमेरिका ने पाकिस्तान को आगे लगा लिया। जब सोवियत यूनियन हार गया तो अमेरिका ने अपने ही उन दोस्तों का सफ़ाया कर दिया जिन्होंने अफ़गानिस्तान की लड़ाई में उसका साथ दिया था। ख़ास करके उसको जिया उल हक वाला हादसा बहुत चुभता था। उसकी अपनी सोच यह थी कि हवाई हादसा अमेरिकी सी.आई.ए. ने करवाया था जिसमें ज़िया उल हक की मौत हो गई थी। उसके परिवार का अभी भी ज़िया उल हक के परिवार से गहरा वास्ता था। ख़ासकर उसके पुत्र इज़ाज़ उल हक के साथ। ख़ैर, जॉर्ज और आफिया की इस मुलाकात के कुछ दिन पश्चात ही वे फिर मुहम्मद के अपार्टमेंट में बैठे थे। आज मुहम्मद भी वहीं था।

“देख ले जॉर्ज, अमेरिका ने सऊदी अरब की पवित्र धरती गंदी कर दी।” बात मुहम्मद ने शुरू की।

“मुहम्मद, दूसरा कोई राह भी तो नहीं। यदि अमेरिका वहाँ न जाता तो इराक आगे ही बढ़ता जाता।”

“सब चालें हैं। जो कुछ भी हो रहा है, इस सबका जिम्मेदारी अमेरिका ही है।” आफिया बातचीत में हिस्सा लेते हुए बोली।

“असल में अमेरिका को तो बड़ी मुश्किल से मौका हाथ लगा है, अरब देशों में जाकर अड्डा जमाने का। अमेरिका कब से बहाना तलाश रहा था, वह उसको इराक ने दे दिया। अब नहीं अमेरिका वहाँ से कभी निकलने वाला।” मुहम्मद बोला।

“नहीं, मेरे ख़याल में ऐसा नहीं होगा। अमेरिका ने इराक को कहा है कि वह कुवैत में से निकल जाए। मुझे लगता है कि यह सब अमरिका ने उसको डराने के लिए किया है। इस प्रकार इराक वापस चला जाएगा तो अमेरिका भी अपनी फौजें वापस बुला लेगा।”

“जॉर्ज, ऐसा कभी नहीं होने वाला। अमेरिका ने न कभी पहले मुसलमानों की परवाह की है और न अब करेगा।”

“सिस्टर, सऊदी अरब के किंग के कहने पर ही तो अमेरिका ने फौजें वहाँ एकत्र की हैं। वह भी मुसलमान ही है।”

“जॉर्ज, तू मुझे वही बातें बार बार दोहराने को पता नहीं क्यों उकसाता रहता है कि ये शेख, किंग और डिक्टेटर सब शैतान हैं। जब तक ये ज़िंदा हैं, तब तक मुसलमानों का भला नहीं हो सकता।”

“जॉर्ज, वैसे तो तू बहुत फड़ें मारता रहता है कि क्रिश्चियन अहिंसा में विश्वास रखते हैं। पर अब बता कि यह सब क्या हो रहा है। अब वहाँ जाकर मुसलमान लोगों का क़त्लेआम करने लगे हो तो अहिंसा का उसूल कहाँ है?“ मुहम्मद को गुस्सा आ गया लगता था।

“अपने तौर पर तो मैं अब भी खून-खराबे के खिलाफ़ हूँ। पर ये मुसलमान ही हैं जो अमेरिका को ऐसा करने के लिए विवश करते हैं।”

“तुम यूँ क्यों नहीं कहते कि ताकतवर का हर जगह ज़ोर चलता है।”

“यह तो है ही। हम दुनिया की सबसे बड़ी ताकत हैं। जो चाहे करें।” जॉर्ज ने हँसी में कहा। परंतु मुहम्मद इस बात का गुस्सा मान गया। दाँत पीसते हुए वह बोला, “जॉर्ज, अगर एक लफ़्ज भी आगे बोला तो मैं तुझे उठाकर बाहर फेंक दूँगा।”

“हम सुपर पावर हैं, हमें कौन छेड़ सकता है।” जॉर्ज फिर हँसी की रौ में बोला। इससे मुहम्मद को और अधिक गुस्सा आ गया। वह उठता हुआ बोला, “तू अभी मेरे घर से निकल जा।”

“यह घर तेरा ही नहीं, यह मेरी इस लिटिल सिस्टर का भी है। मैं नहीं जाने वाला यहाँ से।” जॉर्ज आफिया की ओर देखता हुआ बोला।

“ठीक है फिर, मैं ही यहाँ से चला जाता हूँ। कुएँ में गिरे तू और तेरा अमेरिका।” मुहम्मद उठकर चल पड़ा। आफिया शांत चित्त उसकी ओर देखती रही। जब वह अपार्टमेंट में से बाहर निकल गया तो आफिया बोली, “एक सच्चे मुसलमान को इतना गुस्सा शोभा नहीं देता।”

“चलो, कोई बात नहीं। वह मेरा जिगरी दोस्त है। जब गुस्सा शांत होगा, खुद ही लौट आएगा।”

इसके पश्चात आफ़िया और जॉर्ज आगे घटित होने वाली घटनाओं पर चर्चा करते रहे। देर रात जॉर्ज अपने घर चला गया। अगली मुलाकात के समय मुहम्मद और जॉर्ज में सुलह हो गई। उसके बाद काफी कुछ अकल्पित घटित हो गया। अमेरिकी फौजों ने हमला करके इराक को कुवैत में से बाहर धकेल दिया। इतना ही नहीं, अमेरिका ने इराकी फौजों की कमर तोड़कर रख दी। लड़ाई बंद होने के उपरांत इराक को वापस लौट रही इराकी फौजों का सफाया किया गया। जंगबंदी उसूलों की परवाह किए बग़ैर अमेरिकी फौजों ने इराकियों को मारने में कोई झिझक न दिखलाई। सब कुछ टी.वी. पर दिखाया जा रहा था। उस दिन आफिया बहुत ज़्यादा चुप थी। जॉर्ज के पास गर्दन झुकाये बैठी थी। मुहम्मद ने चुप्पी तोड़ी।

“जॉर्ज, देख लिया अपने अमेरिका का असली चेहरा?“

“हाँ, यह बहुत ही बुरा हुआ। मैं इस सबके खिलाफ़ हूँ।”

“इन्होंने कुवैत से इराक वापस लौट रही निहत्थी फ़ौजों पर गोलाबारी करके लाखों सिपाही मार दिए। अभी कहते हैं कि हमने यह सब कुछ विश्व-शांति के लिए किया है।”

“टी.वी. वालों ने तो उस रास्ते का नाम ही डैथ हाई-वे रख दिया है जिधर से इराकी फ़ौजें लौट रही थीं। अंधाधुंध बमबारी करके तकरीबन तीन लाख फ़ौजी मार गिराये गए हैं। यह सब कुछ मनुष्यता के नाम पर धब्बा है। मेरा अब यहाँ रहने को जी नहीं करता।” आफिया बुझे मन से बोली।

“फिर सिस्टर अब किधर जाओगी? क्या पाकिस्तान लौट जाने का इरादा है?“

“नहीं जॉर्ज, वापस तो मैं नहीं जाऊँगी, पर मैंने किसी दसरे शहर की ओर जाने का मन बना लिया हैं।”

“दूसरा शहर कौन-सा?“

“पिछले महीने मैं मैसाचूसस इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलॉजी में दाख़िले के लिए अप्लाई किया था। वहाँ मुझे दाख़िले के साथ साथ मुझे तो स्कॉलरशिप भी मिल गई है।”

“अच्छा तू एम.आई.टी. की बात कर रही है। पहले तुमने इस बात की भनक ही नहीं पड़ने दी। पर तुम्हें इस तरह यहाँ से नहीं जाना चाहिए।”

“नहीं जॉर्ज, मुझे अब यहाँ नहीं रहना।” आफिया वैसे ही गर्दन झुकाये बोली।

“सिस्टर, ऐसा न कर। तेरे बिना हमारा दिल नहीं लगेगा।” जॉर्ज ने उसको झिंझोड़ा। वास्तव में वह आफिया को सगी बहन से भी अधिक प्यार करता था।

“मैं फ़ैसला कर चुकी हूँ।”

“मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा।” जॉर्ज का मोह बोला, पर आफिया ने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया।

अगले दिन उनके बीच फिर बात हुई तो आफिया ने अपना यहाँ से जाने का इरादा दोहराया। जॉर्ज ने उसको यहीं रुक जाने के लिए कहा। काफी देर उनके बीच बहस चलती रही।

“जो चाहे कर, पर आफिया तू यहाँ से न जा।” जॉर्ज अपनी बात पर अड़ा रहा। आफिया कुछ पल उसके चेहरे की ओर देखती रही और फिर बोली, “जॉर्ज, तू मुझे इतने अपनेपन से क्यों रोक रहा है?“

“क्योंकि मैं तुम्हें रियल सिस्टर के तौर पर प्यार करता हूँ।”

“वह तो मैं समझती हूँ पर ...।” आगे आफिया ने बात बीच में ही छोड़ दी।

“पर क्या?“

“तू मुझे यहाँ रखने के लिए क्या कर सकता है?“

“कुछ भी, जिससे तुझे खुशी मिले।”

“पक्की बात है।” आफिया ने जॉर्ज के चेहरे पर निगाहें गड़ा दीं।

“हाँ-हाँ, मैं अपनी लिटिल सिस्टर के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।”

“तो फिर ऐसा कर।”

"बता।"

"तू क्रिश्चियन धर्म छोड़कर मुसलमान बन जा।"

उसकी बात सुनकर जॉर्ज के मुँह पर ताला लग गया और वह अंदर तक हिल उठा। उसको मुहम्मद ने कई बार बताया था कि यदि कोई मुसलमान किसी अन्य धर्म के इन्सान को मुस्लिम धर्म में ले आए तो उससे बड़ा पुण्य का कार्य कोई हो ही नहीं सकता। मुहम्मद के साथ वह बहुत अधिक खुला हुआ था इसी कारण मुहम्मद उसके साथ हर बात कर लेता था। पर धर्म बदलने के लिए उसने कभी नहीं कहा था। परंतु आज वही बात आफिया के मुँह से सुनकर वह हैरान रह गया। वह आफिया की बात सुनकर लगे सदमे में से बाहर आया तो उसने ध्यान से आफिया की ओर देखा। वह मन ही मन सोचने लगा, 'यह जो दिखाई देती है, वह यह नहीं है। यह असल में कुछ और ही है। इसको किसी की भावनाओं की परवाह नहीं है। इसको सिर्फ़ अपने धर्म से प्यार है। दूसरी कोई भी बात इसके लिए मायने नहीं रखती। शायद इसका अपना सगा भाई मुहम्मद भी इसको अच्छी तरह नहीं जानता।' अपने आप से बातें करता जॉर्ज दरवाज़ा खोलकर घर से बाहर निकल गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 4

(4)

आफिया, मैसाचूसस स्टेट के लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट बॉस्टन पर उतरी। वहाँ से वह टैक्सी लेकर मैसाचूसस इंस्टीच्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी अर्थात एम.आई.टी. की ओर चल पड़ी। टैक्सी बॉस्टन शहर की सड़कों पर दौड़े जा रही थी और आफिया अपने ही ध्यान में गहरी डूबी हुई थी। उसको पहली नज़र में ही बॉस्टन शहर भा गया। उसको बॉस्टन शहर बहुत सुंदर लगा। पता ही नही लगा कि टैक्सी कब यूनिवर्सिटी के नज़दीकी होटल में जा रुकी। टैक्सी ड्राइवर के बुलाने पर आफ़िया विचारों की गुंजल से बाहर निकली। किराया चुकता करके उसने सामान उठा लिया। होटल में कमरा लेकर सामान वगैरह वहाँ टिकाकर वह यूनिवर्सिटी की ओर चल पड़ी। अंदर जाते ही उसने देखा कि हर तरफ़ विद्यार्थी झुंडों में घूम रहे थे। उसने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। उसको

[redacted]

जिस लड़की की वह एक अरसे से प्रतीक्षा कर रहे थे, वह आज उन्हें मिल गई है। मीटिंग ख़त्म होने पर वह बाहर निकली और सुहेल के साथ कार में बैठ गई। सुहेल ने कार आगे बढ़ाई तो आफ़िया ने बात प्रारंभ की, “सुहेल वो एक कोने में बैठी गोरी अमेरिकन लड़की कौन थी?“

“उसका नाम मार्लेन अर्ल है।”

“मतलब वह अमेरिकन है?“

“हाँ है तो अमेरिकन ही, पर…।“

“पर क्या?“

“उसने धर्म परिवर्तन करके इस्लाम धर्म अपना लिया है। अब वह पक्की मुसलमान है।”

“किसके प्रभाव से उसने मुस्लिम धर्म अपनाया है?“

“इस बात को छोड़ो, पर तुम्हें बताऊँ कि उसका पति बसम कुंज बहुत बड़ा जिहादी है। उसने कई ज़िहादों में लड़ाई लड़ चुका है।”

“अच्छा!“

इसके बाद आफिया चुप हो गई। उसके मन में आ रहा था कि वह कितना किस्मत वाला होगा जिसने मार्लेन का धर्म परिवर्तन करवाया होगा। दूसरा उसको मार्लेन पर इस बात से भी गर्व महसूस हुआ कि उसका पति ज़िहादी है और फ़्रंट पर बंदूक उठाकर लड़ाई में हिस्सा लेता है।

“चुप क्यों हो गईं?“ सुहेल ने आफ़िया को ख़यालों में गुम देखकर उसकी चुप्पी तोड़ी।

“नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं। मैं तो सोच रही थी...।”

“क्या सोच रही थी तुम?“

“मैं तो यह सोच रही थी कि...।”

“अच्छा सुहेल, एक बात और बता।” आफिया ने पहली बात बीच में ही छोड़ते हुए बात बदली।

“हाँ हाँ पूछ।“

“वो जो तेरे संग बैठा था, वह कौन है? जो पूरी मीटिंग के दौरान बिल्कुल ही नहीं बोला।”

“उसका नाम...।” सुहेल ने बात बीच में ही छोड़ते हुए गौर से आफ़िया की ओर देखा। पल भर रुककर वह फिर बोला, “उसका नाम रम्जी यूसफ़ है। वह अल कीफ़ा का कभी न थकने वाला एक बड़ा वर्कर है।”

“अल कीफा?“ आफिया ने अल कीफा का नाम सुना तो था, पर उसके विषय में पूरी जानकारी नहीं थी।

“तुम्हें अल कीफा के बारे में बता ही देता हूँ।” सुहेल ने एक बार फिर ध्यान से आफ़िया की ओर देखा और मन में सोचा कि यह लड़की हमारे कॉज़ के लिए बहुत ही वफ़ादार साबित होगी। और इसके साथ हर बात साझी कर लेनी चाहिए।

“अल कीफा अपने ही बहन-भाइयों का संगठन है। यह बातों में नहीं, बल्कि एक्शन में विश्वास रखती है। अपनी सभी मस्जिदों और जिहादी सर्किलों में इसका बहुत ज़ोर है। पर ये खुलकर सामने नहीं आता। इसका नेता गुलबदन हेकमत्यार है।“

“जो अफ़गानिस्तान का वार लोर्ड है?“ आफिया बीच में ही बोल उठी।

“हाँ वही। शुरुआत उसने की थी। पर अब यह सब तरफ फैल चुकी है। मुस्लिम समाज इसको बहुत ज्यादा मान देता है और इसको आर्थिक मदद भी बहुत मिलती है। परंतु कई बार यही आर्थिक सामर्थ्य झगड़े का कारण भी बन जाता है। तुमने पिछले दिनों मुस्तफा शलेबी के क़त्ल के बारे में सुना ही होगा?“

“हाँ, पता है मुझे। वही जिसका कोई भेद ही नहीं खुल सका।”

“वह क़त्ल अल कीफा के पास पड़े मिलियन डॉलर का फंड लेकर ही हुआ था। अल कीफा के ही एक मैंबर को शक हो गया कि शलेबी पैसे की हेराफेरी करता है। पर मैं ऐसा नहीं मानता। शलेबी को मारकर किसी ने सही नहीं किया। उस जैसा धार्मिक और अक़ीदे वाला कोई हो ही नहीं सकता।”

“वह कैसे?“ आफिया को जिज्ञासा हुई।

“उसने अल कीफा के लिए या समझ लो कि समूचे जिहाद के लिए बहुत काम किया है। वही शेख उम्र अब्दुल रहमान को अमेरिका लाने में कामयाब हुआ था।”

“शेख उम्र वही है न जो कि मिस्र से है? जो बचपन से अंधा है?“

“हाँ वही। वह बहुत बड़ा धार्मिक फिलासफ़र है। अमेरिका को उसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। पर वह मिस्र के कट्टर जिहादियों में से एक है। सारे मुस्लिम समाज में उसका रुतबा बहुत ऊँचा है। कोई भी उसकी बात का विरोध नहीं कर सकता। काश! तू कभी उसको सुने तो...।”

“मुझे उसके फ़ल्सफ़े का पता है।” आफिया को याद आया कि पिछले दिनों ही उसको किसी ने शेख उम्र की वीडियो दिखाई थी। वीडियो में सुने शेख के शब्द उसके मन में घूमने लगे, “हर मुसलमान का एक ही धर्म है कि ग़ैर मुसलमानों को ख़त्म कर दो। दुनिया पर कोई भी ऐसा न रहे जो मुसलमान न हो। लोगों को समझा-बुझाकर मुसलमान बनाने से बेहतर यह है कि उनका खातमा करो। जितनी जल्दी ग़ैर मुसलमानों का सफाया होगा, उतनी जल्दी ही हम दुनिया पर इस्लाम का झंडा फहरा सकेंगे। इसके अलावा हर मुसलमान का यह भी धार्मिक फर्ज़ है कि वो कई शादियाँ करके अधिक से अधिक बच्चे पैदा करे ताकि हमारी गिनती काफ़िरों से अधिक हो जाए।”

“तू मेरी बात सुन रही है न?“

“हाँ-हाँ, मेरा ध्यान तेरी बात की ओर ही है।” आफिया ने ख़यालों में से निकलते हुए सुहेल की बात का हुंकारा भरा।

“हमे शेख उम्र जैसे धार्मिक रहनुमा की ज़रूरत है।”

“पर...।” आफिया ने उसकी बात काटी।

“हाँ, बता?“

“पर, यह रम्जी यूसफ फिर आज एम.एस.ए. की मीटिंग में क्या कर रहा था?“

“असल में सभी बातों का तुम्हें आहिस्ता आहिस्ता पता चल जाएगा। कई मैंबर दोनों तरफ काम करते हैं। जैसे कि मार्लेन का पति बस्म कुंज है। वह दोनों तरफ़ का मैंबर है।“

“आजकल वह कहाँ है? क्योंकि वह आज मार्लेन के साथ तो कहीं दिखा नहीं?“ बात फिर दूसरी तरफ़ चली गई।

“उसकी भी लम्बी कहानी है। वह लिबनान का जन्मा पला है। वह वहीं से किसी धार्मिक संगठन से वज़ीफा लेकर यहाँ पढ़ने आया था। बॉस्टन यूनिवर्सिटी से उसने ग्रेज्युएशन की। यहीं वह ज़िहादी लीडरों के सम्पर्क में आया। फिर वह अल कीफा का सरगरम मैंबर बन गया। उन्हीं दिनों उसने मार्लेन से शादी की और उनके एक बच्ची हो गई। फिर वे दोनों पाकिस्तान चले गए। वहीं से बस्म तो जिहाद में लड़ने की खातिर बार्डर पार करके अफ़गानिस्तान चला गया और मार्लेन अपनी बच्ची के साथ पेशावर के उस इलाके में रही जहाँ कि सभी जिहादियों के परिवार रहते हैं। वहीं बस्म लड़ाई के दौरान सख़्त ज़ख्मी हो गया और उसको सर्जरी के लिए यहाँ अमेरिका वापस आना पड़ा। मार्लेन और बस्म यहाँ आकर कुछ देर रहे। जब बस्म पूरी तरह ठीक हो गया तो वह फिर जिहाद की लड़ाई में हिस्सा लेने लिबनान पहुँच गया। वहाँ से वह आगे बास्निया चला गया। आजकल वह बास्निया में ही लड़ रहा है। “

तभी आफिया का हॉस्टल आ गया था। बातों का सिलसिला बंद हो गया। सुहेल आफिया को हॉस्टल पर उतार कर वापस चला गया। आफिया अपने कमरे की ओर जाती हुई मार्लेन और बस्म कुंज के बारे में सोचे जा रही थी। उसको वह एक सच्चा मुसलमान जोड़ा लगा जो कि पूर्णरूप में जिहाद को समर्पित था। उसको मार्लेन अच्छी लगने लगी। देर रात तक भी वह उनके बारे में सोचती रही। अगले कुछ दिनों में ही उसने मार्लेन के साथ अच्छी दोस्ती गांठ ली।

आफिया की पढ़ाई के विषय में किसी कोई शंका नहीं थी। सब जानते थे कि वह इतनी होशियार है कि वह कोई भी विषय चुन ले, पर हमेशा पहले नंबर पर आएगी। इन्हीं दिनों में उसने एक पर्चा लिखा जिसका नाम था - ‘इस्लामीजेशन इन पाकिस्तान एंड इट्स इफेक्ट्स ऑन वुमन।’ इस पर्चे के कारण उसको एम.आई.टी. ने कैरल विल्सन अवार्ड से सम्मानित किया जिसमें पाँच हज़ार डॉलर का नकद ईनाम शामिल था। इस ईनाम से खुश हुई आफिया 1992 का ग्रीष्म अवकाश बिताने के लिए पाकिस्तान चली गई। उन्हीं दिनों पाकिस्तान में हदूद लॉ के बारे में शोर मचा हुआ था। ह्यूमन राइट्स जैसे संगठनों का कहना था कि यह लॉ न सिर्फ़ औरत की आज़ादी को कुचल रहा है अपितु इसने तो औरत जाति को भी कुचल कर रख दिया है। इस कानून को घड़ने में मुफ़्ती मुहम्मद तकी उस्मानी ने बड़ी मेहनत की थी। मुफ्ती उस्मानी आफ़िया के परिवार का धार्मिक रहनुमा था। इस कारण आफिया को उन्हीं दिनों चल रहे शोर-शराबे में दिलचस्पी हो गई। उसने मुफ्ती साहिब का पक्ष लेने का निर्णय ले लिया। वह यह पक्ष इस कारण नहीं ले रही थी कि इसको घड़ने वाला मुफ्ती उस्मानी था बल्कि इस कारण कि उसकी अपनी सोच थी कि इस्लाम ने जो भी पाबंदियाँ स्त्रियों पर लगाई हैं, वे मुसलमान स्त्री के लिए सही हैं। इनको मानते हुए ही वह अपने धर्म का सही पालन कर सकेगी। इस अरसे के दौरान वह ज़िस किसी भी बड़े लीडर को मिली, हर कोई उसके विचारों से प्रभावित हुआ। क्योंकि एक औरत होकर वह औरतों की ओर से चलाए जा रहे संघर्ष के उलट थी। उसके शुभचिंतकों में

पहले पाकिस्तानी डिक्टेटर जिया उल हक का पुत्र इयाज़ उल हक भी था। उस वक़्त पाकिस्तान की राजनीति में भी फेरबदल हो चुका था। बेनज़ीर भुट्टो की जगह नवाज शरीफ की पार्टी सत्ता में आ चुकी थी और वह मुल्क का प्रधान मंत्री था। सरकार के बदल जाने से और चाहे सब कुछ बदल गया हो, पर एक बात नहीं बदली थी। वह थी पाकिस्तान की खुफ़िया एजेंसी आई.एस.आई. का एजेंडा। इसके तत्कालीन प्रमुख जावेद नासिर का विचार था कि पाकिस्तान को दुनिया के किसी भी हिस्से में चल रहे जिहाद की अधिक से अधिक मदद करनी चाहिए। इसी एजेंडे के अधीन वह बास्निया में चल रहे गृह युद्ध में जिहादियों की मदद कर रहा था। इसके अलावा यह एजेंसी फिलिपीन्ज़, रशिया के कई हिस्सों में चल रहे जिहाद और चीने के सिनज्यांग प्रांत में चल रहे संघर्ष में भी ऊपरोक्त नीति अपना रही थी। हर जिहाद में अरब अफ़गानों के जत्थे लड़ रहे थे। ये वही लोग थे जो अफ़गानिस्तान की जंग के समय अमेरिका की ओर से रशिया के विरुद्ध लड़े थे। जब वहाँ लड़ाई ख़त्म हो गई तो इन्हीं जत्थों के लीडर अपने लड़ाकों को दुनिया के अन्य क्षेत्रों की ओर ले गए। इन्हीं लीडरों में से सबसे अधिक उभरकर बाहर आ रहा लीडर उसामा बिन लादिन था। इसके अतिरिक्त बलोचिस्तान का एक बड़ा और बहुत ही अमीर परिवार जिहाद में मुख्य भूमिका निभा रहा था। उसको अल बलोची के नाम से जाना जाता था। यह सारा परिवार काफी पहले पाकिस्तान से कुवैत चला गया था। परंतु 1990 के इर्द गिर्द यह पुनः पाकिस्तान में लौट आया और आजकल जिहाद में बढ़-चढ़कर भाग ले रहा था। इस परिवार के प्रमुख का नाम खालिद शेख मुहम्मद था जिसका सभी उसके निक नाम अर्थात के.एस.एम. के रूप में जानते थे। रम्जी यूसफ़ इसी के.एस.एम. का भतीजा था।

ख़ैर, अपनी छुट्टियाँ बिताकर आफिया वापस अमेरिका आ गई। जब वह लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर उतर कर कस्टम वगैरह की क्लीयरेंस के लिए लाइन में लगी हुई थी तो उसने देखा कि साथ वाली लाइन में खड़ा कोई व्यक्ति उसकी ओर बड़े गौर से देख रहा था। उसने दिमाग पर ज़ोर डालकर याद करने की कोशिश की कि इस आदमी को उसने पहले कहाँ देखा था, पर उसको कुछ याद न आया। वह गर्दन झुकाकर सोचने लगी। फिर उसके दिमाग में अचानक कुछ कौंधा और उसने तुरंत ही साथ वाली लाइन की ओर देखा। तब तक वह व्यक्ति आगे निकल गया था। आफिया मन ही मन बोली, 'ओह, यह तो रम्जी यूसफ़ है जिसको उस दिन एम.एस.ए. की मीटिंग में देखा था।'

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 5

(5)

अल कीफा की मीटिंग में हिस्सा लेने मार्लेन और आफ़िया एकसाथ पहुँचीं। यह मीटिंग किसी के घर पर हो रही थी। मीटिंग शुरू होने से पहले आफ़िया और मार्लेन एक तरफ़ खड़ी होकर बातें कर रही थीं कि तभी आफिया के कानों में आवाज़ पड़ी।

“सलाम वालेकम , हमशीरा। “

आफिया ने पीछे मुड़कर देखा। सामने रम्जी यूसफ खड़ा था। वह बड़े उत्साह के साथ बोली , “अरे ! वालेकम सलाम ! मेरा ख़याल है , हम उस दिन इकट्ठे एक ही फ्लाइट पर आए थे। “

“मार्लेन तेरा क्या हाल है ?“ रम्जी यूसफ ने आफ़िया की फ्लाइट में एक साथ आने वाली बात पर कोई ध्यान न दिया।

“जी, ठीक है। तुम सुनाओ। “

“और, बसम का फोन वगैरह आया था ?“

“हाँ , फोन तो उसका आता ही रहता है। कह रहा था कि बास्निया की घरेलू जंग ख़तरनाम रूप अख़्तियार करती जा रही है। “

“यह घरेलू जंग नहीं , यह मुसलमानों को ख़त्म करने की योजनाबद्ध स्कीम है। इस स्कीम में सारी दुनिया , मुसलमानों के ख़िलाफ़ हो चुकी है। ख़ैर …। “ वह बात बीच में ही छोड़ता हुआ किसी अन्य के पास जाकर बातें करने लगा। फिर मीटिंग शुरू हो गई। आज का मुख्य एजेंडा था -बास्निया में चल रहा ज़िहाद। अन्य चर्चाओं के अलावा इस बात पर सहमति प्रकट की गई कि वहाँ के ज़िहाद में यतीम हो रहे बच्चों और विधवाओं के लिए फंड इकट्ठा करने की आवश्यकता है। इसके लिए एक नया संगठन ‘रिलीफ इंटरनेशनल ’ शुरू करने का निर्णय लिया गया। इसके सारे कामकाज और लोगों से इसके लिए फंड एकत्र करने की जिम्मेदारी आफ़िया ने ले ली। मीटिंग खत्म होने के करीब थी जब एक व्यक्ति के कंधे पर हाथ रखे , उसके पीछे पीछे चलता शेख उमर रहमान कमरे में दाख़िल हुआ। सभी ने खड़े होकर , झुककर सलाम कहा। शेख ने हाथ के इशारे से सभी को

बैठने के लिए कहा और अपनी सोटी इधर-उधर घुमाते हुए सोफा ढूँढ़कर आराम से बैठ गया।

“सभी जिहादियों का आज की मीटिंग में स्वागत है। मैं अधिक बातें नहीं करूँगा। बस, मुझे इतना ही याद करवाना है कि तुम्हें अपना फर्ज़ हर वक़्त याद रहना चाहिए।“

वह बोलते बोलते चुप हो गया। कमरे में मुकम्मल चुप्पी छाई हुई थी। कोई ऊँचा साँस भी नहीं ले रहा थ। उसने पलभर रुककर आगे बोलना शुरू किया, “यह दुनिया क़ाफ़िरों से भरी पड़ी है। जब तक इन सबका सफाया नहीं हो जाता, तब तक धरती पर शांति नहीं हो सकती। यह मुकम्मल शांति तभी होगी, जब चारों ओर इस्लामी झंडा फहरेगा। मैं बेशक देख पाने में असमर्थ हूँ, पर क़ाफ़िरों की प्रगति हर वक़्त मेरे मन की आँखों के सामने रहती है। ये कुछ ही दूरी पर इन क़ाफ़िरों की आसमान छूती इमारतें मेरे दिल में कांटे की तरह चुभती हैं। काश कि कोई ...।“ वह चुप होकर आगे की बात वहीं दबा गया। सभी समझ गए कि उसका इशारा वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के टॉवरों की ओर था। कुछ देर बेजान पुतलियाँ इधर-उधर घुमाने के बाद वह फिर बोला, “इन क़ाफ़िरों के दोहरे मापदंड देखो। इन्होंने जापान में बम फेंककर करीब सवा दो लाख लोग एक हफ़्ते में मार दिए। हमारे फिलिस्तीनी भाइयों की लड़ाई को ये टैरेरिज़्म बताते हैं। ज़रा सोचो कि असली टैरेरिस्ट कौन हुआ? अपने हकों के लिए लड़ने वाला या निर्दोष लोगों को एटम बमों से मारने वाला। ख़ैर, पाक फतवा जारी हो चुका है। उस पर अमल करना हर सच्चे मुसलमान का फ़र्ज़ है।“ इतना कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ। जो व्यक्ति उसको लेकर आया था, उसने आगे बढ़कर शेख की बांह पकड़ ली और अंदर की ओर ले चला। इसके बाद मीटिंग बर्ख़ास्त हो गई। सभी उठकर चलने लगे। आफ़िया और मार्लेन भी बाहर आ गईं। आफ़िया देख रही थी कि हर कोई मीटिंग में से उठ आया है, परंत रम्ज़ी यूसफ, मुहम्मद सालेमाह और एक व्यक्ति पीछे ही रुक गए थे। वहाँ से वे दोनों चल पड़ीं, पर रास्ते में उनके बीच अधिक बातचीत न हुई। आफ़िया चुप थी, पर उसका मन चुप नहीं था। वह सोच रही थी कि शेख उमर अब्दुल रहमान ने जो फतवे के बारे में कहा था, वह अवश्य ही कोई अहम बात होगी। उसने मन में यह बात भी आ रही थी कि रम्ज़ी, दूसरे साथियों सहित वहीं क्यों रुक गया। उसको इस बात का अफ़सोस हो रहा था कि यदि कोई ज़रूरी बात है तो उसको भी इस बारे में बताया जाना चाहिए था। उसको लगा कि शायद उस पर अभी पूरा भरोसा नहीं किया जा रहा। उसका मन कह रहा था कि वह इस प्रकार पीछे हटने वालों में से नहीं है। वह तो अगली कतार की जिहादी है। इस प्रकार सोचते हुए पता ही नहीं चला कि कब उसका हॉस्टल आ गया। मार्लेन उसको उतार कर आगे बढ़ गई।

इसके सप्ताहभर बाद आफिया दोपहर के समय समाचार देख रही थी, जब वह उछल कर खड़ी हो गई। ख़बर ही ऐसी थी जिसने उसका रोम रोम उत्साह से भर दिया था। सी.एन.एन. समाचार दे रहा था, “वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर की पॉर्किंग में बम धमाका। जिसमें करीब आधा दर्जन लोग मारे गए और सैकड़ों ज़ख़्मी हो गए।“

यह ख़बर सुनते ही आफिया के कान फटाक फटाक से खुल गए। उसको याद आ गया कि उस दिन मीटिंग में शेख उमर ने जो फतवे वाली बात कही थी, वह इसी काम को लेकर थी। फिर साथ ही उसको यह ख़याल भी आया कि रम्ज़ी यूसफ और उसके दो साथी मीटिंग के बाद शायद इसी काम के लिए रुके थे जो कि आज वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में घटित हुई है। उसने कई मित्रों को फोन किए, पर कहीं से कोई पक्की जानकारी न मिली। उसने सुहेल को फोन किया तो उसने कहा कि वह उसको अगले दिन मिलेगा।

अगले रोज़ शाम के समय आफिया और सुहेल कार में बैठकर किसी नए पॉर्क में चले गए। वहाँ पहुँचकर सुहेल ने बात शुरू की, “शेख साहिब ने फतवा जारी किया था कि कम से कम ढाई लाख अमेरिकी लोगों को एकसाथ एक ही एक्शन में मारा जाए। इसके लिए रम्ज़ी यूसफ की जिम्मेदारी लगाई गई थी। रम्ज़ी ने अपने साथ ख़ास दोस्त मुहम्मद सालेमाह को लिया। वैसे वह इसकी तैयारी पहले से ही कर रहे थे। उन्होंने किसी अन्य दोस्त के घर, गैराज में पंद्रह सौ पौंड का बम तैयार कर रखा था। फिर 26 फरवरी के दिन मुहम्मद सालेमाह ने ट्रक किराये पर लिया और बम उसमें टिका दिया। लंच के समय वह ट्रक में बैठ वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की ओर चल पड़े। ट्रक के पीछे ही एक अन्य मित्र ने अपनी कार लगा ली। बम कहाँ रखना है, इसकी निशानदेही रम्ज़ी पहले ही कर चुका था। उन्होंने ट्रक नॉर्थ टॉवर की पॉर्किंग के बी ब्लॉक में जा खड़ा किया। ट्रक खड़ा करने के बाद रम्ज़ी ने बम के पलीते को आग लगाई और दौड़कर साथ आई दोस्त की कार में जा बैठा। वहाँ से कार स्टार्ट करके वे भाग निकले। इसके कुछ मिनट के बाद वहाँ बहुत जबरदस्त धमाका हुआ जिसने सारा लोअर मैनहंटन हिलाकर रख दिया। पर अफ़सोस कि जो सोचा गया था, वह न हो सका।“

“वह क्या?“ चुपचाप सुहेल की बात बात सुन रही आफ़िया ने हैरान होकर पूछा।

“रम्ज़ी यूसफ का ख़याल था कि यह बम इतना शक्तिशाली है कि इससे नॉर्थ टॉवर ध्वस्त हो जाएगा। इतना ही नहीं, बल्कि यह ढहते हुए साउथ टॉवर को भी अपने साथ गिरा देगा। उसका विचार था कि उसका यह काम दोनों टॉवरों को

धरती पर बिछा देगा और यहाँ काम करने वाले सारे लोग मारे जाएँगे। पर अफ़सोस, उसकी मंशा पूरी न हुई। सिर्फ़ पाँच-छह लोग ही मरे हैं। “

“अल्लाह उसकी इन टॉवरों को गिराने की मंशा ज़रूर पूरी करेगा। पर सुहेल, रम्ज़ी हमारी कौम का हीरो है। वह असली जिहादी है। हमें ऐसे ही जिहादियों की ज़रूरत है। “

“अल्लाह, सब इच्छाएँ पूरी करेगा। बस, अपना काम है कि अपने राह पर चलते रहें। “ इतना कहते हुए सुहेल गाड़ी बैक करने लगा।

“हम लोगों को अधिक से अधिक लड़ाकू भर्ती करने चाहिएँ। “ आफिया ने अपनी बात कही।

“आगे आगे देखना कि क्या होता है। वैसे तू भी जिहाद के लिए बहुत कुछ कर रही है। “

“सुहेल अगर सच पूछो तो मेरा मन भी करता है कि मैं भी फ्रंट पर जाकर लड़ूँ। “

“नहीं, लड़ाई में हरेक का अपना अपना काम होता है। तू जो कर रही है, यही सही है। बस आगे बढ़ती चल। “

वे बातें करते हुए वापस लौट आए।

अगले दिन मुहम्मद सालेमाह पकड़ा गया। उसके गिरफ्तार होने की देर थी कि जर्सी सिटी के अल कीफा सदस्यों में अफरा-तफरी मच गई। कितने ही और सदस्य पकड़े गए और कितने ही अंडरग्राउंड हो गए। यह मामला यहीं नहीं रुका। पुलिस बॉस्टन शहर में भी पहुँच गई और वहाँ के कई अल कीफा सदस्य पुलिस की गिरफ्त में आ गए। उधर रम्जी यूसफ ने धमाके वाले दिन ही शाम को पाकिस्तान की फ्लाइट ले ली। जब तक उसका नाम बाहर आया, तब तक वह बिलोचिस्तान में अपने घर पहुँच चुका था। अगले दिन वह पेशावर के उन

सुरक्षित ठिकानों की ओर निकल गया जहाँ कि अल कायदा और अन्य संगठनों के जिहादी बड़े आराम से बिना किसी भय से रह रह थे।

धड़ाधड़ हुई अल कीफा की गिरफ्तारियों ने तहलका तो मचा दिया , पर सदस्यों के हौसले और अधिक बुलंद हो गए। वे सोचते थे कि उन्होंने इतनी बड़ी घटना को अंजाम दिया है और आगे चलकर वे इससे भी अधिक काम कर सकते हैं। आफिया का भी हौसला बुलंद हो गया। उसने अपने इंटरनेट वाले इश्तहार में लिखा कि इन पकड़े गए सदस्यों के कोर्ट केसों के लिए धन इकट्ठा किया जाए। पुलिस के दबाव के कारण अल कीफ़ा का दफ़्तर बंद कर दिया गया। इसके अधिकतर सदस्य बॉस्टन शहर में जा पहुँचे। उन्होंने अल कीफा का नाम छोड़कर एक नया संगठन बना लिया जिसका नाम था - केयर इंटरनेशनल। न्यूज़ लैटर अल्हसम और अल्हसम वैब साइट केयर इंटरनेशनल से जोड़ दिए गए। इनके माध्यम से मुस्लिम समाज से बड़े ज़ोशोख़रोश के साथ फंड की अपील की गई। दिनों में ही लाखों डॉलर एकत्र हो गया। इससे सभी सदस्यों के हौसले बुलंदियाँ छूने लगे। इन्हीं दिनों ही एक दिन आफिया ने अख़बार में रम्जी यूसफ के विषय में पूरा लेख पढ़ा। लिखा था - “नॉर्थ टॉवर बम धमाके के प्रमुख दोषी को एफ.बी.आई. की मोस्ट वांटिड लिस्ट में डालने के बाद उसका पीछा किया गया। शीघ्र ही पता लग गया कि वह अपने पुश्तैनी घर क्वेटा में रह रहा है। पाकिस्तानी पुलिस की मदद से उसको पकड़ने की योजना बनाई गई। पर जब तक पुलिस की टीम वहाँ पहुँचती , तब तक वह वहाँ से फरार हो गया था। लगता है कि उसके पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. के अंदर गहरे सम्बंध हैं। उसके इस घर से मिले काग़ज़ों से यह भी जानकारी मिली कि उसका असली नाम अब्दुल बसत करीम है। बम धमाका करने से बाद वह इसी नाम के पासपोर्ट से पाकिस्तान पहुँचा था। इसके अतिरिक्त उसके घर से मिले चित्रों में कई बड़े लोगों के साथ खींचे गए फोटो भी मिले। जिनमें जनरल जिया उल हक , उसका पुत्र इजाज उल हक और प्रधान मंत्री नवाज शरीफ जैसी शख़्सियतें भी शामिल हैं। इससे पता चलता है कि वह पाकिस्तान राजनीतिज्ञों के कितना करीब है। उम्मीद है कि वह पेशावर के एरिये में पहुँच चुका है। इसके अलावा , और भी बहुत सारी गुप्त जानकारी मिली है। “

आफिया ने अख़बार एक तरफ रख दिया और सुहेल की कही बात को लेकर सोचने लगी। सुहेल ने ही उसको बताया था कि पेशावर सारे जिहादियों का एक बहुत बड़ा अड्डा है। वहाँ कोई बाहरी व्यक्ति तो क्या , खुद पाकिस्तानी सरकार भी नहीं जा सकती। आफिया को लगा कि अच्छा ही हुआ कि रम्जी यूसफ पुलिस के हाथ नहीं आया। यदि वह पकड़ा जाता तो पता नहीं फिर और कितनी गिरफ्तारियाँ होती। तभी आफिया का फोन बजा। उसने फोन ऑन किया तो दूसरी तरफ उसका भाई था जो कि हूस्टन से बोल रहा था।

“आफिया, क्या हो रहा है?“

“भाई ज़ान, कुछ नहीं, बस खाली बैठी हूँ।“

“मैंने कराची फोन किया था, अब्बा की तबियत कुछ ढीली है।“

“क्यों? क्या हुआ अब्बू को?“ आफिया एकदम घबरा गई।

“नहीं, इतना फिक्र वाली बात तो नहीं है। वैसे तुझे पता ही है कि वह हाई ब्लॅड प्रैशर के मरीज़ हैं। अब, दिल की बीमारी भी शुरू हो गई है।“

“उन्हें कहो कि यहाँ आकर इलाज करवाएँ। यहाँ हर बीमारी का बेहतर इलाज है।“

“मैं तो बहुत बार कहकर देख चुका हूँ, पर वो मानते ही नहीं। तू बात करके देखना।“

“मैं करती हूँ फोन आज ही। और अम्मी तो ठीक है न?“

“अम्मी बिल्कुल ठीक है। फौज़िया भी कह रही है कि अमेरिका पढ़ने आना है।“

“अच्छा है, यहाँ आ जाए। सभी इकट्ठा हो जाएँगे।“

“इकट्ठा कहाँ होंगे? मैंने तुझे कितना कहा, हूस्टन न छोड़, पर तूने मेरी बात नहीं मानी। ऐसे ही वो भी अपनी मर्ज़ी ही करेगी।“

“भाई ज़ान, कोई बात नहीं। मैं यहीं ठीक हूँ। वो हो सकता है, तुम्हारे पास रह जाए।“

“आफिया और तो सब ठीक है, पर मुझे तेरा एक बात से बड़ा फिक्र रहता है।“

“भाई ज़ान, वह क्या?“

“तुम्हारा बॉस्टन शहर आज़कल ख़बरों में खूब रहता है। सुनते हैं कि वहाँ बड़े ज़िहादी घूम रहे हैं। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की पॉर्किंग में धमाके वाले केस के साथ ही बॉस्टन जुड़ा हुआ है। तू इस तरफ से बचकर रहना।“

“नहीं भाई जान, ऐसी कोई बात नहीं है। मेरा इन लोगों से कोई लेना-देना नहीं है। मैं तो सिर्फ़ चैरिटी तक ही सीमित हूँ।“ आफिया ने झूठ बोला तो डर भी गई कि उसका भाई उसकी घबराहट को न जान जाए। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मुहम्मद अली आगे बोला, “आफिया, यह काम चैरिटी से ही शुरू होता है। जितने भी जिहादी देख रहे हैं, ये पहले चैरिटी में ही काम करते थे। वहीं इनका वास्ता असली जिहादियों से पड़ता है। तू मेरी बहन खुद को बचा कर रखना। मैं तो कहता हूँ कि तूने क्या लेना है चैरिटी वगैरह से। तू चुपचाप अपनी पढ़ाई कर।“

“हाँ, भाई ज़ान। मैं आगे की क्लासें लेने के बारे में सोच रही हूँ। तुम्हारे साथ भी सलाह करनी है कि कौन-सी क्लासें लूँ।“ आफिया बात को पढ़ाई की ओर ले गई और चैरिटी वाली बात टाल गई। वे बातें कर ही रहे थे कि बीच में आफिया की दूसरी कॉल आ गई। उसने फोन के स्क्रीन पर देखते हुए बोली, “भाई ज़ान, मैं तुम्हें फिर फोन करती हूँ। मेरा कोई फोन आ रहा है।“ उसने दूसरी तरफ फोन ऑन करते हुए ‘हैलो’ कहा। उधर, मार्लेन थी। वह घबराई हुई आवाज़ में बोली, “आफिया, बहुत बुरा हुआ।“

“क्या हो गया?“

“शेख उमर अब्दुल रहमान गिरफ्तार हो गए।“

“या अल्लाह!“ आफिया ने फोन काट दिया और सिर पकड़कर बैठ गई। अगले दिन सभी अख़बारों की मुख्य ख़बर थी कि नॉर्थ टॉवर की पॉर्किंग वाले बम धमाके का मुख्य सूत्रधार, अंधा शेख उमर अब्दुल रहमान पकड़ा गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद **- 6**

(6)

1993 में आफिया ने पहला सेमेस्टर खत्म होने के बाद, छुट्टियों में परिवार को मिलने जाने का मन बना लिया। ग्रीष्म अवकाश प्रारंभ हुआ तो उसने टिकट खरीदी और अगले ही दिन पाकिस्तान पहुँच गई। उसके कराची पहुँचने के दो दिन बाद उसका मामा एस.एच. फारूकी अपनी पत्नी सहित उसको मिलने आ पहुँचा। दोपहर के भोजन के बाद पूरा परिवार ड्राइंग रूम में बैठा बातों में मशगूल हुआ पड़ा था।

“अब्बू, आप देखने में तो बीमार बिल्कुल नहीं लगते, पर फोन पर मुश्किल से बोलते हो?“ आफिया ने हँसते हुए कहा।

“भाई साहब, बिल्कुल तंदरुस्त हैं। ये तो तुझे यहाँ बुलाने के लिए बहाना घड़ा होगा।“ समीप बैठा फारूकी भी हँसा।

“बीमार को आफिया बेटा क्या है। इस उम्र में तो वैसे ही कोई न कोई बीमारी चिपटी रहती है।“ आफिया के पिता ने ढीला-सा उत्तर दिया। इसके बाद अन्य घरेलू बातें चल पड़ीं।

“अब तो फौज़िया बेटी भी अमेरिका की तैयारी कर रही लगती है।“ फारूकी की बेगम ने बात बदली।

“हाँ जी, दाख़िला तो हो गया है। बस, अब जाने ही तैयारी ही करनी है।“

“क्या पढ़ रही है फौज़िया बेटी?“

“जी, डॉक्टरी।“

“बहुत अच्छा है। आजकल अपने लड़के-लड़कियाँ धड़ाधड़ अमेरिका जाकर डॉक्टर, नर्स बन रहे हैं। बड़े फ़ख्र वाली बात है यह तो।“ फारूकी ने गर्व से फौज़िया की ओर देखते हुए कहा।

“मगर कुछेक लोग पाकिस्तान के नाम को वहाँ जाकर धब्बा भी लगा रहे हैं।“ सुलेह सद्दीकी ने चोट की।

“तुम किस की बात करते हो?“ इस्मत ने चुप्पी तोड़ी।

“बिलोचिस्तान के उस अल बलोची परिवार के लड़के रम्ज़ी यूसफ की। जिसने वहाँ किसी बड़ी इमारत के पॉर्किंग लाट में बम धमाका करके कितने ही लोगो को मारा। लोग समझते नहीं कि जो देश हमको इतनी सहूलियतें दे रहा है, हमारी अगली पीढ़ी के लिए कितने अच्छे पढ़ाई के अवसर मुहैया करवा रहा है, उसी को तुम ध्वस्त करने में लगे हो।“ सुलेह सद्दीकी थोड़ी नफ़रत में बोला।

“क्या पता है जी, सच क्या है। हम अमेरिका के कहने पर तो किसी को दोषी नहीं मान सकते।“ इस्मत ने गोलमोल-सा जवाब दिया।

“पर वहाँ हमारे ऐसे लोग भी तो हैं जो समाज सेवा का काम कर रहे हैं। अपनी आफिया भी तो समाज सेवा के कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है।“ फारूकी की बेगम बोली।

“यह तो अच्छी बात है। समाज सेविका माँ की बेटी, समाज सेवा न करेगी तो और क्या करेगी।“ फारूकी ने आफिया को और उसकी माँ को सराहा।

“आफिया, वहाँ हो रही ऐसी तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों के बारे में वहाँ के लोगों के क्या विचार हैं?“

“अंकल, मैं और मेरी सहेलियाँ, हम तो ज्यादा चैरिटी का काम करते हैं। हमें इन बातों का ज्यादा पता नहीं लगता। पर एक बात ज़रूर है कि सिर्फ़ अपने लोगों को ही दोष न दो। क्योंकि उन्हें ऐसा करने के लिए मज़बूर भी तो पश्चिम ही करता है। अब बास्निया में ही ले लो। वहाँ मुसलमानों पर इतने अत्याचार हो रहे हैं कि अल्लाह ही जानता है। मेरे पास वीडियो कैसिटें हैं जिनमें आप देखोगे कि कैसे वहाँ हमारे लोगों पर अत्याचार हो रहे हैं। कैसे हमारी बहन-बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार होते हैं। ये कैसिटें देखकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं।“

“पर यह कैसे संभव है कि जिस वक़्त बलात्कार हो रहे थे, उस वक़्त तुम्हारे लोगों ने वो कैसिटें या मूवियाँ बनाई। तू तो ऐसे बता रही है जैसे किसी फिल्म की सूटिंग की कैसिटों की बात कर रही हो।“ सुलेह सद्दीकी नाराज़ होकर आफिया की ओर देखते हुए बोला। इस्मत को घरवाले की यह बात अच्छी न लगी। पर इसका जवाब आफिया ने ही दिया। वह बोली, “जो जिहादी वहाँ लड़े रहे हैं, वे ऐसी घटनाओं को कैमरे में क़ैद कर लेते हैं। ताकि आप जैसे पश्चिम के भक्तों को सच दिखलाया जाए।“

“मैं किसी पश्चिम-वश्चिम का भगत नहीं हूँ। मगर सच्चाई तो सच्चाई ही है न। पहले तू यह बता कि तेरे पास जो कैसिटें हैं, ये किस ग्रुप ने बनाई हैं। फिर मैं आगे बात करूँगा।“

“अब्बू, यह अधिकांश काम मुस्मिल ब्रदरहुड का किया हुआ है। इस वक़्त जिहाद में सबसे अधिक योगदान वही दे रहे हैं।“ इतना कहकर आफिया अपनी कॉपी पलटने लगी।

“यह मुस्लिम ब्रदरहुड़ ही असली झगड़े की जड़ है। तेरी ये वीडियो कैसिटें देखने से पहले ही मैं बता देता हूँ कि यह सब प्रोपेगंडा है। मुसलमानों को भड़काने के लिए ऐसे काम तो ब्रदरहुड़ मुद्दत से करता आ रहा है।“

पति की बात सुनकर इस्मत ने आफ़िया की ओर देखा और उसे चुप रहने का इशारा किया। अगले पल कमरे में चुप्पी-सी छा गई। सभी को चुप-सा देखकर फ़ौज़िया बोली, “अब्बू, इस मुस्लिम ब्रदरहुड की असलीयत क्या है? मेरा मतलब यह किसने शुरू किया और इसका निशाना क्या है?“

“इसके बारे में फौज़िया बेटी, मैं तुझे बताता हूँ।“ फारूकी ने गला साफ़ करते हुए खंखारा और फिर फिर बोलने लगा -

“बहुत पहले मिस्र के एक मशहूर बुद्धिजीवी ‘हसन अल बन्ना’ ने इस पार्टी बनाई थी। उसके इरादे बहुत नेक थे। उस वक़्त अपने आसपास ब्रितानिया ने सबको गुलाम बना रखा था। सभी देश ब्रितानिया की कालोनियाँ बनाकर रख दिए थे। इन कालोनियों के लोग जो गाढ़े पसीने की कमाई करते थे, ब्रितानवी उसी कमाई पर ऐश करते थे और हमारे लोगों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार होता था। हसल अल बन्ना की इस नई बनाई पार्टी, मसलन ब्रदरहुड ने नारा दिया कि आओ लोगो हम सब मिलकर इन ब्रितानवी लोगों को यहाँ से भगा दें और कुरान हमारा संविधान हो। उसके कहने का भाव था कि ऐसा राज्य हो जहाँ का राज-प्रबंध और कानून व्यवस्था वगैरह मज़हबी अकीदे के अनुसार हो। अपने हकों के लिए लड़ना मज़हब का काम माना जाए और इसको जिहाद समझकर लड़ा जाए। उस वक़्त ब्रदरहुड ब्रितानिया के इतना खिलाफ़ था कि इसने दूसरी बड़ी जंग में जर्मनी का पक्ष लिया क्योंकि वह ब्रितानिया के ख़िलाफ़ लड़ रहा था। जंग बंद होने के बाद जब इज़राइल स्टेट बना तो मुस्लिम ब्रदरहुड ने सबसे पहले इसका विरोध किया। इसी कारण पहली अरब इज़राइल जंग में मिस्र मुख्य पार्टी था। हालांकि अरब उस जंग में हार गया, पर ब्रदरहुड की धूम मच गई। जब ब्रितानिया यहाँ से चला गया तो मुस्लिम ब्रदरहुड अपनी ही सरकार के खिलाफ़ हो गया। सरकार ने इस पर पाबंदी लगा दी। फिर, यह अन्य मुल्कों में फैलने लगा। आज हालात ये हैं कि हरेक अरब मुल्क में इसकी शाखाएँ हैं, पर तकरीबन सभी देशों ने इस पर पाबंदी लगा रखी है। क्योंकि आजकल ये इंतहापसंदों के कब्ज़े में है और बहुत ही हिंसक हो गया है।“

“जब इतना ख़तरनाक है तो यह किसी देश की मदद के बग़ैर अपना वजूद कैसे कायम रख सकता है?“ इस्मत ने टेढ़ा सवाल किया।

“ऐसा नहीं है। कई देशों के यह फिट बैठता है। सउदी अरब का उदाहरण ले लो। वहाँ का राज घराना वहाबी है जो सुन्नी और शिया दोनों के खिलाफ़ है। वह अपनी वहाबी शाखा को फ़ैलाने के लिए मुस्लिम ब्रदरहुड की मदद करता है। असल में, सबसे अधिक सउदी अरब ही ब्रदरहुड को उठाता है।“

“इसका मतलब, बाकी सारी दुनिया पागल है जो ब्रदरहुड का पक्ष लेती है।“ इस्मत गुस्से में बोली। इसके बाद वहाँ हो रही बहस में तल्खी आने लगी। फारूकी ने जाने की इजाज़त मांगी और दोनों मियाँ-बीवी उठकर चल पड़े।

इस्मत और फ़ौज़िया उन्हें विदा करने के लिए बाहर निकल गईं। पीछे आफिया और उसका पिता रहे गए। सुलेह सद्दीकी आफिया के सर पर हाथ फेरते हुए बोला , “बेटी , तू अपनी पढ़ाई में ध्यान दे। तूने क्या लेना है इस चैरिटी वग़ैरह से। “

“अब्बू , यह तो दीनवाला काम है। अम्मी ने भी तो सारी उम्र यही सब किया है। फिर आप मुझे इस तरफ़ से क्यों रोकते हैं ?“

“क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह असली चैरिटी नहीं है। “

“और क्या है यह ?“

“असली चैरिटी वह होती है जो वास्तव में ज़रूरतमंदों की मदद करें , पर आजकल जितनी भी चैरिटी हो रही हैं , वे असल में जिहाद के नाम पर लड़ रहे आतंकवादियों की मदद कर रही हैं। “

“अब्बू प्लीज़ , उन्हें आतंकवादी न कहो , नहीं तो मैं नाराज़ हो जाऊँगी। “ आफिया उठकर खड़ी हो गई।

“तू यूँ गुस्सा न हो , मेरी बात सुन। “ पिता ने आफिया की बांह पकड़कर उसको फिर से बिठा लिया।

“तू ज़िहाद का मतलब समझती है ?“

“कुछ कुछ समझती हूँ और बाकी आप समझा दो। “ आफिया रूखे स्वर में बोली।

“देख बेटा , ये लोग पवित्र कुरान में से उतने ही लफ्ज़ उठा लेते हैं जितने इनको ठीक बैठते हैं। सारी कुरान को पढ़ा जाए तो असली मतलब कुछ और निकलता है। “

“क्या निकलता है असली मतलब?“ आफिया की अभी भी त्यौरियाँ चढ़ी हुई थीं।

“मुहम्मद साहिब ने फरमाया है कि इन्सान की ज़िन्दगी में नौ जिहाद और हैं और यह लड़ाई वाला ज़िहाद दसवें नंबर पर आता है। पहले ये हैं - जैसे गुस्सा, क्रोध, लालच, लोभ, मोह और काम वग़ैरह। जो लोग इन नौ जिहादों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, सिर्फ़ वही दसवा जिहाद लड़ने के काबिल समझे जाते हैं। क्या तुझे लगता है कि आज के जिहादियों ने इन पर काबू पाया हुआ है।“

आफिया चुप रही। वह कुछ न बोली तो उसका पिता फिर बोला, “मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूँ। जंग के मैदान में मुहम्मद साहिब के साथ उनका एक रिश्तेदार जीमल लड़ रहा था। उसने लड़ते हुए अपने दुश्मन को नीचे ज़मीन पर गिरा लिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा। वश न चलता देख नीचे पड़े दुश्मन ने उसके मुँह पर थूक किया। इस पर एकदम गुस्से में आकर जमील ने तलवार उठाई और दुश्मन का गला काटने को आगे बढ़ा। तभी उसके अंदर कुछ कौंधा और उसने तलवार दूर फेंक दी। वह दुश्मन की छाती पर से भी उठ खड़ा हुआ। नीचे पड़े दुश्मन ने कहा कि अब छोड़ क्यों दिया मुझे, मार क्यों नहीं देता। यह सुनकर उसने मालूम है क्या कहा?“

“क्या कहा?“

“वह बोला, अभी तो मैं अपने आपको ही मार नहीं पाया, किसी दूसरे को मैं क्या मारूँगा। उसके कहने का संकेत उसे आए क्रोध की ओर था। मतलब यह है कि अभी तो मैं अपने गुस्से को ही नहीं मार सका। इतना कहकर वह जंग के मैदान से बाहर चला गया।“

आफिया ने पिता की बात तो सुनी, पर अधिक दिलचस्पी न दिखलाई। उसकी ओर देखता सुलेह बोला, “आफिया बेटी, पुण्य-दान करना कोई बुरा काम नहीं है। पर इसके लिए सारी ज़िन्दगी पड़ी है। अभी तू अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। जब पढ़-लिखकर ज़िन्दगी में कामयाब हो गई तो जितना चाहे चैरिटी के लिए काम करते रहना।“

“अब्बू, जो काम करने को आदमी का दिल आज कर रहा है, उसके लिए वह आगे की ज़िन्दगी का इंतज़ार क्यों करे। और मैंने पहले भी कहा है कि यह कोई बुरा काम नहीं है।“

“देख आफिया ,मैंने तेरी अम्मी को सारी उम्र यह काम करते हुए देखा है। मैं यह भी जानता हूँ कि ये सभी जिहादी इसी चैरिटी के रास्ते ही जिहादी बनते हैं। आख़िर में सभी के तार जिहाद से ही जाकर जुड़ते हैं। यह तो एक लपलपाती आग है। इस तरफ़ जाता हर राह बरबादी का राह है। इधर जो भी गया ,भस्म हो गया। इतना ही नहीं ,जो इसके करीब से गुज़रा ,वह भी झुलस गया। “

“अब्बू ,मैं समझती हूँ सब। आप कोई फ़िक्र न करो। “

“बस बेटी ,कुछ ऐसा करने के बारे में सोचना भी नहीं जिससे मेरी और खानदान की इज़्ज़त को बट्टा लगे। “

“ठीक है अब्बू। “ इतना कहते हुए आफ़िया उठकर चली गई। सुलेह उसको ज़ाते हुए देखता रहा। उसको आफ़िया की बातों में से उसके अंदर की तपिश महसूस हो रही थी। यही नहीं ,उसको अपने पुत्र का जब भी हूस्टन से फोन आता था तो वह भी हमेशा यही फ़िक्र ज़ाहिर करता था कि कहीं आफ़िया राह से भटक ही न जाए। क्योंकि उसके बताये अनुसार उसको पता चलता रहता था कि आफिया उन चैरिटियों के लिए काम करती है जो किसी न किसी जिहाद की मदद कर रही हैं।

शाम के वक़्त इस्मत ,आफिया और फ़ौज़िया को लेकर घूमने निकल गई। वह अपने जान-पहचान वाले घरों में आफ़िया को मिलवा लाई। उसका विचार था कि लोगों में उसकी इस बात के कारण धाक जम जाए कि उसकी बेटी कितनी बड़ी समाज-सेविका है और धर्म के लिए बहुत बड़ा काम कर रही है। अगले कई दिन अनेक जन-समूहों में आफ़िया के उसने भाषण भी करवाए। हर जगह श्रोता उससे बहुत प्रभावित हुए। वह हर भाषण के दौरान बॉस्निया में चल रहे घरेलू युद्ध में मरने वाले मुसलमानों की बात करती थी। इन जन-समूहों में वह मुसलमानों पर हो रहे अत्याचारों की वीडियो भी दिखाती थी। ये सब जन-समूह बड़े परिवारों की ओर से आयोजित करवाए जाते थे। ये वे परिवार थे जो राजनीतिक लोगों के बहुत करीब थे। इन्हीं दिनों एक दिन इस्मत ने शैरेटन होटल में आफ़िया का भाषण करवाया तो एक स्त्री इस्मत को एक तरफ़ ले गई। उसका नाम ज़ाहिरा खां था। असल में ,वह अपने पुत्र अमजद खां के लिए वधु खोज रही थी। आफ़िया को देखकर उसको लगा कि इस लड़की से अच्छी बहू तो उसको मिल ही नहीं सकती। इधर उधर की बातें करते हुए उसने इस्मत को खान परिवार के घर आयोजित कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया। वह बहाने से आफ़िया को अपने पुत्र से मिलाना चाहती थी। फिर ,उस दिन ज़ाहिरा खां के घर भाषण भी हुआ और आफ़िया की अमजद के साथ मुलाकात भी हुई। लेकिन बाद में अमजद ने अपनी अम्मी को बताया कि लड़की तो उसको पसंद है ,पर उसका भाषण और अन्य बातें उसको व्यर्थ लगती हैं। जाहिरा खां को लगा कि चलो ,अमजद लड़की को पसंद करता है ,यही

बहुत है। उसने अमज़द से कहा कि वह और सोच ले। इस दौरान वह सद्दीकी परिवार से बात चलाएगी। आफ़िया की छुट्टियाँ समाप्त हो चुकी थीं। ज़िस दिन उसको जाना था, उस दिन एअरपोर्ट पर विदा करते समय इस्मत उसको एक तरफ़ ले गई और गले मिलते हुए बोली, “आफिया, तू जल्दी से जल्दी अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस लौट आ। यहाँ तेरे करने के लिए बहुत कुछ है। मुझे तेरी काबलियत पर भी शक नहीं है। तू बहुत ऊँचा मुकाम हासिल करेगी।“

“अम्मी, मैं ऐसा कौन-सा मोर्चा मारूँगी।“ आफिया ने माँ की बात को हँसी में टाल दिया।

“तू किसी दिन राजनीति का चमकता हुआ सितारा होगी। अगर भुट्टो परिवार की लड़की बेनज़ीर इतने बड़े ओहदे पर पहुँच सकती है तो मेरी बेटी क्यों नहीं। तू बस यूनिवर्सिटी की अपनी पढ़ाई खत्म करके यहाँ आ जा और राजनीति शुरू कर। तुझे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। मैं तेरे अंदर का जोश देख रही हूँ। बस, तू मेरी बात पर ग़ौर कर।“

“ठीक है अम्मी।“ इतना कहते हुए आफ़िया सामान उठाकर चल पड़ी और चैकिंग वगैरह से गुज़र कर हवाई जहाज में जा बैठी। फ्लाइट अमेरिका के लिए रवाना हुई तो आफिया के दिल में से माँ-बाप द्वारा दी गई नसीहतें भाप की तरह उड़ गईं। दूसरे दिन वह अपनी यूनिवर्सिटी के हॉस्टल में पहुँच गई।

इस बार जब वह यहाँ पहुँची तो उसके अंदर का जोश ठाठें मार रहा था। इसका बड़ा कारण था कि पाकिस्तान में जहाँ कहीं भी उसने लेक्चर दिया था, हर जगह उसकी भरपूर तारीफ़ हुई थी। हरेक ने उसको इस्लाम की सच्ची बेटी कहकर सराहा था। इसके अलावा, वह खुद भी सोचने लगी थी कि उसको ज़िहाद में आगे बढ़कर काम करना चाहिए। इन सभी बातों ने उसके अंदर एक नई शक्ति भर दी।

उसने अमेरिका पहुँचते ही जोशोखरोश के साथ काम प्रारंभ कर दिया। वह एम.एम.ए. की मीटिंगें नियमित रूप से करवाने लगी। चैरिटी के काम में दिलचस्पी बढ़ा दी। एक दिन उसको सुहेल मिलने आया। बातें करते हुए वे दोनों पॉर्क की ओर निकल गए।

“कैसी रहीं तेरी छुट्टियाँ?“ सुहेल ने बात छेड़ी।

“बहुत बढ़िया।“

“तेरे अब्बू का क्या हाल है अब?“

“ठीक है। बस, दिल का रोग होने के कारण कमज़ोरी बहुत आ गई है।“

“तेरी अम्मी के चैरिटी के काम कैसे चलते हैं?“

“अम्मी के तो ठीक चल रहे हैं, पर यहाँ के मुझे सही नहीं लगते।“

“वो कैसे?“

“मेरे जाने के बाद सब कुछ सुस्त-सा हो गया लगता है।“

“तू आ गई है, सब कुछ ठीक हो जाएगा। हमें लोगों को आकर्षित करने के लिए अच्छे वक्ताओं की ज़रूरत है।“

“बुलाओ फिर, देर किस बात की है।“

“मैंने इंतज़ाम किया है। इसबार कैनेडा से कैथरीन बल्क को बुलाया है। तुझे मालूम ही है कि वह बोलती है तो आग बरसती है।“

“हाँ, मैंने उसकी किताब ‘सोशियल जस्टिस इन अमेरिका’ पढ़ी है। उसके ख़याल बहुत ऊँचे हैं। पर एक बात है।“

“वह क्या?“

“उसको हम आम वक्ताओं के सामने नहीं बुला सकते। उसके विचार आम लोगों की समझ में नहीं आने वाले। बल्कि कई बार तो वे उसकी बातों को उलट ले जाते हैं। “

“फिर इसका हल क्या है ?“

“मैंने यह सोचा है कि हम एक अलग संगठन बना लें। जो बिल्कुल गुप्त हो। उसकी बैठकों में ज़िहाद को पूरी तरह समर्पित लोग ही आएँ। “

“यह बिल्कुल ठीक है। साथ ही इस बात से मुझे याद आया कि बॉस्निया में जिहादियों की कमी पड़ती जा रही है। हमें वहाँ लड़ने के लिए ज़िहादी चाहिएँ। “

“यह बात मैंने पहले ही सोच ली थी। इसके लिए मैंने अपनी गुप्त ई-मेल में मैसिज़ भी डाल दिया है कि हमें बॉस्निया के पाक जिहाद के लिए शहीदों की ज़रूरत है। इसके बहुत सारे ज़वाब भी आए हैं। “

“यह तो तुमने बहुत अच्छा किया। तुम्हारी और क्या योजनाएँ हैं ?“

“मैं चाहती हूँ कि चिकागो में चैरिटी के लिए काम कर रहे ग्लोबल रिलीफ़ फाउंडेशन और बैनेवोलैंस इंटरनेशनल फाउंडेशन की यहाँ भी ब्रांचें खोली जाएँ। इस तरह चैरिटी के अवसर बढ़ जाएँगे और बॉस्निया में चल रहे जिहाद के लिए धन की कमी भी नहीं रहेगी। तुझे पता ही होगा कि वहाँ हथियारों के लिए पैसा चाहिए। “

“यह तो ठीक है। दोनों ही चैरिटी यहीं शुरू कर लेते हैं। कुछ और ?“

“मैंने लड़कियों के ग्रुप को हथियार चलाने की ट्रेनिंग के मंतव्य से एक क्लब ज़्वाइन करवाया है। खुद भी वहाँ बंदूक आदि चलाने का प्रशिक्षण ले रही हूँ। इसके अलावा ...। “ आफिया ने बात बीच में ही छोड़ ऊपर आकाश की ओर देखा। बादल बरसने लगे थे। वह दौड़कर समीप की एक इमारत के छज्जे के नीचे जा खड़े हुए।

“इसके अलावा, मैं यहाँ की एक ...। “आफिया फिर से बोलने लगी ही थी कि सुहेल ने मुँह पर उंगली रखते हुए उसको चुप रहने का इशारा किया। आफिया ने चुप होकर अपने आसपास देखा। उसको याद आया कि यहाँ हरेक बिल्डिंग के किसी न किसी कोने में कैमरे लगे होते हैं जो बातों को भी रिकार्ड करते हैं। उसने दूसरी साधारण-सी बात शुरू की। करीब पंद्रह मिनट बाद बारिश बंद हो गई तो वे बाहर निकलकर क्रॉसवाक पर चलने लगे। आसपास झांकते हुए आफिया ने बीच में छोड़ी पहले वाली बात पुनः शुरू की।

“हाँ, मैं कह रही थी कि मैंने यहाँ की एक ऐसी मस्जिद के इमाम के साथ राबता कायम किया है जो यहाँ की जेलों में मुसलमान क़ैदियों को हर हफ़्ते धार्मिक शिक्षा देने जाता है। मैं उसके माध्यम से बहुत सारी अंग्रेजी में तर्जुमा हुई किताबों को मुसलमान क़ैदियों तक पहुँचा रही हूँ। इस तरह उनके अंदर भी जिहाद की चिंगारी सुलगेगी ...। “बात करते करते आफ़िया चुप हो गई, क्योंकि कोई करीब से गुज़र रहा था। थोड़ा रुककर वह फिर बोलने लगी, “इससे अलावा, मैं किताबों की पुरानी दुकानों से अमेरिकी मिलेट्री मैनुअल खरीद रही हूँ ताकि उन्हें अपने मुजाहिदीनों को भेजा जा सके। उन्हें अमेरिकियों के खिलाफ़ लड़ने के समय इनसे मदद मिल सके। “

“आफिया, तू तो बहुत आगे की सोचती है। जो कुछ तू कर रही हो वो तो साधारण व्यक्ति सोच भी नहीं सकता। तेरी इस अमेरिकी मिलेट्री मैनुअल वाली बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। पर ज़रा संभालकर चलना क्योंकि अगर किसी को थोड़ा-सा भी शक हो गया तो काम खराब हो जाएगा। तेरा यह काम बगावत माना जाएगा। तू बस ...। “तभी, सुहेल का फोन बजने लगा। फोन ऑन करके वह बात सुनने लगा। कई मिनट बात होने के बाद वह आफिया की ओर आते हुए उदास स्वर में बोला, “असल में, किसी घर के भेदी ने ही सारा काम बिगाड़ा था। “

“क्या !“

“आज फिर अलकीफा के कई मेंबरों की गिरफ्तारियाँ हुई हैं। युनाइटिड नेशन्ज़ बिल्डिंग, बड़े पुल और कई सुरंगों को नुकसान पहुँचाने के आरोप लगाकर इन मेंबरों को पकड़ा गया है। असल में, भीतरी सूत्रों से पता चला है कि जिस दिन शेख उमर अब्दुल रहमान ने ढाई लाख अमेरिकियों को मारने का फतवा जारी किया था, उस दिन वहाँ कोई ऐसा मुसलमान भी था जो कि एफ.बी.आई का मुखबिर था। उसी के कारण सारी बात का भेद खुला और वही आगे चलकर आज वाली गिरफ्तारियों का कारण बना। “

“ऐसे गद्दारों का क्या किया जाए?” आफिया की भवें सिकुड़ गईं।

“इनका हल वही है जो एक दुश्मन का है। पर यहाँ यह काम बहुत कठिन है।”

“अच्छा मैं चलता हूँ। जब तक थोड़ी शांति नहीं हो जाती, तब तक बचकर रहने की ज़रूरत है।”

सुहेल चला गया तो आफ़िया हॉस्टल की ओर चल पड़ी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 7

(7)

वर्ष 1994 को आरंभ हुए तीन सप्ताह हो चुके थे। उस दिन रातभर बर्फ़बारी होती रही थी। आफ़िया गहरी नींद सोई हुई थी जब उसके सैल फोन की घंटी बजी। उसने अलसाते हुए ‘हैलो’ कहा। दूसरी ओर मार्लेन बोल रही थी। उसने इतना कहकर फोन काट दिया कि वह उसको एक घंटे बाद लेने आ रही है। वह तैयार रहे। आफिया ने धीरे-धीरे बिस्तर छोड़ा और उठकर कमरे में से बाहर आ गई। उसने खिड़की का पर्दा उठाकर बाहर देखा। सूरज की तेज़ किरणों ने उसकी आँखें चुंधिया दीं। रात यद्यपि बर्फ़ गिरती रही थी, पर इस समय सूरज निकला हुआ था। स्नो पर पड़ती धूप आँखों में चुभ रही थी। वह पर्दा गिराकर वापस कमरे में आ गई। फिर तैयार होने लगी। तैयार होकर उसने अपना बैग उठाया और लम्बा कोट पहनकर नीचे आ गई। उसके नीचे पहुँचने के करीब दो मिनट बाद ही मार्लेन आ गई। आफ़िया दरवाज़ा खोलकर कार में बैठी तो मार्लेन ने कार आगे बढ़ा ली। बीस मिनट में वे उसके अपार्टमेंट में पहुँच गईं। दरवाज़ा खोलते ही आफ़िया ने देखा कि सामने सुलेमान अहमर बैठा था। दोनों ने एक दूसरे को आदाब कहा। वे पहले मिल चुके थे। सुलेमान अहमर, बैनेवोलैंस इंटरनेशनल का डायरेक्टर था। उसने पहली मुलाकात में ही आफिया को बता दिया था कि वह जिहाद की ओर कैसे अग्रसर हुआ। उसने बताया था कि वह ओर कुछ अन्य दोस्त जो

कि पूरे नबरास्का यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी थे, टूर लगाने क्रोशिया गए थे। वहाँ उनको जिहादियों ने बंदी बना लिया था। कुछ दिन उन्हें क़ैद में रखकर छोड़ दिया गया, परंतु जो कुछ उसने इस दौरान जिहाद के बारे में सुना, उसने उसके दिल में जिहाद के प्रति हमदर्दीभरा आकर्षण पैदा कर दिया। बाहर आकर उसने और खोजबीन की तो उसको लगा कि उसका असली काम जिहाद ही है। फिर वह छोटे सर्किलों में विचरता हुआ इस संगठन के डायरेक्टर के पद पर आ पहुँचा। आज वह यहाँ बैनेवोलैंस की ब्रांच स्थापित करने आया था।

सारा दिन वे मीटिंग के विषय में विचार-विमर्श करते रहे। यह एक छोटी-मोटी मीटिंग नहीं थी। बैनेवोलैंस बहुत बड़ा संगठन था। जिसका काम हालांकि चैरिटी ही बताया जाता था, परंतु असल में यह अलकायदा के साथ जुड़ा हुआ था। अलकायदा के लिए बहुत सारा फंड इसी संगठन के जरिये इकट्ठा होता था। शाम के वक़्त मीटिंग हुई तो आफिया हैरान रह गई। इतना जोश उसने किसी भी मीटिंग में नहीं देखा था। इसके अतिरिक्त, यहाँ बहुत बड़े-बड़े जिहादी पहुँचे हुए थे। जिनके इससे पहले आफिया ने सिर्फ़ नाम ही सुने थे। सुलेमान ने बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया। यहाँ आफ़िया को भी बोलने का अवसर मिला। उसने इस अवसर का इतना अच्छा इस्तेमाल किया कि सभी हैरान रह गए। उसका लैक्चर इतना प्रभावशाली था कि सदस्यों के मुँह बंद हो गए। हरेक को लगा कि इतनी जोशिली लड़की जिहाद में पहले कभी नहीं देखी। उसने सभी की ओर देखते हुए कहा कि किधर गया मुस्लिम मर्द आज। किधर गया उसका स्वाभिमान कि बॉस्निया में हमारी बेटियों-बहनों का कुछ नहीं बचा और उसके कानों पर जूं नहीं रेंगी। उसने कहा कि मैं स्टेज पर क्यों खड़ी हूँ। यहाँ किसी मर्द को होना चाहिए। उसकी बातों का इतना असर हुआ कि कई युवकों ने जिहाद के लिए अपने नाम लिखवा दिए।

वापस लौटते हुए सुलेमान ने बात शुरू की, “आफिया इस संगठन का प्रधान मुझे नहीं, बल्कि तुझे होना चाहिए, पर...।“ आगे कुछ कहते कहते वह रुक गया। वह कहना चाह रहा था कि इस्लाम के अनुसार मर्द संगठन का मुखिया मर्द ही हो सकता है। उसको चुप हुआ देख आफिया बोली, “मैं तुम्हारी बात समझ गई हूँ। पर मैं इस बात के हक़ में हूँ कि इस्लाम ने औरत को जो भी रुतबा दे रखा है, वह सही है। मैं जिस ओहदे पर काम कर रही हूँ, वह ठीक है। बस, काम चलते रहना चाहिए।“

“आफिया, तूने कामीला की बात सुनी है।“ सुलेमान ने बात बदली।

“कामीला कौन?“

“यह नई घटित घटना है , इसलिए तुझे पता नहीं होगा। कामीला एक जिहादी लड़की है जो कि इंग्लैंड में जन्मी -पली थी। वह अपने बलबूते पर ही बॉस्निया चली गई और जिहादी दलों में शामिल हो गई। लड़ाई में उसने काफ़िरों के छक्के छुड़ा दिए। उसकी बहादुरी की कहानियों से इंटरनेट भरा पड़ा है। “

“अच्छा ! औरत होकर उसने इतनी बहादुरी भरे कारनामे किए हैं , यह तो बहुत ही अहम बात है। “

आफिया उसकी बात सुनकर अपने आप में लीन हो गई। ख़याल में खोई आफिया कामीला की जगह स्वयं को देख रही थी। उसको लग रहा था कि बॉस्निया में कामीला नहीं , बल्कि वह गई हो। दुश्मनों के छक्के कामीला ने नहीं अपितु उसने छुड़ाये हों। उसके विचारों की लड़ी टूट गई जब सुलेमान की आवाज़ उसके कानों में पड़ी , “पर …। “

“पर क्या ?“ आफिया ने सोच के घेरे से बाहर निकलकर उसकी ओर देखा।

“उसके बारे में बड़े मज़हबी लीडर इस बात से नाराज़ हैं कि वह एक औरत होकर अकेली ही जिहाद में शामिल हो गई है। मेरा मतलब ऐसे समय में उसके साथ उसका महरम होना चाहिए। इस्लाम के मुताबिक अगर कोई औरत जिहाद में हिस्सा लेती है तो वह घरवाले के बग़ैर यह काम नहीं कर सकती। ““यह बात तो बिल्कुल ठीक है। “

“मेरा ख़याल है कि तुमने जिहादी वेबसाइट पर आज की ख़बर नहीं पढ़ी। “ अब तक शांत बैठी उनकी बातें सुन रही मार्लेन बोली।

“क्यों , क्या ख़बर है आज की ?“

“उस लड़की ने सूडान के किसी जिहादी के साथ निकाह कर लिया है। अब दोनों पति -पत्नी मुहाज़ पर लड़ रहे हैं। “

“ये हैं फिर सच्चे जिहादी जो सही ढंग से इस्लाम का पालन कर रहे हैं। काश कि…। “ आफिया बात बीच में ही छोड़ती हुई चुप हो गई। अब उसको ख़याल आया कि

काश वह भी घरवाले के साथ जिहाद लड़ रही होती। कुछ आगे चलकर मार्लेन और सुलेमान उसे उतारकर आगे बढ़ गए। आफिया के ख़यालों में कामीला ही घूम रही थी। इतना ही नहीं, उसको रात में नींद भी नहीं आई। सारी रात वह किसी ख़याल से गुत्थम-गुत्था होती रही कि काश, वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ शादी करवाये जो कि जिहाद लड़ रहा हो या आवश्यकता पड़ने पर जिहाद में जाए। दिन चढ़ने तक उसने अपने आप से एक दृढ़ फैसला कर लिया कि वह ऐसे ही किसी लड़के के साथ विवाह करवाएगी जो उसकी इस सोच को पूरा करता हो।

आफिया ने युनिवर्सिटी की पढ़ाई पूरी कर ली थी। उसने बहुत अच्छे अंकों से पढ़ाई ख़त्म की थी। वर्ष 1995 के जनवरी महीने उसके माता-पिता उसकी ग्रेज्युएशन पर आए। ग्रेज्युएशन की पार्टी के बाद माँ-बाप के साथ वह अपार्टमेंट में आई तो उसकी माँ ने बात प्रारंभ की।

“आफिया, हम तेरी शादी के बारे में सोच रहे हैं।“

इस्मत की यह बात सुनकर आफिया की खुशी का ठिकाना न रहा। क्योंकि जबसे उसके माँ-बाप आए थे, तब से वह अवसर खोज रही थी कि किसी वक़्त वह माँ से बात करे और किसी जिहादी के साथ विवाह करवाने की अपनी ख्वाहिश बताए। अब उसके मन की हो गई जब माँ ने खुद ही बात छेड़ ली।

“अम्मी, उससे पहले मैं कुछ कहना चाहती हूँ।“

“हाँ, बोल।“

“अम्मी, मेरी दिली इच्छा है कि मैं किसी ऐसे लड़के से विवाह करवाऊँ जो कहीं जिहाद लड़ रहा हो।“

“आफिया, तेरा दिमाग तो नहीं खराब हो गया। मैंने तुझे क्या कहकर भेजा था?“ इस्मत गुस्से में उसकी ओर लपकी। भवें सिकोड़ती वह कुछ पल आफिया की तरफ देखती रही और फिर सख़्त आवाज़ में दुबारा बोलने लगी, “मैं तुझे कई बार कह चुकी हूँ कि यह काम चैरिटी तक तो ठीक है, पर उससे आगे नहीं। तेरा असल मैदान तो राजनीति है। पाकिस्तान की राजनीति तुझे पुकार रही है। तू है

कि पता नहीं क्या उल्टा-सीधा सोचती रहती है। अगर यह बात तेरे अब्बू ने सुन ली तो क़हर हो जाएगा।“

“पर अम्मी, मेरा मज़हब मुझे इजाज़त देता है कि अगर मुझे अच्छा न लगे तो मैं निक़ाह से इन्कार कर सकती हूँ।“

“पर इस में अच्छा या बुरा लगने वाली क्या बात है। मैंने तो तुझे अभी यह भी नहीं बताया कि तेरी मंगनी किसके साथ करने की सोच रहे हैं हम। साथ ही, मज़हब यह भी तो कहता है कि बच्चे को माँ-बाप की बात माननी चाहिए। तू पहले पूरी बात सुन ले।“

“हाँ, बताओ।“ आफिया ने मन में सोचा कि यहाँ सीधे ढंग से बात करने से बात नहीं बनने वाली। वह माँ-बाप की बात का जवाब नहीं दे सकेगी। उसने किसी दूसरे ढंग से बात को अपने हक़ में रखने का फैसला कर लिया।

“तुझे याद होगा कि जब पिछली बार तू पाकिस्तान आई थी, तो वहाँ जाहिरा खां नाम की एक बेगम साहिबा ने तेरा भाषण सुना था। बाद में उसका बेटा अमजद तुझे घर तक छोड़ने भी आया था। उस लड़के के साथ तेरी मंगनी की बात चल रही है। वह इस साल आगा खां युनिवर्सिटी से डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी कर रहा है। फिर, वह एनेस्थीसियोलॉजी की उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका आ रहा है। हमारे मुताबिक यह लड़का हर तरह से तेरे योग्य है। तू अब सोचकर अपनी राय बता।“

माँ की बात सुनकर आफिया चुप हो गई और मन में सोचने लगी, ‘सीधे ढंग से तो माँ ज़िहाद वाली बात नहीं मानेंगी। पर कई बातों से यह लड़का मेरा अच्छा जीवन-साथी हो सकता है। वह यहाँ अमेरिका में होगा तो मैं उसको जिहाद में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित कर लूँगी। इस प्रकार मेरा मनोरथ भी पूरा हो जाएगा और घरवालों का मान भी रह जाएगा। मैं तरीके के साथ माँ को कहकर उस लड़के को ज़िहाद के लिए हामी भरवा लेती हूँ।’ मन में निर्णय करके आफिया माँ से बोली, “पर अम्मी, मेरा यह अधिकार है कि मैं अपने होने वाले घरवाले से पूछूँ कि क्या ज़रूरत पड़ने पर वह जिहाद में हिस्सा लेगा जो कि हर मुसलमान का पहला कर्तव्य है।“

इस्मत को उसकी बात कुछ-कुछ ठीक लगी। उसने सोचा कि इस तरह पूछने में क्या हर्ज़ है। इस प्रकार तो हर एक मुसलमान सोचता है कि अगर ज़रूरत होगी तो वह जिहाद में हिस्सा अवश्य लेगा। निकाह वग़ैरह के समय यह एक किस्म की रस्म ही समझी जाती है। उसने इस बात के विषय में आफिया को 'हाँ' कह दी और साथ ही, पाकिस्तान में अपने परिवार को खान परिवार तक यह बात पहुँचाने का संदेश भिजवा दिया। उधर ख़ान परिवार वाले संदेश मिलने पर सद्दीकी परिवार के मज़हबी रहनुमा मुफ्ती साहिब से मिलने गए। सारी बातचीत करने के बाद मुफ्ती साहिब ने अमजद के साथ अलग ढंग से बात करते हुए पूछा, "बेटा अगर ज़रूरत पड़े तो क्या तू जिहाद में हिस्सा लेगा?"

"क्या!" अमजद हैरान हुआ। उसने सोचा कि वह एक डॉक्टर है, न कि कोई फ़ौजी। फिर उसके मन में ख़याल आया कि एक मज़हबी रहनुमा होने के नाते मुफ्ती साहिब द्वारा इस तरह पूछा जाना स्वाभाविक है। उसने भी इसको एक रस्म-सी समझते हुए कहा, "जी, इंशा अल्लाह अगर खुदा ने चाहा तो ऐसा ही होगा।" मीटिंग खत्म हो गई। यह बात अमेरिका बैठे सद्दीकी जोड़े की मार्फ़त आफिया तक पहुँच गई कि होने वाले दूल्हे ने जिहाद में हिस्सा लेने की सहमति प्रकट की है। उसने खुशी खुशी रिश्ते के लिए 'हाँ' कर दी। सद्दीकी परिवार के पाकिस्तान लौटने के बाद अमजद और आफिया की मंगनी हो गई। बाद में यह निकाह फोन पर ही हुआ।

इस बीच 1993 में बेनज़ीर भुट्टो दूसरी बार प्रधानमंत्री चुनी जा चुकी थी। सबको पता था कि वह अमेरिका समर्थक है। अमेरिकी सरकार ने पहली बात जो उससे कही, वह दुनिया के सबसे ज्यादा वांटेड आतंकवादी रम्ज़ी युसफ को पकड़ने वाली बात थी। भुट्टो ने इसके लिए पूरी मदद देने का भरोसा दिया। इसके बाद कई बार छापे मारे गए, परन्तु रम्ज़ी युसफ हर बार बच निकलता था। एक दिन भुट्टो ने अपने ख़ास अफ़सर से बात की तो उसने अपना विचार बताते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि आई.एस.आई. में रम्ज़ी युसफ के ख़ास सैल हैं। वे हर बार पुलिस रेड होने से पहले ही उसको निकाल देते हैं। फिर, भुट्टो ने एक ऐसी टॉस्क फोर्स बनाई जिसकी वह स्वयं इंचार्ज़ थी। इस टॉस्क फोर्स में सभी उसके विश्वसनीय अफ़सर थे। इसका परिणाम यह हुआ कि अगले ही महीने रम्जी युसफ पकड़ा गया। उसको गिरफ्तार करते ही अमेरिकी सरकार उसको अमेरिका ले गई। इससे बेनज़ीर भुट्टो पर बहुत तोहमतें लगीं कि उसने मुसलमान होकर एक मुसलमान को काफ़िरों के हवाले कर दिया है। परन्तु उसने इसकी ज़रा भी परवाह नहीं की। बल्कि इसके पश्चात वह आतंकवादियों के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। सबसे पहला काम उसने यह किया कि आई.एस.आई के मुखिया और आतंकवादियों के कट्टर समर्थक जावेद नासिर को पद से हटा दिया और उसके स्थान पर अपना ख़ास व्यक्ति बिठा दिया। इस क्षेत्र में वह और भी बड़े काम कर रही थी, पर इस दौरान उसकी सरकार भ्रष्टाचारों के चक्कर में फंस

गई और अपना कार्यकाल भी पूरा न कर सकी। अगले चुनाव में भुट्टो की पार्टी हार गई और भुट्टो स्थाई तौर पर देश छोड़कर इंग्लैंड चली गई।

ग्रेज्युएशन होने के बाद भी आफिया ने एम.आई.टी. में अपनी कम्प्यूटर की पार्ट टाइम नौकरी जारी रखी थी। आजकल उसको महसूस होने लगा था, मानो उसका हर वक़्त पीछा किया जाता हो। उसने इस विषय में सुहेल से बात की तो सुहेल ने बताया कि एफ.बी.आई. केयर ब्रदर्ज़ संगठन के पीछे पड़ा हुआ है, इसलिए बचकर रहा जाए। केयर ब्रदर्ज़, एम.एस.ए. और अन्य संगठन सहमे-से रहने लगे थे। हर किसी को लगता था कि एफ.बी.आई. उनके पीछे घूम रही है। फिर तभी 19 अप्रैल 1995 को आक्लोहामा सिटी की मूरा नामक फैडरिल बिल्डिंग में भयानक बम धमाका हो गया जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। सारा अमेरिका दहल उठा। एफ.बी.आई. ने ध्यान से देखा तो पता चला कि इस बम धमाके के सारे तौर-तरीके उस बम धमाके से मिलते-जुलते थे जो रम्जी युसफ ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर के पार्किंग लॉट में किया था। एफ.बी.आई. सभी मुस्लिम संगठनों के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। ख़ास तौर पर केयर ब्रदर्ज़ के पीछे। अगले दिन आफिया काम पर गई तो उसको सहकर्मी ने बताया कि कुछ देर पहले ही उसको एफ.बी.आई वाले खोजते हुए आए थे। आफिया तुरन्त वापस लौट आई और बाहर से ही चिकागो चली गई। उसकी बड़ी बहन फौज़िया कुछ महीने पहले ही पढ़ने के लिए चिकागो आई थी और वहाँ एक अपार्टमेंट में रहती थी। आफ़िया उसके पास जा ठहरी। वहीं उसको एक दिन सुहेल का फ़ोन आया। आवाज़ पहचानते हुए वह बोला, “आफिया, आक्लोहामा सिटी बम धमाके का दोषी पकड़ा जा चुका है।“

“अच्छा! कौन है वो?“

“वह टिम्थी मकबेथ नाम का कोई अमेरिकी है।“

“अच्छा! अमेरिका में भी ज़िहादी पैदा होने लग पड़े।“ आफिया हँसी।

“तू यह बात छोड़, पर उसके पकड़े जाने से हम लोगों को बहुत फायदा हुआ है।“

“वह कैसे?“

“क्योंकि अब तक अमेरिकी सरकार समझती थी कि यह धमाका किसी इस्लामिक जिहादी ने किया है। इस कारण हमारे सभी संगठनों के पीछे हाथ धोकर पड़ गई थी। पर अब सब कुछ बदल गया है। अपनी ओर से वे पीछे हट गए हैं। तू चाहे तो वापस आ सकती है। वैसे तेरी मर्ज़ी है, पर जो भी तेरा प्रोग्राम बने, मुझे बता देना।“

इसके बाद, सुहेल ने फ़ोन काट दिया और आफ़िया के सिर पर से भी बोझ उतर गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 8

(8)

अक्तूबर 1995 में अमजद अमेरिका पहुँचा। उसी नई-नवेली दुल्हन आफिया चिकागो एअरपोर्ट पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वहाँ से वह अमजद को लेकर फौज़िया के अपार्टमेंट में आ गई। फिर, वे होटल चले गए। लगभग दो हफ़्तों का वक़्त उन्होंने होटल में गुज़ारा। अगले करीब दो महीने फौज़िया के घर रहे। फिर वो बॉस्टन, मैसाचूसस चले आए। यहाँ आकर उन्होंने किसी बड़ी इमारत के निचले हिस्से का छोटा-सा अपार्टमेंट ले लिया और अपनी ज़िन्दगी शुरू कर दी। अमज़द को यह छोटा-सा अपार्टमेंट बिल्कुल भी नहीं भाया। वह एक बड़े परिवार और अच्छे खाते-पीते घर से आया था। पाकिस्तान में वे तीन भाई, माँ-बाप के साथ भरे-पूरे परिवार में रहते थे। यहाँ यह गूठ-सी जगह उसको अच्छी नहीं लगती थी। समय पाकर उन्होंने शहर से बाहर छोटे-से कस्बे मालडेन में बड़े हाई-वे 95 से थोड़ा आगे हटकर काफी बड़ा और खुला अपार्टमेंट ले लिया। यहाँ आकर अमजद बहुत खुश हुआ। उसकी ब्याहता ज़िन्दगी बहुत बढ़िया ढंग से शुरू हुई थी। वह आफिया को जी-जान से चाहने लगा था और आफिया भी अमज़द को गहरी मुहब्बत करने लगी थी। दोनों को लगता था कि वे एक-दूजे के लिए ही बने हैं। इन दिनों दोनों के मध्य प्यार-मुहब्बत की बातें ही खत्म होने का नाम न लेती थीं। अमज़द को लगता था कि यह भोली भाली-सी लड़की कभी गुस्सा तो होती ही नहीं होगी। पर फिर एक दिन बातें करते हुए आफिया ने अचानक कुछ ऐसा कहा कि अमज़द के मुँह में कड़वाहट घुल गई। वह बोली, “अमजद, मुझे पिछली गर्मियों में एफ.बी.आई. खोजती रही थी।”

“किस बात के सिलसिले में?“ वह हैरान होकर आफिया की ओर देखने लगा।

“यह तो मालूम नहीं, पर मैं एक बात बता देती हूँ कि अगर ऐसा कभी दुबारा हुआ तो मैं अमेरिका में नहीं रहूँगी।”

“लेकिन पता तो चले कि बात क्या है। कोई तो वजह होगी कि एफ.बी.आई. तेरे पीछे आई। तू जो कह रही है कि अगर वे दुबारा आए तो तू यहाँ नहीं रहेगी, तुझे थोड़ा-बहुत तो शक होगा ही कि वे किसी बात पर तुझे तलाश रहे थे।”

“मैंने कह दिया न कि मुझे नहीं मालूम।” इतना कहकर आफिया उठकर चल दी। अमजद भौंचक-सा उसकी ओर देखता रहा। पहली बार वह आफिया को गुस्से में देख रहा था। दो दिन वह इस तरह चुप चुप-सी रही। कुछ दिनों के बाद वह फिर घुलमिल गई। अमजद भी यह बात भूल गया। परंतु अगली बार उसने आफिया का और भी अधिक भयानक रूप देखा। असल में, इससे पहले अमजद दाढ़ी बढ़ाकर और ट्रिम करके रखता था। पर उसने पाकिस्तान में रहते हुए सुन रखा था कि अमेरिका में पाकिस्तानी चेहरे-मोहरे वाले व्यक्ति को अलग ही निगाह से देखा जाता है। वैसे वह रोजे भी रखता था और नमाज़ भी पढ़ लेता था, पर वह कट्टर नहीं था। इसलिए उसने अपनी सुविधा के लिए एक दिन शेव करवा ली। वह घर आया तो पहले तो आफिया उसको पहचान ही न सकी। फिर एकदम भड़ककर बोली, “तुम्हें शर्म नहीं आई दाढ़ी कटवाते हुए?“

“क्यों, इसमें शर्म वाली कौन सी बात है। मैंने क्या गुनाह कर दिया?“

“एक मुसलमान होकर तुम सफाचट करवाए घूमते हो और अभी पूछते हो कि क्या गुनाह कर दिया।”

“मैंने एक मज़हबी नेता की सलाह ली थी। उसका कहना है कि किसी अच्छे काम के लिए तुम्हें दाढ़ी कटवानी पड़े तो तुम कटवा सकते हो। जब मौका मिले तो फिर रख लो।”

“तुम ऐसा कौन-सा नेक काम करने लग पड़े कि तुम्हारे दाढ़ी रखने से वो काम नहीं हो सकता था।”

“आफिया, मैंने पढ़ाई शुरू कर ली है। हर रोज़ कालेज जाता हूँ। मैं नहीं चाहता कि वहाँ लोग मुझे दूसरी नज़रों से देखें।”

“अच्छा ! तुम्हें मुसलमान होने के कारण शर्म महसूस होती है। ”

“यह बात नहीं है। तुम मेरी बात को समझने की कोशिश करो। ”

बहस आगे ही आगे बढ़ती गई। आफ़िया कोई बात सुनने की बजाय आग-बबूला होती गई। आख़िर, वह इतने गुस्से में आ गई कि करीब होकर वह अमजद की छाती पर मुक्के मारती हुई चीख़ने-चिल्लाने लगी। पहले तो अमज़द को बहुत गुस्सा आया, पर जब उसने देखा कि आफ़िया अपने छोटे छोटे हाथों से उसको बच्चों की तरह पीट रही है तो मन ही मन उसको हँसी आ गई। उसने विरोध करना छोड़ दिया। आख़िर, आफिया मुक्के मारते मारते हाँफ गई। उसने पलभर अमजद की तरफ़ देखा और फिर उसकी छाती से लगकर उसको अपनी बांहों में भरकर ज़ोर-ज़ोर से रोने गी। अमजद ने उसको छाती से कस लिया। उनके बीच की सारी कड़वाहट चली गई। इसके साथ ही अमजद को उसके रूठने और इस तरह खुद मान जाने का निराला ढंग बहुत ही प्यारा लगा। ज़िन्दगी अपने ढंग से फिर चलने लगी। मगर आफिया ने अमजद से यह वायदा ले लिया कि वह शीघ्र ही फिर से दाढ़ी बढ़ा लेगा। कुछ ही सप्ताह बीते थे कि एक दिन वह नई स्कीम लेकर घर आई।

“अमजद, मैं और सुलेमान अहमर ने एक बहुत बढ़िया काम सोचा है। ”

“यह सुलेमान कौन है ?“

“यह बैनेवोलैंस इंटरनेशनल संगठन का डायरेक्टर है। तुम्हें पता है कि मैं चैरिटी के काम के सिलसिले में ऐसे लोगों से मिलती रहती हूँ। ”

“क्या है तुम्हारा यह नया ख़याल ?“ अमजद ने सोचा कि आफिया उसको फिर से दाढ़ी बढ़ाने या कोई ऐसा ही काम कहेगी।

“क्यों न हम दोनों बॉस्निया चलें ?“

“बॉस्निया ? वह क्यों ?“

“मैं वहाँ जाकर अनाथों के लिए स्कूल खोल लूँगी और तुम कोई अस्पताल चला लेना। कुछ देर बाद हम सचमुच के जिहाद में शामिल हो जाएँगे।”

उसकी बात सुनकर अमजद के पैरों तले से धरती खिसक गई। उसको कोई भी बात न सूझी। उसके तो यह सुनकर ही होश गुम हो गए कि उसकी घरवाली जिहाद के प्रति इतनी समर्पित है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, “आफिया, मैं यहाँ पढ़ने के लिए आया हूँ, न कि लड़ने। मेरी ज़िन्दगी का लक्ष्य पढ़ाई करके मेडिकल के क्षेत्र में प्रैक्टिस करने का है। मैं ऐसे कामों में हिस्सा लेने वाला इन्सान नहीं हूँ।”

“पर विवाह से पहले तुमने जिहाद में शामिल होने की हामी क्यों भरी थी फिर ?“

उसकी बात सुनकर अमजद को धक्का लगा। उसको वह वक़्त स्मरण हो आया जब मुफ्ती साहिब ने उससे पूछा था कि ज़रूरत पड़ने पर क्या वह जिहाद में हिस्सा लेगा और उसने इसे विवाह से पहले की एक मज़हबी रस्म समझकर हाँ कर दी थी। मगर आज उसको लगा कि मुफ्ती साहिब ने यह बात आफिया के कहने पर ही उससे पूछी होगी।

“तुम बोलते क्यों नहीं ? क्या सांप सूंघ गया तुम्हें ?“ आफिया गरम होने लगी तो अमजद चुपचाप घर से बाहर निकल गया। अगले दो दिन उनके बीच तनाव जारी रहा। लेकिन तीसरे दिन आफिया को पता चला कि वह गर्भवती है। इस बात ने उनके बीच सारी कड़वाहटें दूर कर दीं। आफिया बॉस्निया जाने वाली बात भूलभुला गई। अमजद ने आफिया के गर्भवती होने के बारे में अपने और उसके माता -पिता के घर में जब बताया तो सब तरफ खुशी फैल गई। इसी दौरान आफिया की माँ ने अमजद के साथ आफिया के भविष्य को लेकर बात शुरू की, “अमजद, आफिया कह रही है कि अब उसको आगे पढ़ना है ?“

“क्या ! इस हालत में ? अम्मी, अब तो उसको आराम करना चाहिए।”

“अमजद, तुम नहीं जानते इस लड़की में कितनी एनर्जी भरी हुई है। तुम इसकी जिद्द भी जानते हो। अगर इसने तय कर लिया है कि इसको अब पढ़ाई शुरू करनी है तो यह शुरू करके ही रहेगी।”

“मैं तो चाहता था कि बच्चे के जन्म तक इसको आराम करना चाहिए।”

“नहीं अमजद, यह जो करना चाहती है, करने दे। तुम देखना, यह इन हालात में भी क्लास में टॉप करेगी। मगर तू एक बात ज़रूर कर।”

“हाँ, बताओ।”

“मैं चाहती हूँ कि यह डॉक्टर बने। कम से कम इसके नाम के साथ डॉक्टर अवश्य लगे।”

“पर इसका प्रारंभिक क्षेत्र तो दूसरा है। फिर इस स्टेज पर आकर ...।”

“तू इसको कह कि यह न्यूरो-साइंस के क्षेत्र में आगे की पढ़ाई करे।”

“अम्मी, उस क्षेत्र में तो दिमागी मेहनत बहुत करनी पड़ेगी।”

“जब इसके सामने चैलेंज होता है तभी इसकी सारी शक्ति प्रयोग में आती है। बस तू इसको मेरी कही बात मनवा।”

इसके पश्चात् अमजद ने आफिया के साथ बात की। उसने पहली बात तो यही कही कि उसको आगे पढ़ने से न रोका जाए, मगर साथ ही यह भी बता दिया कि उसको अम्मी की चाहत का पता है। इसलिए उसने न्यूरोसाइंस के कागनेटिव क्षेत्र में पी.एच.डी. करने का मन बना लिया है। अमजद हैरान रह गया, जब उसे पता चला कि आफिया ने अपने तौर पर इसके लिए दाख़िला भी ले लिया है और पढ़ाई प्रारंभ होने वाली है। उसको अपनी पत्नी की कुशलता पर गर्व महसूस हुआ।

“आफिया, तुमने इसके लिए कौन-सा कालेज चुना है?“

“मैंने ब्रैंडीज़ यूनिवर्सिटी चुनी है। उन्होंने मेरा पढ़ाई का रिकार्ड देखते हुए ही मुझे दाख़िला दिया है। तुम्हें पता ही है कि ऐरे-गैरे को तो वे करीब भी नहीं फटकने देते।”

“पर आफिया, तुम वहाँ कैसे अडजस्ट करोगी? तुम्हें पता ही है कि वह यूनिवर्सिटी तो यहूदियों की है।”

“हाँ, मुझे पता है। पर मुझे भी वहीं काम करने में मज़ा आता है, जहाँ आगे विरोध हो। तुम देखना तो सही, मैं उनकी यूनिवर्सिटी की ऐसी की तैसी कैसे करती हूँ।”

“तेरी मर्ज़ी है। वैसे मुझे पता है कि तुम्हारे लिए दुनिया में कुछ भी कठिन नहीं है।”

बहस समाप्त हो गई और आफिया ने यूनिवर्सिटी जाना प्रारंभ कर दिया। ब्रैंडीज़ यद्यपि अपने तौर पर धर्म-निरपेक्ष रहने की कोशिश करती थी मगर उसके सारे ताने-बाने पर यहूदी संस्कृति भारी थी। विशेषतौर पर आफ़िया जैसी कट्टर मुसलमान के लिए तो वहाँ एडजस्ट करना बहुत ही कठिन था। परंतु आफिया अंदर से खुश थी। क्योंकि ऐसे विरोधाभास में ही उसको आनंद आता था। ख़ैर, जब उसने यूनिवर्सिटी जाना शुरू किया तो उस वक़्त वह सात माह की गर्भवती थी। पढ़ाई शुरू होते ही आफिया ने यहूदी सभ्याचार के विषय में पढ़ना शुरू कर दिया। इसके साथ ही उसने इज़राइल की इंटैलीजेंस एजेंसी, मुसाद के बारे में भी जानकारी एकत्र करना प्रारंभ कर दी। शायद वह अपने होने वाले दुश्मन के बारे में पूरी जानकारी ले लेना चाहती थी। वह पूरी तरह इस्लामी लिबास में लिपटी हुई पहले दिन कालेज पहुँची। उसका इस प्रकार का पहरावा या उसका मुसलमान होना उसके लिए कोई कठिनाई पैदा नहीं करता था, अपितु इसके लिए एक बात और थी। आफ़िया का विचार था कि यह यूनिवर्सिटी अपने आप को धर्म निरपेक्ष कहती है जबकि अंदर से यह बिल्कुल यहूदी रंग में रंगी हुई है। बस, इसी बात को आधार बनाकर वह यूनिवर्सिटी के साथ पंगा करने के लिए तैयार हो रही थी। इसका पहला रंग उसने अपने पहले लैक्चर में ही दिखा दिया। दूसरों की भाँति उसको भी किसी ख़ास क्षेत्र में रिसर्च करके पर्चा लिखने और पढ़ने के लिए कहा गया। उसके पर्चे का विषय था - ‘प्रेगनेंट वुमन एंड अल्कोहल।’ उसने अपने पर्चे में कहा कि गर्भवती स्त्री के शराब पीने से होने वाले बच्चे के दिमाग पर असर पड़ता है। यहाँ तक तो ठीक था, पर उसने आगे कहा कि इसीलिए तो अल्लाह ने कुरान में शराब पीने की मनाही की हुई है। उसके प्रोफ़ेसर इस बात से नाराज़ हो गए। वह उसको समझाते हुए बोले, “देख आफिया, हम साइंसटिस्ट हैं।

हम वही बात कह सकते हैं जिसे सिद्ध कर सकते हों। डॉक्टरों द्वारा शराब पीने वालियों और न पीने वाली गर्भवती स्त्रियों पर स्टडी की गई है। यहीं से यह बात साबित होकर सामने आई कि शराब पीने वालियों के बच्चे दिमागी तौर पर सही डवलैप नहीं होते। हम इसी स्टडी के आधार पर यह बात कह सकते हैं कि गर्भ के दौरान शराब बच्चे पर बुरा प्रभाव डालती है।”

“नहीं, यह इस तरह नहीं है...।” वह उनकी बातों का उत्तर देते हुए पलभर रुकी और फ़िर कहने लगी, “जो कुछ भी है, वह सब कुरान में दर्ज़ है। हम साइंसटिस्टों को चाहिए कि कुरान की पढ़ाई करके उसी हिसाब से आगे के कामों को दिशा दें।”

उसकी बात सुनकर प्रोफ़ेसर और अधिक अपसेट हो गए। उन्होंने उसको समझाने की काशिश की, पर वह टस से मस न हुई। आगे भी वह अपने परचों में कुरान में से लिए गए कुटेशन प्रयोग करती रही। इससे उसका डिपार्टमेंट उसके साथ और नाराज़ होता गया। इससे भी आगे बढ़ते हुए आफ़िया ने इस युनिवर्सिटी के बारे में लिखना शुरू कर दिया कि स्वयं को धार्मिक निरपेक्ष बताने वाली यह युनिवर्सिटी अति दर्ज़े की कट्टर धार्मिक है। आख़िर उसको उसके डिपोर्टमेंट की ओर से नोटिस मिल गया कि वह अपनी सीमा में रहे, नहीं तो उसके विरुद्ध एक्शन लिया जाएगा। वह डरी नहीं अपितु सीधी डीन के दफ़्तर में जा पहुँची। डीन ने उसको समझाने का यत्न किया, मगर वह चिढ़कर बोली, “या तो मुझे चुपचाप मेरी डॉक्टरीन करने दो, नहीं तो फिर मैं आपके ख़िलाफ़ ऐसा मोर्चा खोलूँगी कि आपकी रेपूटेशन की ऐसी-तैसी फेर दूँगी।”

उसकी बात सुनकर डीन ने पल भर सोचा और फ़िर बोला, “मिस आफिया, यदि तू वायदा करे कि चुपचाप अपनी पढ़ाई तक ही सीमित रहेगी तो मैं तेरे डिपार्टमेंट को हिदायत कर दूँगा कि तुझे नाजायज़ तंग न किया जाए।”

आपसी सहमति के बाद बात ठंडी तो पड़ गई, पर डीन ने उसके डिपार्टमेंट को अंदरखाते कह दिया कि जैसे तैसे करके वक़्तकटी करो और इस आफ़त से पीछा छुड़वाओ। तभी, आफिया की माँ इस्मत पाकिस्तान से उनके पास आ गई। वह आफ़िया के होने वाले बच्चे के कारण उसकी मदद के लिए आई थी। इस कारण आफ़िया का भी ध्यान बंट गया। इस्मत को बच्चे की देखरेख के लिए स्पेशल वीज़ा मिला था जिसके कारण आगे चलकर उसको ग्रीन कार्ड भी मिल गया। आफिया ने निश्चित समय से पहले ही अपनी पढ़ाई अच्छे नंबरों से पास कर ली। उसका सिर्फ़ लैबोटरी वाला काम शेष रहता था। इसके लिए वह रात की शिफ़्टों में आती या फिर रविवार के दिन आ जाती। यहाँ उसका जो इंचार्ज था, वह पुराने विचारों वाला बड़ी आयु का यहूदी था। उससे आफ़िया ने कहा कि बच्चे की आमद

के कारण उसके लिए दिन के समय आना कठिन है। उसने आफिया को अपना लैब वर्क रात की शिफ्ट में अथवा वीकएंड पर करने की अनुमति दे दी। आफिया ने उसका तहेदिल से धन्यवाद करते हुए कहा, “सर, आपकी बड़ी मेहरबानी जो आपने मेरी मदद की।”

“कोई बात नहीं आफ़िया, तू मेरी बेटी जैसी है। तेरी मदद करना मेरा फ़र्ज़ बनता है।”

“सर आप, अपनी सोच के कारण किसी बहुत ही धार्मिक मुसलमान जैसे लगते हैं।”

“अच्छा! मुसलमान धर्म में भी इस तरह ही सोचा जाता है?“

“हाँ सर, आप इस्लाम के बारे में कोई किताब पढ़कर तो देखो।”

“अच्छा कभी तुझे कोई अच्छी-सी किताब मिले तो मेरे लिए लेते आना। मैं ज़रूर पढ़ूँगा।”

इसके बाद आफिया ने उसके घर बड़े बड़े मुसलमान स्कॉलरों की किताबों के ढेर लगा दिए। पर उसको पढ़ने की फुर्सत कहाँ थी। उधर आफिया समझती थी कि यह सारी किताबें बहुत ही रोचकता से पढ़ रहा है। एक दिन उसने पूछ लिया, “सर, आपको कैसी लगीं ये किताबें?“

“अच्छी हैं, अच्छे विचार है इन लेखकों के।” उसने पढ़ी यद्यपि एक भी किताब नहीं थी, पर उसने आफिया का दिल रखने के लिए यह बात कह दी। इस बात से उत्साहित होकर आफिया उसके घर जाने लग पड़ी। टीचर को उसके बारे में ज्यादा पता नहीं था, पर उसको उसका भोलापन अच्छा लगता था। वह उसको अक्सर ही कह देता कि तू तो मेरी बेटी है। जब लैबवर्क खत्म हो गया तो आफिया एक दिन उसके घर गई। आम बातें करते हुए बोली, “सर, आप मुझे अपनी बेटी समझते हो, आपको मुसलमान धर्म भी अच्छा लगता है।”

“हाँ, मैं तुझे अपनी बेटी समझता हूँ।”

“फिर सर अपनी बेटी की एक बात मान लो।”

“हाँ, बोल बेटे।”

“आप इस्लाम मज़हब अपना लो।”

“क्या?...” यह बात उसका सुनकर रंग उड़ गया। उसका पलभर कोई बात ही न सूझी। वह भौंचक-सा आफिया की तरफ देखने लगा। वह मुस्करा रही आफिया के चेहरे की ओर देख रहा था। साथ ही वह इस मासूम मुस्कराहट के पीछे छिपे क्रूर चेहरे को पहचान चुका था।

“मिस आफिया अब तू जा सकती है। अपना लैबवर्क खत्म हो गया है। अपना अध्यापक और विद्यार्थी का नाता भी खत्म हो चुका है। मैं चाहूँगा कि तू मुझे भविष्य में कभी न मिले।” इतना कहते हुए वह उठा। आफिया दरवाज़ा खोलकर बाहर निकली तो टीचर ने भड़ाक-से दरवाज़ा बंद कर लिया।

उधर अफगानिस्तान में बहुत कुछ बदल रहा था। सोवियत यूनियन के वहाँ से निकल जाने के बाद भिन्न भिन्न दलों के वार लोर्ड मिलजुल कर सरकार चला रहे थे। परंतु फिर वहाँ एक नया ही संगठन पैदा हो गया। इस नए संगठन का नाम था - तालिबान। तालिबान अर्थात विद्यार्थी। अफगानिस्तान से आए रिफ्यूजियों के बच्चों के लिए, पाकिस्तान में जो मदरसे खोले गए थे, उनमें उन्हें मज़हबी तालीम देने के अलावा लड़ाई के लिए तैयार किया गया था। अफगानिस्तान के जिस जाने-माने मज़हबी रहनुमा की अगुवाई में यह काम हुआ था, उसका नाम था - मुल्ला उमर। मुल्ला उमर ने सोवियत यूनियन के साथ लड़ाई के समय बड़ी भूमिका अदा की थी। मुल्ला उमर के तालिबानों को पाकिस्तान के अलावा सउदी अरब सरकार का पूरा समर्थन हासिल था। ख़ैर, जब उसने अपने तालिबानों की फौज अफगानिस्तान के अंदर उतारी तो वहाँ वार लोर्डों में भगदड़ मच गई। तालिबान नौजवान बहुत ही जोशिले थे जो इन वार लोर्डों की फौजों को हर फ्रंट पर मात देते चले गए। आख़िर 1995 में आकर तालिबानों ने वार लोर्डों की कमर तोड़कर रख दी और अफगानिस्तान के उत्तर की ओर के थोड़े-से इलाके को छोड़कर सारे अफगानिस्तान पर अपना अधिकार जमा लिया। लोगों को लगा कि अब पुराने लीडरों की वहशी कारवाइयों से पीछा छूट जाएगा। पर यह उनका भ्रम साबित हुआ। तालिबानों ने आते ही ऐसे शरीअत कानून लागू किए कि लोगों का सांस लेना भी कठिन हो गया। इन नए कानूनों ने खासतौर पर औरत का तो गला ही दबा दिया। हर क्षेत्र में उनकी आज़ादी खत्म कर दी गई। औरतों के स्कूल कालेज बंद कर दिए गए। औरतों को नौकरी करने से

रोक दिया गया। औरत के अकेली घर से निकलने पर पाबंदी लगा दी गई। बग़ैर किसी नज़दीकी रिश्तेदार के वह घर से बाहर नहीं जा सकती थी। औरतों पर पाबंदियाँ लग गईं। हार-शिंगार पर पाबंदी, अच्छा पहनने पर पाबंदी, ऊँची एड़ी की सैंडिल पहनने पर पाबंदी, बाहर कहीं भी ऊँचे स्वर में हँसने पर पाबंदी। इसके अतिरिक्त गीत-संगीत के स्टोर वगैरह आग लगाकर राख कर दिए गए। ख़बरों के अलावा रेडियो पर हर प्रोग्राम को रोक दिया गया और सिनेमाघर बंद कर दिए गए। गाना-नाचना बंद, साहित्य-कविता आदि की किताबें बंद। तात्पर्य यह कि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जहाँ मज़हबी पाबंदी न लगी हो। इस तालिबान लीडरशिप को पाकिस्तान की पूरी सरपरस्ती हासिल थी। पाकिस्तान का मज़हबी ग्रुप, संगठन आदि इस सारी मूवमेंट के पीछे था। आफिया के परिवार का इसी संगठन के साथ संबंध था। सो, आफिया इस सबको बड़े रोमांच-से देख रही थी। जब तालिबानों ने मानवीय अधिकारों का क़त्ल करने में कोई कसर न छोड़ी तो यू.एन.ओ. ने अफगानिस्तान को सारी मदद बंद कर दी। इससे चिढ़कर कट्टर लीडरों ने अल रशीद नाम का संगठन शुरू कर लिया जिसका काम तालिबानों के लिए फंड आदि का प्रबंध करना था। इसने अपने अख़बार भी निकाले। आफिया इस सबके हक में थी। उसने इन अख़बारों के लिए लेख भी लिखे। इस दौरान अमेरिका ने अफग़ान सरकार को आगाह किया कि वह सउदी अरब के करोड़पति इंतहापसंद ओसामा बिन लादिन को पनाह देना बंद करे। मगर तालिबान सरकार ने इस बात की कोई परवाह नहीं की। आफिया इस बात के कारण भी तालिबानों के हक में खड़ी हुई। उसके लिए ओसामा बिन लादिन हीरो था।

ओसामा बिन लादिन पहली बार अमेरिका की नज़रों में 1993 में तब आया जब वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर के अंदर रम्ज़ी यूसफ द्वारा किए गए बम धमाके वाला केस शुरू हुआ। जांच के दरम्यान पता चला कि अपनी रूपोश ज़िन्दगी के दौरान रम्जी यूसफ, ओसामा बिन लादिन के गैस्ट हाउस में ठहरता रहा था। यहीं से ही ओसामा बिन लादिन के विषय में पूरी जानकारी एकत्र की गई तो पता चला कि वह सउदी अरब का एक अमीर और इंतहापसंद व्यक्ति है जो कि अफगानिस्तान की लड़ाई के समय अपनी निजी फौज से सोवियत यूनियन के खिलाफ लड़ता रहा है। बाद में उसको उसकी सरकार यानी सउदी अरब ने उसकी बगावती कार्रवाइयों के कारण देश से बाहर निकाल दिया। वह कुछ समय सूडान में रहा और मुल्ला उमर की तालिबान सरकार के अस्तित्व में आने के बाद उसने अफगानिस्तान में आकर स्थायी तौर पर डेरा जमा लिया।

आफिया को ओसामा बिल लादिन की जीवनशैली ने बहुत प्रभावित किया। जब वह नीचे ज़मीन पर बैठकर खा रहा होता या अपने साथयों के साथ जंगलों में भटक रहा होता तो आफिया की आँखें भर आतीं। वह सोचती कि यदि यह चाहे तो एक शहजादे की ज़िन्दगी व्यतीत कर सकता है। पर इसने सब कुछ धर्म के नाम अर्पित कर दिया है। आफिया के दिल में मुहम्मद साहिब के बाद यदि किसी की इज्ज़त थी तो वह ओसामा बिन लादिन की थी।

आफ़िया सिद्दीकी का ज़िहाद - 9

(9)

आफिया ने पढ़ाई और लैब का सारा काम समाप्त कर लिया था। अब वह पी.एच.डी. के लिए अपना थीसिस लिख रही थी। अमजद ने भी अपनी रेज़ीडैंसी खत्म कर ली थी। उसने सेंट विन्सेंट होस्पीटल में इंटर्नशिप शुरू कर ली थी। वे दोनों बॉस्टन से पैंतीस-चालीस मील दूर पड़ने वाले शहर वोरैस्टर में मूव हो गए। वोरैस्टर में केयरब्रदर्स के बहुत सारे सदस्य रहते थे। यहाँ की स्थानीय मस्जिद का इमाम मुहम्मद मासूद था। यह पुराना एम.एस.ए. का सदस्य रह चुका था। इसके अलावा मुहम्मद मासूद का भाई पाकिस्तानी आतंकवादी ग्रुप लश्करे तायबा का लीडर था। इन बातों के कारण आफिया को वोरैस्टर बहुत पसंद आया। यहाँ लश्करे तायबा संगठन का औरतों का एक विंग भी था, जिसकी उमा हमाद प्रधान थी। मगर आफिया को उमा हमाद अच्छी न लगी। उसने सोच लिया कि वह यहाँ अपना एक पृथक संगठन बनाएगी। उसकी माँ उसका नवजन्मा बच्चा जिसका नाम अहमद रखा था, को संभालती थी। आफिया इस वक़्त फुर्सत में होने के कारण आसपास के इस्लामिक संगठनों की जांच-पड़ताल कर रही थी। तभी आफिया का पिता बीमार हो गया। उसकी माँ ने काफी सोच-विचार किया और इस नतीजे पर पहुँची कि आफिया का बेटा कई महीनों का हो चुका है और वह उसकी खुद देखरेख कर सकती है। इसके अगले सप्ताह ही इस्मत पाकिस्तान चली गई। अगले दिनों में घर में काफी भूचाल आ गया। अब तक तो आफिया को माँ के होते किसी काम की चिन्ता ही नहीं थी, पर अब घर का ही नहीं बल्कि अहमद का भार भी उस पर आ पड़ा। उसने अहमद के लिए बाहर किसी बेबी सिटर के यहाँ प्रबंध कर लिया। उसको वहाँ छोड़ने भी अमजद ही जाता था और लेकर भी खुद आता था। आफिया को अपने कामों से ही फुर्सत नहीं थी। एक दिन अमजद घर लौटा तो अहमद रो रहा था जबकि आफिया किसी के साथ फ़ोन पर हँस हँसकर बातें कर रही थी।

“आफिया ?“ अमजद बैग एक तरफ रखता हुआ चिल्लाते हुए ऊँची आवाज़ में बोला।

“क्या है? क्यों धरती सिर पर उठा रहे हो? ख़ैर तो है।” आफिया दूसरी ओर फोन होल्ड करने को कहकर धीमे स्वर में बोली।

“क्यों? तुझे नहीं दिख रहा कि बच्चे का रो रोकर बुरा हाल हो रहा है और तुम हो कि बातों से ही फुर्सत नहीं है।”

“बच्चे को तो तुम भी चुप करवा सकते हो। यूँ कूदने की क्या ज़रूरत है।”

“क्यों, कूदूँ नहीं तो और क्या करूँ? सवेर के समय अहमद को बेबी सिटर में छोड़ने मैं जाता हूँ। शाम के वक़्त मैं ही उसको वापस लेकर आता हूँ। तू सारा दिन खाली रहकर क्या इतना भी नहीं कर सकती। इसकी छोड़, पर जब वो घर आ गया, उसके बाद तो उसको तू संभाल सकती है।”

“तुम्हें मैं खाली नज़र आती हूँ। तुम्हें पता है कि मैं और मेरा संगठन आजकल क्या कर रहा है?“

“तू ही बता दे।” अमजद खीझा हुआ बोला।

“हम बॉस्निया के ज़िहादी परिवारों के लिए फंड इकट्ठा कर रहे हैं।”

“अब तो बॉस्निया में शांति हो चुकी है। अब तो तू इस बात का पीछा छोड़ दे।”

“मिस्टर अमजद, जिहाद कभी ख़त्म नहीं होगा। यह तब तक चलता रहेगा जब तक सारे संसार में इस्माल का झंडा न फहराने लग पड़े। अब लड़ाई बॉस्निया में नहीं हो रही तो क्या हुआ। अगला फ्रंट चेचनिया और कास्वो में खुल चुका है।”

“तेरे इस जिहाद मेरा घर बर्बाद कर देगा, आफिया।”

“और जिनके घरघाट पहले ही उजड़ चुके हैं। काफ़िरों ने हमारे जिहादियों का छोड़ा ही क्या है? तुझे इस अपने छोटे से घर की चिंता है, पर बड़े संसार की और झांक कर देख।”

इस बीच अहमद रोने लग पड़ा तो उनकी बहस कुछ देर के लिए थम गई। अमजद बच्चे के करीब हुआ तो आफ़िया ने पहले ही उसको उठाकर छाती से लगा इससे अमजद का गुस्सा कुछ ठंडा पड़ गया। पर अहमद के चुप होते ही आफ़िया फिर बोली, “कुरान में लिखा है कि घर चलाना आदमी का काम है। तू नौकरी की वजह से मेरे पर यूँ रौब न झाड़ा कर।”

“कुरान में तो फिर यह भी लिखा है कि औरत घर संभाले, बच्चे संभालें अगर तू सच्ची मुसलमान है तो अपनी ज़िम्मेदारी समझ।”

“जिम्मेदारी तुझे समझने की ज़रूरत है। मेरी सहेलियों के खाविंद जिहाद में सेवा निभा रहे हैं और एक तू है कि अमेरिकी बनकर मौजें कर रहा है।”

“मैं मौजें नहीं करता, अपना काम करता हूँ।”

अहमद सोने लग पड़ा तो आफ़िया उसको थपथपाने लग पड़ी। उसका ध्यान झगड़े से हटकर सो रहे अहमद के चेहरे की ओर चला गया। वह बोलना बंद करके उसके मासूम चेहरे की ओर देखती रही। ज़ब वह सो गया तो आफिया ने एक ओर पड़ी फाइलें उठा लीं और उनमें काट-पीट करने लग पड़ी।

“मुहतरमा, यह कैसी लिखा-पढ़ी चल पड़ी।” अमजद का गुस्सा भी खत्म हो गया था। इस कारण उसकी आवाज़ में कड़वाहट न रही।

“अमजद, कुछ लोग मुझे अपनी टैक्स रिटर्न्स दे गए थे। मैं इनमें से गलतियाँ वगैरह निकाल कर ठीक कर रही हूँ।”

“इससे क्या होगा?“

“कम से कम उनके दो-दो, चार-चार डॉलर रिफंड हो ही जाएँगे।”

“ये दो-दो, चार-चार डॉलर गवर्नमेंट के भी तो काम ही आएँगे।”

“अमेरिकन सरकार का सारा पैसा एक ही काम आता है। वह है, मुसलमानों को मारने का काम।”

“आफिया तू हर बात को उल्टी तरफ सोचती है।”

“सिर्फ़ सोचती ही नहीं, मैं करती भी वैसा ही हूँ जिससे मुसलमानों का भला हो।”

“कभी अपने ख़ाविंद का भला भी सोच लिया कर।” अमजद ने उबासी ली।

“तुझे शरम नहीं आती मेरा खाविंद कहते हुए।” पता नहीं क्यों आफिया एकदम भड़क उठी।

“क्यों, अब क्या हो गया?“ अमजद ने हैरान होकर आफ़िया की ओर देखा।

“मैं ब्याही हुई हूँ, इसलिए किसी भी जलसे-समूह में अकेली नहीं जा सकती। तूने कभी इस बात की ओर ध्यान दिया है कि बेगम के साथ जाने में उसकी मदद करनी चाहिए।”

“आफिया, देख मेरे लिए पहले अपना परिवार है और फिर मेरी पढ़ाई। और फिर तुझे पता ही है कि अब मुझे कालेज वाले पहले से भी ज्यादा काम देते हैं। मुझे वीक एंड पर लेख लिखने होते हैं। तू अपनी बात तो फटाक से कह देती है, पर मेरी मज़बूरी नहीं समझती।”

“तुझे पता होना चाहिए कि तेरा पहला काम जिहाद है। पर मेरी ही किस्मत खराब है जो ऐसा खाविंद मिला है जिसको जिहाद के मायने भी नहीं पता।”

“तू जान तेरा जिहाद जाने। मुझे तेरी इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं।”

आफिया को एकदम गुस्सा चढ़ आया, मगर वह उठ न सकी। उसका शरीर इसकी इजाज़त नहीं दे रहा था। इस वक़्त वह दूसरी बार गर्भवती थी। वह कड़वाहट से भरी वही ढेरी हो गई और सो गई। उधर अमजद भी सो चुका था।

कुछ महीनों के बाद आफिया ने एक बच्ची को जन्म दिया। जिसका नाम उन्होंने मरियम बिंत मुहम्मद रखा। नवजन्मे बच्चे के कारण कुछ देर आफ़िया घर में टिक गई। उनके मध्य फिर से बढ़िया पारिवारिक माहौल बन गया। दोनों समीप वाले पॉर्क में घूमने जाते। कई बार ग्रॉसरी लेने जाते तो बच्चों को संग ले ज़ाते। अमजद को लगा कि शायद अब आफ़िया बच्चों के कारण ही घर में मन लगा ले। पर यह उसका भ्रम था। आफ़िया ने फोन पर सबसे सम्पर्क रखा हुआ था। बच्ची के जन्म के बाद वह पहली बार केयर ब्रदर्ज़ की मीटिंग में गई तो सभी को बहुत उत्साह मिला।

“आफिया, अब तू बच्चों की तरफ से फुर्सत पाकर एम.एस.ए. और बोनेवोलैंस का काम संभाल।” सुलेमान अहमर बोला। वह आज की इस ख़ास मीटिंग में चिकागो से खासतौर पर आया था।

“यह बात सही है। बस, मुझे कुछ दिन दो। मैं किसी ऐसी औरत का प्रबंध कर लूँ जो मेरे घर रहकर मेरे बच्चों की देखभाल कर सके। फिर मैं खाली ही खाली हूँ।”

“दोस्तो, कुछ महीनों के बाद नया साल आने वाला है जो कि हमारे लिए नई ज़िन्दगी लेकर आएगा। सब जानते हैं कि बीसवीं सदी ख़त्म होते ही काफ़िरों का खात्मा हो ज़ाएगा और हर तरफ इस्लाम का झंडा फ़हरेगा।”

“इंशा अल्ला! इंशा अल्ला!!” हर तरफ से आवाजें उठीं। इसके बाद कई अन्य वक्ताओं ने अपनी बात रखी। ज़रूरी मसलों पर विचार-विमर्श किया गया। आख़िर में सुहेल उठा और बोलने लगा, “हमें बड़ा गर्व है कि हमारा साथी और केयर ब्रदर्ज़ का जिहादी बसम कुंज बड़ा मार्के का काम कर रहा है। वह वापस लिबनान आ गया है। उसने वहाँ नए जिहादियों को ट्रेनिंग देने के लिए कैम्प भी शुरू कर लिया है। हालांकि यह काफी कठिन है क्योंकि वहाँ की सरकार हमको सहयोग नहीं देती, मगर उसने नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाया है।”

सभी ने तालियाँ बजाईं। आफिया, मार्लेन की ओर देखती मन ही मन सोचने लगी, ‘यह कितनी अच्छी किस्मत वाली है जिसका घरवाला जिहाद लड़ रहा है। नए जिहादी पैदा कर रहा है। और मेरा अपना पति क्या कर रहा है? वह तो ऐसी बैठकों में आना भी नहीं चाहता। बल्कि मुझे खुद को उससे छिपकर ऐसी मीटिंगों में आना पड़ता है। उसको तो सिर्फ़ पढ़ाई की पड़ी हुई है जब कि इस वक़्त सारा मुस्लिम समाज पूरी तनदेही से जिहाद का काम कर रहा है। मैं क्या करूँ। कैसे अमजद को जिहाद की ओर खींचूँ। यदि मैं ज़ोर डालूँ तो उसको मानना ही पड़ेगा। मेरे साथ उसे गहरी मुहब्बत जो है। मुहब्बत तो ख़ैर मुझे भी उससे बहुत है, पर मुझे उसकी यह एक ही बात बर्दाश्त नहीं होती कि उसको ज़िहाद से कोई सरोकार नहीं है।’

इसके पश्चात उसके नाम की घोषणा हुई तो वह ख़यालों में से निकली। उसने अपने भाषण के दौरान नए ज़िहादी भर्ती करने पर ज़ोर दिया। चैरिटी के लिए तो हमेशा ही वह ज़ोर देती थी। उसने सभी को बसम का उदाहरण देते हुए कहा कि आज हरेक को बसम बनने की ज़रूरत है।

मीटिंग समाप्त हुई। वह घर आ गई। उसने आकर देखा, बच्चे सोये हुए थे। उसने दूसरी ओर देखा। अमज़द भी गहरी नींद में था। वह उसके पास होकर उसके चेहरे को निहारती रही। अमजद के माथे पर चुम्बन देने के लिए वह ज़रा-सा झुकी, फिर रुक गई कि कहीं उसकी नींद खराब न हो जाए। फिर वह भी अपने बैड पर जा पड़ी और सोचते सोचते उसको काफी देर बाद नींद आई। अगली सवेर ज़ोर-ज़ोर से फोन बज रहा था। वह हड़बड़ाकर उठी।

उसने आसपास देखा। वहाँ कोई नहीं था। अमजद बच्चों को तैयार करके निकल चुका था। वह ऐसे ही किया करता था। जिस दिन आफिया देर रात में लौटती तो अगले दिन वह बच्चों को खुद ही बेबी सिटर के यहाँ छोड़ने जाता था। फ़ोन कट गया तो आफिया बिस्तरे में से निकली। तभी दुबारा घंटी बजी। उसने आगे बढ़कर फोन उठा लिया। उधर सुहेल बोल रहा था। फोन ऑन होते ही वह बोला, “आफिया, बहुत बुरी ख़बर है।”

“क्यों? क्या हुआ?“

“बसम कुंज शहीद हो गया।”

“क्या !“ आफिया के शरीर में कंपकंपी छिड़ गई। मगर फिर वह अपने आप को संभालने लगी। उधर सुहेल दुबारा बोलने लगा, “बसम ने लिबनान फौज के दो सिपाही किडनैप कर लिए थे। वह उनके माध्यम से अपनी कुछ मांगें मनवाना चाहता था। मगर इस बीच ही फौज ने उसके कैंप पर हमला कर दिया। इसी लड़ाई में वह शहीद हो गया।”

“अल्लाह उसकी रूह को सुकून दे। पर अब आगे का क्या प्रोग्राम है ?“

“आज शाम, उसको श्रद्धांजलि देने के लिए मीटिंग रखी गई है। तू वक़्त से पहुँच जाना।”

“ठीक है।” फोन कट गया। आफिया सोचने लगी कि कितना किस्मत वाला परिवार है। आप तो वह जिहादी शहीद बनकर बहिश्त में चला ही गया, साथ ही मार्लेन के लिए बहिश्त के दरवाज़े खोल गया।

उस शाम मीटिंग हुई। हर एक ने बसम की तारीफ़ करते हुए उसके काम को आगे बढ़ाने का प्रण लिया। इसी दौरान एक पच्चीसेक साल का युवक उठा और बोला, “अगर आप सबकी इजाज़त हो तो मैं उस महान शहीद बसम की विधवा से शादी करना चाहता हूँ।”

“क्यों नहीं, क्यों नहीं। यह तो बड़े फ़ख्र का काम है। जिहादी शहीद की विधवा से निकाह करवाने का मान किसी किसी को मिलता है।” कई आवाज़ें उठीं और उस युवक की बात मान ली गई। उसका नाम अनवर अल मीराबी था जो कि सउदी अरब का बाशिंदा था और आजकल हूस्टन, टैक्सास में रहता था। अगले दिन मस्जिद में दोनों का निकाह हो गया। अनवर अल मीराबी अपनी नई बेगम मार्लेन को उसके पाँच बच्चों सहित लेकर हूस्टन को चला गया। शाम के वक्त आफिया घर लौटी तो उदास थी। पर अमजद ने उसकी ओर ख़ास ध्यान न दिया। वह समझता था कि यह तो इसका नित्य का काम है। यह किसी न किसी चैरिटी समागम से आई होगी। इससे आगे अमजद का न ही कभी ध्यान गया था और न ही जा सकता था कि यह तो बहुत समर्पित जिहादी है।

उधर केयर ब्रदर्ज़ और आफ़िया वगैरह समझते थे कि उनकी कार्रवाइयों का किसी को पता नहीं है। मगर यह सच नहीं था। क्योंकि एफ.बी.आई. हरेक चैरिटी संगठन के पीछे पड़ी हुई थी। केयर ब्रदर्ज़ के तो विशेष तौर पर। केयर

दिनों में आफिया अमजद को किसी फंड रेजिंग समारोह में ले गई। वहाँ वह इतनी भावुक हो गई कि उसने अमजद की ओर से किसी समय भेंट की गई कीमती अंगूठी दान कर दी। इससे अमजद चिढ़ उठा। उसने आफ़िया को इशारे से समझाया कि जो हो गया , सो हो गया , अब वह यहाँ से उठकर घर चले। परंतु आफ़िया तो भावुकता के सागर में डूबी हुई थी। उसने अमज़द की कोई बात न सुनी। वह अपना भाषण देती रही। उधर बच्चे भी घर जाने की ज़िद्द कर रहे थे। अमजद अपसेट हो गया। वह आफिया को अकेला छोड़कर भी नहीं ज़ा सकता था। आख़िर कहीं देर रात समारोह खत्म हुआ। बच्चे कार में सोये पड़े थे। कार में बैठकर वे घर की ओर चले तो अमजद ने आफिया को अंगूठी दान करने के बारे में बुरा -भला कहा। इस बात पर आफिया ने उसका मजाक उड़ाया। आहिस्ता आहिस्ता चलती बातें आख़िर गरमी पकड़ गईं। जब वे घर पहुँचे तो वे बुरी तरह आपस में बहस रहे थे। घर पहुँचकर अमजद , बच्चे को बोतल से दूध पिलाने लगा। आफिया बहस करती हुए उसके साथ हाथापाई पर उतर आई और बोतल उसके मुँह पर अनायास बज गई। परिणामस्वरूप उसके मुँह पर ज़ख़्म हो गया और खून निकलने लगा। अमजद ने उसी वक़्त किसी दोस्त डॉक्टर को फोन किया और आफिया के ज़ख़्म की स्टिचिंग करवाकर लाया। उसके बाद दोनों के बीच तल्ख़ी लगभग ख़त्म हो गई। अगले रोज़ आफिया फौज़िया के पास बच्चे छोड़ने गई तो उसने मुँह पर स्टिचिंग के निशान देखकर पूछा। आफिया द्वारा सारी हकीकत बयान करने के बाद फौज़िया ने सबसे पहले आफिया के मुँह के चित्र लिए। फिर वह उसको भड़काने लगी। आख़िर , आफिया उसकी बातों में आ गई। शाम के समय जब अमज़द वहाँ पहुँचा तो फौज़िया ने दरवाज़ा नहीं खोला। अमजद को यह बात खटक गई कि फौज़िया ने बीच में पड़कर उसके आपसी मामले को तूल दिया है। अगले दिन वह फोन करता रहा , पर किसी ने फोन नहीं उठाया। उसका मन बहुत खराब हो गया। तीसरे दिन उसने फोन किया तो आफिया ने फ़ोन उठाकर हौले से 'हैलो कहा।

“आफिया, क्या बात हो गई ? न तू लौटकर घर आई है और न ही फोन उठा रही है ?“

“वो फ़ौज़िया आपा ...।” इतना कहकर वह चुप हो गई।

“आफिया, देख यह अपना आपसी मामला है। अच्छा है कि इसको हम आप ही निपटाएँ। ”

“अच्छा , आज शाम को आ जाना। उस वक़्त फौज़िया घर पर नहीं होगी। ”

उस शाम अमजद फौज़िया के घर गया तो आफ़िया ने दरवाज़ा खोल दिया। उसका चेहरा उतरा हुआ था। वैसे भी वह काफ़ी उदास दिख रही थी। अमजद ने उस दिन के लिए

माफ़ी मांगी। आफिया का रंग एकदम बदल गया। वह ऊँची आवाज़ में बोलने लगी। बोलते बोलते वह अमजद के करीब आ गई और उसकी छाती पर मुक्के मारने लगी। अमज़द चुपचाप खड़ा रहा। आहिस्ता आहिस्ता आफिया के हाथ रुकते चले गए। फिर उसने अमजद को अपनी बांहों में लपेट लिया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। अमजद ने उसको शांत किया। जब शाम के समय फौज़िया घर आई तो उसने देखा कि आफिया अपने बच्चों सहित वहाँ से जा चुकी थी। इसके बाद अमजद ने सोचा कि यहाँ से कहीं दूर मूव हुआ जाए ताकि भविष्य में फौज़िया हमारे घरेलू मसलों में दख़ल न दे सके। जून 2001 को उसने ग्रैंडा हाईटस नाम के इलाके में बड़ा-सा अपार्टमेंट ले लिया। यह काफी बड़ा था। इस कारण उसने इसका एक कमरा अपने साथ काम करते एक सउदी अरब के बाशिंदे को किराये पर दे दिया। ज़िन्दगी फिर से बढ़िया ढंग से गुज़रने लगी। इन्हीं दिनों में ओसमा बिन लादेन की वीडियो टेप चैनलों पर दिखाई जाने लगी। पहली बार वह बहुत ही खुलकर बोल रहा था। अमेरिका के वह बहुत ही खिलाफ़ था। सुनने वाले अपने अपने कयास लगाने लगे कि इसका मतलब क्या हुआ कि ओसमा बिन लादेन एकदम पब्लिक के सामने इतने ज़ोरदार ढंग से आया है। केयर ब्रदर्ज़ जैसे संगठन भी कुछ समझ न सके।

उधर मार्लेन अपने नए पति अनवर अल मीराबी के साथ हूस्टन से चलकर बॉस्टन पहुँची। यह सारा सफ़र उन्होंने कार से तय किया। बड़ी बात उस वक़्त मार्लेन गर्भवती थी और बच्चे की डिलीवरी में भी ज्यादा वक़्त नहीं था। एफ.बी.आई. इस जोड़े की हरकतों को नोट कर रही थी, मगर उनको यह समझ में नहीं आया कि ये इस प्रकार बॉस्टन में क्या करने आए हुए हैं। मार्लेन ने वहाँ के दोस्तों को बताया कि पहले बच्चे की डिलीवरी वह बॉस्टन में चाहते हैं, इसलिए वे यहाँ आए हैं। इस बीच वे ख़ास मित्रो से मिलते रहे। उन्हें बहुत अधिक मान-सम्मान दिया गया। कई दिनों के बाद 29 अगस्त 2001 को मार्लेन ने बेटे को जन्म दिया। इसके सप्ताह भर बाद वे दोनों ही कार से वापस चले गए। जाने से पहले मार्लेन आफिया को एक तरफ ले जाकर बोली, “वह बड़ा दिन आने वाला है जिसकी हमें मुद्दत से प्रतीक्षा है।”

“मार्लेन, ज़रा विस्तार से बता।” आफिया को खुशीभरा अचंभा हुआ।

“बस, इस वक़्त मैं इतना ही कह सकती हूँ कि बहुत कुछ बड़ा होने जा रहा है, जो सारी दुनिया को हिलाकर रख देगा।”

“इंशा अल्ला, ऐसा ही हो।” आफिया को यह तो पता था कि ओसामा बिन लादेन की हिदायत पर ज़िहादी ग्रुप कुछ ऐसा करने वाले हैं जो वाकई तहलका मचा देगा।

पर वह है कि इस बारे में उसको कुछ पता नहीं था। न ही उसने मार्लेन से इस विषय में विस्तार से पूछना आवश्यक समझा।

एफ.बी.आई. अपने अंदाज़ लगाती रही कि इस युगल का इस मुकाम पर यहाँ आने का क्या काम हो सकता है। टी.वी. चैनल अपने दिमाग लड़ाते रहे कि ओसामा बिन लादेन की कुछ ही दिन पहले आई ज़ोरदार टेप का क्या संदेश हुआ। उधर आफिया अपना दिमाग खपाती रही कि मार्लेन की बात का क्या अर्थ हुआ। सबके अपने अपने कयास थे। मगर 11 दिसंबर 2001 के दिन सबके भ्रम दूर हो गए। उस दिन आफिया सुबह के समय समाचार सुन रही थी। किसी ख़ास ख़बर ने उसकी आँखें टी.वी. स्क्रीन से चिपका दीं। ख़बर आ रही थी -

“आज सवेरे अमेरिकन एअरलाइन्ज़ की फ्लाइट नंबर 11 ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर को आठ बजकर छियालीस मिनट पर हिट किया। इसके ठीक सत्रह मिनट बाद युनाइटिड एअरलाइन्ज़ की फ्लाइट संख्या 175 सेंटर के साउथ टॉवर से टकरा गई। दोनों प्लेन बॉस्टन के लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट से उड़े थे। वहाँ से उड़ान भरने के बाद इन्हें हाईजैकरों ने अगवा कर लिया और फिर स्वयं ही इन हवाई जहाज़ों को उड़ाकर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ और साउथ टॉवरों में ला मारा। हज़ारों आदमी मर चुके हैं। हज़ारों ही ढह रहे टॉवरों के अंदर घिर हुए हैं। इसके अलावा एक प्लेन पेंटागन से जा टकराया है। एक अन्य अगवा किया गया प्लेन हाईजैकरों ने पैन्सलवेनिया के खेतों में गिरा दिया है।”

टी.वी. चैनल ने कुछ देर के लिए कैमरा ताश के पत्तों की भांति गिरती इमारतों की ओर कर दिया। वहाँ मौत का तांडव-नृत्य हो रहा था। हर तरफ ऊपर से नीचे गिरकर मरते लोग दिखाई दे रहे थे। सैकड़ों लोग बचने के उम्मीद में दफ़्तरों से बाहर निकलकर खिड़कियों से लटक गए थे। जिस किसी का भी हाथ फिसलता, वह आधे आसमान से नीचे आ गिरता। हर तरफ लोगों की दर्द भरी चीखें सुनाई दे रही थीं। आसपास गहरी गर्द छा गई थी। हर कोई रो रहा था। बल्कि सारा अमेरिका रो रहा था। वहाँ से बचकर निकल भागते लोगों के साथ सड़कें भरी पड़ी थीं। दोनों ट्विन टॉवर धू-धू करके जल रहे थे। समाचार वाचिका फिर से बोलने लगी, “सरकार को पूरा शक है कि आज की इस अति क्रूर घटना के लिए इंतहापसंद इस्लामी आतंकवादी जिम्मेदार हैं। बॉस्टन शहर में अलकायदा सदस्यों और उनके हमदर्दों के घरों में छापे लगने शुरू हो चुके थे। समाचार जारी रहेंगे।”

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 10

(10)

आज की घटना ने आफिया को इतना डरा दिया कि वह चीख चीखकर रोने लगी। अमजद उसकी हालत देखकर काम पर नहीं गया। आफिया निरंतर मित्रों को फोन कर रही थी और नई उपज रही स्थिति के विषय में जानकारी ले रही थी। मगर उसका भय वैसे ही कायम था। दोपहर ढलने से पहले ही समाचार आने लग पड़े कि आधे से अधिक आतंकवादी जिन्होंने आज के इन क्रूर कारनामों को अंजाम दिया है, उनकी पहचान हो चुकी है। पहचाने जाने वालों में सबसे पहला मुहम्मद अट्टा था जो कि बॉस्टन का रहने वाला था। पुलिस ने छापामारी तेज़ कर दी। जिस किसी के बारे में यह पता चलता कि इसके संग आतंकवादी का परिचय रहा है, उसे गिरफ्तार कर लिया जाता। यहाँ तक कि जिन होटलों में वे लोग रातों को रुके थे, उन सभी को छानबीन के लिए बंद कर दिया गया और कर्मचारियों को पकड़ लिया गया। यह सब सुनकर आफ़िया ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई बोलने लगी, “अमजद जितना ज़ल्दी हो सके हमें पाकिस्तान चले जाना चाहिए। यहाँ अपनी जान को खतरा है।“

“खतरेवाली इसमें क्या बात है। अपनी तरह यहाँ और बहुत से मुसलमान रहते हैं। वे क्या सभी अतिवादी हो गए। जिन्होंने ये अमानवीय कारनामा किया है, खतरा उनको या उनके हमदर्दों को है। तू यूँ ही न घबरा।“

“तुम मेरी बात समझने की कोशिश करो, बाद में पछताओगे। अभी भी मौका है कि यहाँ से शीघ्र चले जाएँ।“

“पर हम क्यों भाग जाएँ? हमने कौन-सा कोई गलत काम किया है?“

“मुझे पता चला है कि अमेरिकी, मुसलमानों के बच्चों को किडनेप करेंगे।“

“तुझसे यह बात किसने कही है?“

“बस, किसी से पता चला है, तभी तो कह रही हूँ कि मुसीबत आने से पहले निकल चलें। “

“आफिया, मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तू इतनी घबरा क्यों रही है। इस तरह हम बना-बनाया घर और अपनी पढ़ाई वगैरह बीच में ही छोड़कर कैसे जा सकते हैं। “

“इसका मतलब तुम मेरी बात नहीं मानोगे?“ आफिया गुस्से में कांपने लगी।

“तू मुझे अपनी बात अच्छी तरह से समझा। तू तो बग़ैर सिर-पैर की बातें किए जा रही है। “

“अच्छा, करो अपनी मर्ज़ी। जब भुगतोगे तो खुद पता लग जाएगा। “ आफिया पैर पटकती सीढ़ियाँ चढ़ गई। ऊपर जाकर उसने सुहेल, सुलेमान, मार्लेन और अन्य कई मित्रों को फोन किए। पर किसी का भी फोन न लगा। सबके फ़ोन बंद थे। आफिया का दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। फिर उसने किसी ऐसी सहेली को फोन किया जिसका ज़िहाद से कोई वास्ता नहीं था, पर वैसे वह इस तरह की बातों की काफ़ी जानकारी रखती थी। वह सउदी अरब की रहने वाली थी।

“आफिया, तू इतनी अपसेट क्या हो रही है। फिर क्या हो गया अगर हम मुसलमान हैं तो। लेकिन हम सबके साथ हैं। “ उसने आफिया को ढाढ़स बंधाया।

“तू मेरी असली बात नहीं समझ रही। अगर नुकसान कराकर यहाँ से निकले तो फिर क्या फायदा हुआ। “

उसकी बात सुनकर सहेली सोच में पड़ गई। उसको लगा कि आफिया हद से अधिक डरी हुई है। वह कुछ सोचते हुए बोली, “आफिया, तू यही चाहती है न कि यहाँ से जल्दी निकल जाए। “

“हाँ, बिलकुल। “

“पर, यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि अभी तो अमेरिका का सारा एअरस्पेश बंद पड़ा है। न कोई फ्लाइट अंदर आ रही है, न ही कोई यहाँ से बाहर जा रही है।“

“पर मुझे पता चला है कि एक ख़ास फ़्लाइट जा रही है।“

“आफिया, वो फ़्लाइट तो बहुत गुप्त तौर पर यहाँ से जा रही है। काग़ज़ों में उसका कहीं ज़िक्र नहीं है। तुझे पता नहीं कैसे उसके बारे में पता चला गया, वरना तो ...।“

“तू क्या कोशिश करके मुझे उस फ्लाइट पर सीट नहीं दिलवा सकती?“ सहेली की बात बीच में ही काटती हुई आफिया बोली।

“नहीं, यह मुमकिन नहीं है। उस फ्लाइट पर सिर्फ़ सउदी अरब के वही बाशिंदे जा रहे हैं जिनके सउदी अरब की अंबेसी से गहरे संबंध हैं। सउदी अंबैसडर नहीं चाहता कि कल को उसका कोई बाशिंदा इस प्लाट में फंस जाए। तुझे पता ही है कि हाईजैकरों में आधे से अधिक तो सउदी अरब के हैं। उस फ्लाइट के बारे में तू भूल ही जा।“

आफिया की अन्तिम उम्मीद भी खत्म हो गई। इसके बाद उसने अमजद से कोई बहस न की। उदास बैठी वह टी.वी. पर चल रही ख़बरें देखती रही। हर पंद्रह-बीस मिनट के बाद किसी न किसी के पकड़े जाने का समाचार आ रहा था। उसकी सहेली मार्लेन का पति अनवर अल मीराबी भी गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी गिरफ्तारी की ख़बर सुनते ही वह कांपने लगी। क्योंकि उसको याद था कि दो सप्ताह पहले ही वह वापस हूस्टन जाते समय उसके घर आए थे। अमजद, आफिया के अंदर चल रही बातों से अनभिज्ञ सिर्फ़ यही समझता हुआ कि वह बेचारी कुछ अधिक ही डर गई है, उसको शांत करने का प्रयत्न कर रहा था। आफिया अमजद के साथ कोई बात नहीं कर रही थी। वैसे वह अपने तौर पर वापस जाने की कोशिश कर रही थी। फिर, यह उसकी कोशिशों का नतीजा ही था कि 17 सितंबर को जिस दिन अमेरिकी एअरस्पेश पहली बार खुला तो आफिया अपने दोनों बच्चों सहित पाकिस्तान को जाने वाली फ्लाइट में बैठी हुई थी। उसको बड़ा अफ़सोस था कि अमजद उसके साथ जाने के लिए राज़ी नहीं हुआ था। साथ ही, उसका दिल भी तेज़ी से धड़क रहा था। मगर जब जहाज़ उड़ा तो उसका सारा डर जाता रहा और उसका मन दूसरी तरफ चला गया। उसकी सोच के मुताबिक़ आख़िरी लड़ाई शुरू हो चुकी थी। जिहादियों के अनुसार यह वो लड़ाई थी जिसमें सब काफ़िर मारे जाएंगे और पीछे सिर्फ़ इस्लाम का झंडा सारी दुनिया पर फहरेगा। उसको सारे रास्ते इसी ख़ुशी में पलभर भी नींद नहीं आई। वह सोचती जा रही थी कि इस्लामी

देशों में ख़ास तौर पर पाकिस्तान में तो इस वक़्त जिहाद बड़े स्तर पर लड़ा जा रहा होगा। लोग सब कुछ भूलकर जिहाद में शामिल हो चुके होंगे। पर जब वह कराची एअरपोर्ट पर उतरी तो वह बड़ी हैरान हुई। वहाँ तो लोग अपने अपने कामकाजों में व्यस्त थे। लगता था कि किसी को परवाह ही नहीं थी कि अमेरिका में क्या हुआ है। उसका दिल टूट गया। उसको अमजद परिवारवाले एअरपोर्ट पर लेने आए थे। घर जाते समय वह और अधिक हैरान हुई जब अमजद के घरवालों ने ट्विन टॉवरों के ढह जाने वाली बात एकआध बार ही छेड़ी और फिर अन्य बातें करने लगे। अमजद के घरवाले उसके आने पर अधिक खुश भी नहीं थे। अमज़द ने उन्हें फोन पर बता दिया था कि कैसे आफिया उसकी बात न मानते हुए सिर्फ़ हालातों से डरकर अमेरिका छोड़ रही है। इससे पहले घरवाले काफी देर से कहते आ रहे थे कि अमजद और आफ़िया एक बार आकर मिल जाएँ और बच्चों को मिलवा ज़ाएँ। परंतु उन्होंने कभी परिवार वालों की बात नहीं सुनी थी। आज आफिया एकदम ही आ पहुँची। मगर फिर भी खुश थे कि चलो , इस बहाने वे अपने पोता -पोती के साथ कुछ दिन बता सकेंगे।

खान परिवार एक शांत और अपने मज़हब को मानने वाला प्रतिष्ठित परिवार था। उन्होंने ज़िन्दगी में मेहनत करके यह मुकाम हासिल किया था कि उनके बच्चे विदेशों में पढ़ते थे और अच्छे ओहदों पर थे। अमजद का पिता आगा नईम खां इस वक़्त रिटायर्ड जीवन व्यतीत कर रहा था। उसकी पत्नी ज़ाहिरा खां की घर में अच्छी चलती थी। पूरा परिवार संयुक्त परिवार के तौर पर रता था। नईम खां यद्यपि राजनीतिक नहीं था , पर उसकी सूझ -बूझ गहरी थी। घर में अमेरिका में आतंकवादियों द्वारा किए गए हमलों की चर्चा हुई थी , पर एक हद तक। परिवार ने कट्टरवादियों के इस कदम की निंदा की थी कि निर्दोषों को मारने से क्या प्राप्त होगा। मगर जब आफिया घर पहुँची तो उसने नाइन एलेवन की घटना को बहुत ही अचम्भे से बयान करना शुरू कर दिया। वह उसकी निंदा नहीं कर रही थी , बल्कि वह इस काम को करने वालों के हक़ में बोल रही थी। वह लगातार इसी घटना के बारे में बोले जा रही थी। परिवार वालों को उसको इस प्रकार उत्साहित होना अच्छा न लगा। पर फिर ज़ाहिरा खां ने सभी को समझाया कि यह शायद उस घटना के कारण सदमे में है इसलिए इस तरह की बातें कर रही है। जब उसने बोलना बंद किया तो नईम खां थोड़ा ताव खाकर बोला , “आफिया बेटी , तुझे पता है कि अब क्या होगा ?“

“होना क्या है। बस , जिस दिन का एक मुद्दत से इंतज़ार था , वह आ चुका है। इन काफ़िरों का सफाया हो जाएगा और अल्लाह के बंदों की ज़ीत होगी। “

“नहीं , ऐसा कुछ नहीं होगा। जो कुछ होगा , वह मुझे दिखाई दे रहा है। “

“वो क्या ?“ आफिया ने माथे पर बल डालकर पूछा।

“अब अमेरिका , अफगानिस्तान पर चढ़ाई करेगा। क्योंकि यह नाइन एलेवन का कारा करवाने वाला वहाँ पनाह लिए बैठा है। वहाँ अमेरिका अकेला नहीं होगा। सारी दुनिया उसके साथ होगी। ख़ास तौर पर पाकिस्तान ने तो ऐलान भी कर दिया है कि वह अमेरिका का साथ देगा। “

“यही तो हम चाहते हैं। इसी तरह यह आख़िरी लड़ाई में तब्दील होगी। यही अल्लाह की मर्ज़ी है। “

“तुमने कभी यह भी सोचा है कि इस लड़ाई में नुकसान किसका होगा ?“

“किसका ?“

“अफगानिस्तान की गरीब जनता का , जो पिछले तीस सालों से लड़ाई में घुन की तरह पिस रही है। बड़े लोग अपना खेल खेल रहे हैं , पर गरीबों को कौन पूछता है। “

“जिहाद में आहुति तो देनी ही पड़ती है। “

आफिया जब नईम खां की बातों का जवाब देने से न हटी तो जाहिरा खां ने पति को चुप रहने का संकेत किया। कुछ देर के लिए वह चुप भी हो गया। परंतु जब आफिया फिर भी अपनी ही हांकती रही तो वह दुबारा बोला , “आफिया बेटी , मुझे यह बता कि तुम इस वक़्त अपने आपको अमेरिका की अपेक्षा यहाँ कैसे सुरक्षित समझते हो ? अमेरिका तुम्हारा देश है। तुम्हारा सब कुछ वहाँ है। और यहाँ तो अब अपने पड़ोस में लड़ाई शुरू होने वाली है। “

“आप इस बात को छोड़िए। जल्द ही अमजद को संदेशा भेजो कि वह जितनी जल्दी हो सकता है , यहाँ आ जाए। वहाँ उसकी ज़िन्दगी को ख़तरा है। “

“किससे ख़तरा है उसकी ज़िन्दगी को ?“

“अमेरिकी सरकार से। “

“वहाँ तो लाखों मुसलमान रह रहे हैं। क्या वे सारे इस नाइन एलेवन के कारनामे के लिए जिम्मेदारी हैं? नहीं, वे तो आम शहरी हैं। और मैं बता दूँ कि इन आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता। “

“आप किसी को आतंकवादी नहीं कह सकते। “ आफिया भड़क उठी। सभी हैरान रह गए। आख़िर, सभी ने नतीजा यह निकाला कि इस वक़्त शायद सदमे के कारण इसकी दिमागी हालत सही नहीं है। इसलिए इसको आराम करने दिया जाए।

उधर अमेरिका ने अफगानिस्तान के तालिबान लीडर, एक आँख वाले मुल्ला उमर को वार्निंग दे दी कि वह कोई एक रास्ता चुन ले। या तो वह ओसामा बिन लादेन को अमेरिका के हवाले कर दे, या फिर अमेरिकी हमले के लिए तैयार हो जाए। मुल्ला उमर ने किसी की कोई बात नहीं मानी। लड़ाई शुरू होने की शंकाएँ बढ़ गईं। आख़िर 7 अक्तूबर 2001 को अमेरिका ने पहला बम अफगानिस्तान पर फेंकते हुए युद्ध की घोषणा का बिगुल बजा दिया। इस बीच आफिया बहुत अधिक उत्साहित थी। कभी वह किसी कमरे में जाती थी और कभी किसी में। कभी वह कुछ बोलती थी और कभी कुछ। घरवाले उसकी हरकतों से बड़े अवाज़ार हो गए थे। दोपहर के समय सभी खाने की मेज़ पर बैठे तो अमजद के बड़े भाई ने बात प्रारंभ की, “आफिया ऐसी कौन -सी बात है जो तू यूँ अपसेट है। और किस बात पर तुझे यूँ खड़े पैर अमेरिका छोड़ने की बात सूझी?“

“क्योंकि वहाँ के अमेरिकन लोग मुसलमानों के बच्चे अगवा करने लग पड़े थे। “

“पर मैं तो यह बात तुझसे ही पहली बार सुन रहा हूँ। मेरे और भी कई दोस्त वहाँ हैं, उनमें से तो किसी ने भी बच्चे अगवा करने वाली बात नहीं बताई। “

“तो फिर क्या मैं झूठ बोल रही हूँ?“

“पर आफिया तेरे अपने भाई और बहन के बच्चे भी तो वहीं हैं। वे तो अपने बच्चों को लेकर नहीं आए। “

“आप सब मुझे बेवकूफ समझते हो? आपका मतलब इस सबके लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूँ?“ इतना कहते हुए वह उठी और ऊँची आवाज़ में बोलती हुई सीढ़ियाँ चढ़ गई। घरवाले उसका यह व्यवहार देखकर हैरान रह गए। साथ ही, उन्हें अन्य दूसरी बातें भी परेशान कर रही थीं। बड़ी बात थी कि आफिया घर के अंदर भी सिर से पांव तक बुरके में लिपटी हुई थी। उसकी सिर्फ़ आँखें दिखाई देती थीं। जबकि खान परिवार में बुरके को अधिक अहमियत नहीं दी जाती थी। वैसे भी वे सोचते थे कि इतने वर्ष अमेरिका जैसे मॉडर्न देश में रहकर भी वह वही दकियानूसी अंदाज़ में जी रही है। ख़ैर, जब वह बड़बड़ाती हुई सीढ़ियाँ चढ़ गई तो उसकी सास उसके पीछे पीछे गई। काफी देर बाद वह उसको किसी तरह मनाकर वापस खाने की मेज़ पर ले आई। वह आ तो गई, पर उसने बुरका एकतरफ नहीं किया। इसपर जाहिरा खां बोली, “आफिया बेटी, अब तो तू परदा हटा सकती है। यहाँ सब घर के ही लोग हैं।“

“यहाँ बैठे सब लोग शैतान है। किसी को इस्लाम की परवाह नहीं है।“ इतना कहते हुए वह फिर भाषण देने लग पड़ी। इस बीच वह अमजद के घरवालों का अपमान किए जा रही थी कि वे लोग धर्म के बारे मे कुछ नहीं जानते। आखिर, नईम खां खान की मेज़ पर से उठ खड़ा हुआ। वह अपनी बहू के साथ कोई वार्तालाप नहीं कर सकता था और चुप रहकर उसकी बेहूदगी भरी बातों को भी नहीं सुन सकता था। वह उठकर बाहर चला गया। उसी रात उसने अमजद को फोन करके कहा कि वह शीघ्र वापस आकर अपनी बेगम को संभाले, क्योंकि उसने सारे परिवार का जीना दूभर किया हुआ है। उधर आफिया ने भी अमजद को फोन करके कहा, “अमजद, अब तू आकर फ़ैसला कर ले कि तू शैतानों के साथ रहना चाहता है या फिर मेरे साथ?“

“आफिया, मेरे इम्तहान में इस वक़्त सिर्फ़ पाँच महीने शेष हैं। यदि मैं अब आ जाता हूँ तो अब तक का किया-कराया सब कुएँ में पड़ जाएगा। तू मुझे अपनी पढ़ाई पूरी कर लेने दे। तब तक तू किसी न किसी तरह एडजस्ट कर।“

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 11

(11)

अमज़द दुविधा में फंस गया। उसके घरवाले उसको आने को कह रहे थे। उधर आफिया भी दिन रात उसको आ जाने के लिए फोन किए जा रही थी। आख़िर ऊबकर उसने यूनिवर्सिटी से अनुमति ली और पाकिस्तान के लिए चल पड़ा। जब अमज़द घर पहुँचा तो बाकी परिवार उसके आने पर खुश तो हुआ, साथ ही उनको अफ़सोस भी था कि उसकी पढ़ाई का नुकसान हो गया। पर आफिया इतनी खुश थी कि धरती पर उसके पैर नहीं लग रहे थे। उस रात वह अमजद के करीब बैठते हुए बोली, “अमजद, तू बड़े सही मौके पर आया है। “

“क्या मतलब ?“

“मतलब यह कि इस वक़्त सुलेमान अहमर भी यहीं है। “

“कौन सुलेमान ?“ अमजद उसकी बात सुनकर हैरान हुआ।

“तू शायद उससे मिला तो होगा , पर उसको निजी तौर पर नहीं जानता होगा। “

“पर ऐसी क्या बात है कि मैंने अभी घर में पांव रखा ही है और तू कुछ ज्यादा ही उत्साहित हुई फिरती है ?“

“क्योंकि बात ही ऐसी है। जिस समय का मुझे बहुत दिनों से इंतज़ार था , वह वक़्त आ पहुँचा है। “

अमज़द बिना कुछ कहे उसकी तरफ़ देखता रहा तो वह आगे बोली , “सुलेमान अहमर , बोनेवोलैंस इंटरनेशनल संगठन , चिकागो का डायरेक्टर था। अब वह स्थायी तौर पर अमेरिका छोड़ आया है। यहाँ उसने अपनी एक अन्य चैरिटी शुरू कर ली है। जिसके ज़रिये वह फंड इकट्ठा करके अफगानिस्तान में लड़ रहे तालिबानों की मदद करता है। इसके अलावा , वह नए जिहादियों को भर्ती करके भी अफगानिस्तान भेज रहा है। “

“फिर मैं क्या करूँ?“ अमजद ने त्यौरी चढ़ाई।

“मैंने उसके साथ तेरे बारे में बात कर ली है।“

“मेरे बारे में? किस काम के सिलसिले में?“

“पहले पूरी बात सुन ले, फिर बोलना।“

अमजद कुछ न बोला। वह चुपचाप आफ़िया के मुँह की ओर देखता रहा तो आफ़िया फ़िर से बोलने लगी, “मैंने सारी बातचीत पक्की कर ली है। सुलेमान अहमर तुझे अपने ग्रुप में लेने के लिए राजी हो गया है। तू यहाँ से चलकर बार्डर पर पड़ने वाले बिलोचिस्तान के शहर क्वेटा जाएगा। वहाँ सुलेमान के आदमी तुझे बार्डर पार करवाकर अफगानिस्तान के शहर कलट पहुँचाएँगे। वहाँ के लोकल अस्पताल में सुलेमान ने तेरे लिए काम का इंतज़ाम कर रखा है।“

“आफिया, तेरा दिमाग तो ख़राब नहीं हो गया?“

“क्यों?“

“तू मुझे यह बता कि मैं क्यों क्वेटा जाऊँ। क्यों मैं बार्डर पार करके अफगानिस्तान जाऊँ। और रही बात अस्पताल में काम करने की, तुझसे मैंने कब कहा कि मुझे नौकरी की ज़रूरत है?“

“यह काम तू अपनी नौकरी की ज़रूरत पूरी करने के लिए नहीं कर रहा।“

“तो फिर यह सब क्या है?“

“वो अस्पताल जिहादियों के लिए खोला गया है। वहाँ जाकर तू जिहाद की खिदमत करेगा। जब तू वहाँ पहुँच जाएगा तो मैं भी तेरे पीछे पीछे ही आ जाऊँगी। उसके बाद हम पूरे ज़ोश-ओ-खरोश के साथ ज़िहाद के लिए काम करेंगे।“

“पर मैं इस राह का राही नहीं हूँ। तुझे मैंने पहले भी कई बार बताया है कि मैं एक अच्छा मुसलमान बनने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं ये डिगरियाँ लेने और पढ़ाई करने अमेरिका जैसे देश में इस कारण नहीं गया कि तालीम हासिल करने के बाद ज़िहाद जैसे कामों में शामिल होऊँ।“

“अमजद, यह काम तो तुझे करना पड़ेगा।“

“क्यों? मेरा मतलब है क्यों करना पड़ेगा यह काम मुझे?“

“क्योंकि तुझे मैं कह रही हूँ। तुझे अपनी बेगम की बात माननी पड़ेगी। यही मज़हब सिखाता है।“

“आफिया, मेरी बात सुन। हो सकता है कि मैं तेरी बहुत सारी बातों से सहमत होऊँ। पर सहमत या असहमत होना और बात है, किसी के खिलाफ लड़ना और। अब तू ही बता कि अमेरिका जिसने मुझे मेडिकल क्षेत्र में इतना आगे बढ़ने का अवसर दिया, जिसने मुझे इतना बड़ा ज्ञान का भंडार दिया है, तू चाहती है कि मैं उसी देश के खिलाफ सिर्फ़ इसी वजह से बंदूक उठा लूँ कि मेरी पत्नी को यह अच्छा लगता है। मेरा दिल तो यह कहता है कि जिस काबिल मुझे अमेरिका ने बनाया है, वो काबलियत मुझे लोगों में बाँटनी चाहिए। डॉक्टर होने के नाते मुझे ज़रूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।“

“तूने अमेरिका की तारीफ के पुल तो बांध दिए, पर यह भूल गया कि आज अमेरिका दुनिया में मुसलमानों पर कितने अत्याचार कर रहा है। इस्लाम की जितनी बर्बादी आज अमेरिका कर रहा है, उतनी आज तक किसी ने नहीं की होगी।“

“आफिया, यह राजनीतिक बातें हैं। तूझे पता है कि राजनीति में ऊपर-नीचे होता रहता है। जो शक्तिशाली होता है, वह ज़रा ज़्यादा कर जाता है और कमज़ोर कम। कसूर तो हरेक का ही होता है।“

“तू बड़ा फिलॉस्फर बनता है तो मुझे यह बात समझा कि फलस्तिनियों का क्या कसूर है जो इन्हें आज जगह-जगह मारा जा रहा है।“

“आफिया, तू मुझे पहले यह बता कि जो ट्विन टॉवरों में हज़ारों लोग मारे गए, उनका क्या कसूर था?“ गुस्से में आए अमजद ने भी प्रत्युत्तर में सवाल कर दिया।

“उनमें ज्यादा अमेरिकी ही मरे हैं जो कि यहूदियों के चमचे बनते हैं। हर जगह यहूदियों का समर्थन करते हैं। मैं कहती हूँ कि यहूदी वो कौम है जिस पर कभी भी एतबार नहीं करना चाहिए। जो भी इनका भला करता है, ये उसी की पीठ में छुरा मारते हैं। संसार को इनसे मुक्ति दिलाना बहुत ज़रूरी है।“

“आफिया, एक बात ध्यान से सुन ले कि मरने वाले का कोई धर्म नहीं होता। वह सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्सान होता है।“

“मैं इस तरह नहीं सोचती। मुझे फलस्तिनी मरते दिखते हैं तो लगता है कि यह मुसलमान मर रहे हैं। और किसी का मुझे पता नहीं।“

“तुझे फलस्तिनियों के मरने से अफ़सोस होता है। पर जब वे निर्दोषों को मारते हैं तो तू बोलती तक नहीं।“

“क्योंकि वो अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं। पहल तो यहूदियों ने की थी।“

“टैरेरिज़्म सबसे पहले तेरे इन फलस्तिनियों ने ही शुरू किया था।“

“कब? क्या कह रहा है तू?“

“यह कैसे हो सकता है कि तू इस बारे में जानती न हो। पर फिर भी जितना मुझे मालूम है, बता देता हूँ। यह 1972 में आयोजित समर ओलम्पिक खेलों के समय घटित हुआ था। दुनिया भर के खिलाड़ी ओलम्पिक गाँव में ठहरे हुए थे। तब

सिक्युरिटी भी इतनी नहीं हुआ करती थी क्योंकि तब आतंकवादी घटनाएँ होती ही नहीं थीं। पर फलस्तिनियों जिहादियों ने इसी बात का लाभ उठाया और अवसर पाकर ओलम्पिक गाँव में दाखिल हो गए। सवेरे करीब चार बजे का समय था और सब सोये हुए थे। फलस्तिनियों ने इज़राइल की टीम की निशानदेही पहले ही की हुई थी। वह सबसे पहले उनके कमरों में जा पहुँचे जहाँ इज़राइली टीम ठहरी हुई थी। एकदम हमला करके उन्होंने इज़राइलियों को बंदी बना लिया। इन बंदी बनाये लोगों में एथलीट , कोच और अन्य मेंबर शामिल थे। वहाँ उनको बंदी बनाकर किसी दूसरी बिल्डिंग में ले गए। ख़ैर , उसके बाद मारा मारी हुई। दोनों धड़ों के लोग मारे गए। पर मेरा यह बात बताने का मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि फलस्तिनियों ने कैसे आतंकवादी कार्रवाई शुरू की थी। “

“कोई बात तो होगी जो फ़लस्तिनियों को यह कदम उठाना पड़ा। “

“वे इज़राइल की ज़ेलों में से अपने सज़ायाफ्ता क़ैदियों को छुड़वाना चाहते थे। “

“अपने हक लेने के लिए सबकुछ करना जायज़ है। “

“इज़राइल भी तो अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए ही लड़ रहा है। इस तरह देखें तो हर एक का अपना नज़रिया है। “

“तू कब से इज़राइल भक्त बन गया ?“ आफिया ने गुस्से में त्यौरियाँ चढ़ाईं।

“मैं इस मारा मारी के हक में नहीं हूँ। कुछ न कुछ ले देकर यह मसला सुलझाया जा सकता है। यहूदियों का भी बहुत नुकसान हुआ है। दूसरी बड़ी जंग के समय हिटलर ने साठ लाख यहूदी मारे थे। “

“यह सब झूठ है। मेरे ख़याल में कोई हालोकास्ट हुआ ही नहीं। यहूदियों ने संसार की हमदर्दी प्राप्त करने के लिए ऐसी बातें अपने मन से घड़ी हैं। यह सब बकवास है। “

“ओह, कम ऑन आफिया। तू एक साइंटिस्ट होकर कैसी बातें कर रही है। मैं तो हैरान हूँ कि तू कुछ भी बोली जा रही है। “

“चल, तू मेरी सारी बातों को बकवास समझ, पर मेरी आख़िरी बात का जवाब दे। “ आफिया असली मुद्दे की ओर मुड़ आई।

“कौन-सी असली बात ?“

“तू मुझे यह बता कि क्वेटा के लिए कब कूच कर रहा है? क्या मैं आज रात तेरी सारी तैयारी कर दूँ। आगे वहाँ से अफगानिस्तान जाने में भी कई दिन लग जाएँगे। “

“तू तो ऐसे बात कर रही है जैसे मैं जाने के लिए तैयार ही बैठा होऊँ। आख़िरी बात, मैं कहीं नहीं जाऊँगा। “

“जाना तो तुझे पड़ेगा। तू मेरी बात नहीं टाल सकता। मैं तेरी घरवाली हूँ। तेरी दुख-सुख की साथिन। “

अमजद ने ध्यान से आफिया की ओर देखा। इस वक़्त आफिया की आँखों में मोह झलक रहा था। उसको भी आफिया पर प्यार आया। वह उसके करीब होता हुआ उसको अपनी बाहों की जकड़ में लेता हुआ बोला, “आफिया, अपने दो प्यारे-प्यारे बच्चे हैं। अपनी बढ़िया ज़िन्दगी है। मुझे यह भी पता है कि हम एक दूजे को बेइंतहा मुहब्बत करते हैं। एक-दूजे के बग़ैर एक पल नहीं रह सकते। मैं चाहता हूँ कि हम अल्लाह की दी हुई इस रहमतोंभरी ज़िन्दगी का आनन्द उठाएँ। तू प्लीज़ इस जिहाद वाली बात को भूल जा। “

“अमजद, तेरी सभी बातें सही हैं। तू मुझे दुनिया की हर शै से प्यारा है, पर जिहाद मेरे लिए अल्लाह का एक पाक काम है। उसके लिए मैं कुछ भी कुर्बान कर सकती हूँ। “

अमजद चुप हो गया। वह समझ गया कि यह इसके साथ बात करने का सही समय नहीं है। वह यह भी जानता था कि यह हद से ज़्यादा ज़िद्दी है। जो बात एक बार कह

दे ,उससे पीछे नहीं हटती। उस वक़्त उसने फिर सोचने का कहकर बात बदल ली। रात गुज़र गई। पर अमज़द को सारी रात एक पल भी चैन नहीं पड़ा। उसको कोई राह नहीं सूझ रहा था। वह आफिया को नहीं छोड़ सकता था और आफिया ज़िहाद को नहीं। आख़िर सुबह के समय उसको ख़याल आया कि इस्लाम यह भी कहता है कि मुश्किल के समय घर के बड़े-बुजुर्गों की मदद लेनी चाहिए। वह अपने बड़े भाई के पास चला गया और उसके साथ हिचकिचाते हुए बात की ,“भाई जान ,मैं तो मुसीबत में फंस गया हूँ। मेरी रहनुमाई करो।“

“क्यों अमजद ,क्या हुआ ?“

इस पर अमजद ने सारी बात बता दी कि कैसे आफ़िया उसको जिहाद में जाने के लिए मज़बूर कर रही है और उसके पास पत्नी की बात मान लेने के सिवा और कोई चारा भी नहीं है। उसकी बात सुनकर भाई के तो होश ही उड़ गए। उसने स्वयं कोई बात नहीं की ,बल्कि वह अमजद की बांह पकड़कर सीधा अपने अब्बा के पास ले गया और उसको सारी हुई-बीती सुना दी। नईम ख़ां भड़कता हुआ बोला ,“अमजद, यह क्या बकवास है ? क्या तुझे अच्छी तालीम यही सिखाती है कि तू ऐसे उल्टे काम करे ?“

“अब्बू आफिया कहती है कि ...।“

“कौन क्या कहता है ,तू यह बात छोड़। तुझे पहले यह सीखने की ज़रूरत है कि जिहाद क्या होता है। हर लड़ाई जिहाद नहीं होती। राजनीतिक लोग अपने निजी स्वार्थों के लिए इस पाक लफ़्ज का हर जगह इस्तेमाल करके नौजवानों को भड़का देते हैं और फिर वे वही करते हैं जो ये राजनीतिक लोग चाहते हैं। मैं तो जिया उल हक के वक़्त से ही कहता आ रहा हूँ कि यह एक राजनीतिक खेल है। पच्चीस साल से भी ऊपर का समय हो गया बेचारे गरीब अफगानिस्तान को इस गंदी राजनीति की बलि चढ़ते हुए। अफगानिस्तान आज मिट्टी का ढ़ेर बनकर रह गया है। और सुनो ,यह कहते हैं कि अफगानिस्तान ही एक ऐसा मुल्क है जहाँ सच्चा इस्लामी राज है। पर वहाँ की जनता से पूछकर देख कि उनके साथ क्या घटता है। वे पशुओं से भी खराब हालत में ज़िन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। इन उजड्ड लोगों ने उनका जीना दूभर करके रख दिया। अब की जो हालत है ,इसके लिए तालिबान जिम्मेदारी हैं। क्योंकि उन्होंने उस कातिल आदमी ओसामा बिन लादेन को अपने मुल्क में पनाह दी हुई है। इस सारे का ज़िम्मेदारी वही है और उसकी सज़ा भुगत रहा है ,अफगानिस्तान का गरीब आदमी।“

“पर अब्बू ,मुझे क्या हुक्म है ?“ अमजद डरता हुआ बोला।

"तू भूल जा इन बातों को और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे।"

अमज़द ऊपर गया और उसने आफिया को बता दिया कि उसके अब्बू ने ज़िहाद में जाने से मना कर दिया है।

"पर तू उसकी सलाह लेने गया ही क्यों?" आफिया ऊँचे स्वर में बोली तो नीचे खड़े नईम खां को उसकी आवाज़ सुनाई दे गई। उसके पूरे बदन में आग लग गई। पर वह फिर भी ज़ब्त में रहा। अमज़द सीढ़ियाँ उतरने लगा तो नईम खां ने ऊँची आवाज़ में कहा, "अमजद, अगर तू वहाँ गया तो फिर कभी इस घर में पैर न रखना।"

अपने ससुर की यह बात सुनकर आफिया हवा की तरह नीचे उतरी और आते ही अमज़द के गिरेबान में हाथ डालकर तेज़ आवाज़ में बोली, "अभी फैसला कर। या अपने माँ-बाप के साथ रह या मेरे साथ।"

अमज़द कुछ न बोला तो आफ़िया और अधिक गुस्से में आ गई। वह फिर चिल्लाई, "ठीक है अगर तूने मेरी बात नहीं माननी तो मुझे अभी तलाक दे। समझा तू? तलाक दे मुझे। अभी इसी वक़्त।"

फिर वह चीखती-चिल्लाती ऊपर कमरे में चली गई। घर में मुकम्मल चुप पसर गई। आख़िर नईम खां ने अपनी बेगम को कहा कि अगर ये मियाँ-बीबी और कुछ दिन अपने साथ रहे तो ज़रूर इनका तलाक हो जाएगा। हम ऐसा करें कि इन्हें अपने से दूर रहने दें। तब तक इनका आपसी फर्क भी मिट जाएगा और शायद हालात कुछ और ही करवट ले लें। इसके बाद उनके जाने का इंतज़ाम कर दिया गया। अमजद बच्चों और आफ़िया को लेकर इस्लामाबाद की ओर चल पड़ा। आफ़िया का कहना था कि अगर जाना ही है तो वह अपने मामा एच.एस. फारूकी के पास इस्लामाबाद जाना पसंद करेगी। शाम तक वे फारूकी के पास पहुँच गए। कुछ दिन आराम से गुज़रे कि एक दिन आफिया फिर नई स्कीम लेकर अमजद के सामने आ खड़ी हुई।

"अमजद, कश्मीर और अफगानिस्तान की पहाड़ियों के बीच पड़ने वाले बालकट शहर में आजकल जैशे मुहम्मद का कैम्प चल रहा है।"

“क्या !“ अमजद को बात समझ में नहीं आई। वह हैरान होता हुआ बोला, “यह जैशे मुहम्मद किस शै का नाम है?“

“तुझे पता ही होगा कि दिसंबर 1999 में कुछ जिहादी, इंडियन एअरलाइन्ज़ जहाज अगवा करके काबुल ले गए थे। उन्होंने यह सब अपने लीडर मौलाना मसूद अजहर को छुड़वाने के लिए किया था जो कि उस वक़्त इंडिया की ज़ेल में बंद था। वो आपरेशन सफ़ल रहा और मौलाना मसूद अजहर को छुड़वा लिया गया। बाद में मसूद ने यहाँ आकर एक नया संगठन बना लिया। उसी का नाम जैशे मुहम्मद है। जैशे मुहम्मद वालों के कैम्प इन पहाड़ियों में हैं। इनके परिवार भी इनके संग ही रहते हैं।“

“पर ये क्या करते हैं?“

“ये जिहाद लड़ते हैं।“ आफिया ने यह बात कही तो अमजद का मुँह कसैला हो गया। उसने सोचा कि जिस बात से डरता वह यहाँ आया है, वही बात फिर सामने आ खड़ी हुई है। वह कुछ देर सोचता रहा तो आफिया बोली, “हम वहाँ चलते हैं। तू वहाँ अस्पताल में काम करना और मैं जिहादियों के बच्चों के लिए स्कूल चला लूँगी।“

अमजद फिर भी कुछ न बोला। आख़िर उसको एकाएक एक विचार कौंधा और वह आफिया से बोला, “हम यूँ करते हैं कि पहले एबटाबाद चलते हैं। वहाँ से बालकट कुल मिलाकर पाचेसेक मील होगा। वहाँ जाकर देखेंगे कि आगे क्या करना है।“

आफिया खुशी-खुशी तैयार हो गई। उसको लगा कि अमजद सही राह पर आता जा रहा है। अगले दिन वह एबटाबाद चले गए। रात के समय वे किसी होटल में ठहरे। रात भर आफिया भविष्य की योजनाएँ बनाती रही। अगली सवेर अमजद ने अपनी योजना बताई, “आफिया, मैं यहाँ किसी अस्पताल में नौकरी कर लेता हूँ। बच्चों को हम यहाँ के मशहूर मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए दाख़िला दिला देते हैं। हर इतवार हम बालकट जाकर जैशे मुहम्मद का कैम्प अटैंड कर आया करेंगे। एक तो हम उनके बारे में कुछ सीख लेंगे, और साथ ही यहाँ तब तक हम सैट हो जाएँगे। फिर अगर तू चाहेगी तो हम पक्के तौर पर वहाँ चले जाएँगे।“

“जैसे तेरी मर्ज़ी।“ आफिया चुप-सी हो गई। मगर उसको लगा कि शायद इस तरह वह अमजद को मना ही ले।

अगली सुबह आफिया उठते ही बोली , “अमजद, सारी रात बम धमाके होते रहे हैं, तूने सुने ही होंगे ?“

“आफिया, यह शहर फौज का बहुत बड़ा केन्द्र है। ऐसा होना यहाँ कुदरती है। कोई ट्रेनिंग वगैरह चल रही होगी।“

“नहीं , यह वो धमाके नहीं। ये तो उन बमों के धमाके हैं जो अमेरिकी हवाई हवाज़ अफगानिस्तान में फेंक रहे हैं।“

“हो सकता है , तेरी बात सच हो।“

“मैं तो रात में एक पल भी नहीं सो सकी। सारी रात यही सोचती रही कि अमेरिकी हमारे मुसलमान भाइयों को किस तरह मार रहे हैं।“

“युद्ध में तो ऐसा होता ही है। दोनों ओर की फौजें एक दूजे को मारती ही हैं।“

“मुझे तो यह सोच सोच कर ही अफसोस हुआ जा रहा है कि यह कुछ ही मील दूर बार्डर के पार ज़िहाद चल रहा है और हम उसमें शामिल नहीं हो सकते।“

अमजद ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया तो वह पुनः बोलने लगी , “अमजद, मैं बच्चों को किसी मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजूँगी। और न ही तुझे यहाँ कोई नौकरी करने की ज़रूरत है।“

“फिर मैं यहाँ निठल्ला घूमता क्या करूँगा ?“

“हम आज ही जैशे मुहम्मद के कैम्प चलते हैं। वहाँ जो काम मिलेगा , कर लेंगे।“

“आफिया, मेरी बात ध्यान से सुन ले कि मैं यह काम नहीं करूँगा। “ अमजद ने दो टूक जवाब दे दिया।

“क्यों नहीं करना ? अब तो हम जिहादियों के बिल्कुल करीब बैठे हैं। बस , दो घंटों का रस्ता है। चल उठ , चलें। मैं बच्चों को तैयार करती हूँ। “ आफिया शांत होकर बोली।

“आफिया, तुझे एक बार कही बात समझ में नहीं आती ? मैं तुझे आख़िरी बार बता रहा हूँ कि मैं किसी जिहाद में हिस्सा नहीं लूँगा। “ अमजद भड़क उठा।

इसके पश्चात दोनों के बीच बहस शुरू हो गई। मगर आज आफ़िया अमजद को मारने के लिए नहीं बढ़ी। वह पता नहीं किस दुनिया में गुम थी। वह अंदर जाकर बैड पर लेट गई। अमजद बैठा सोचता रहा कि वह क्या करे। आख़िर उसके मन ने कहा कि वह कहीं भी चला जाए और कुछ भी कर ले , पर आफिया तब तक खुश नहीं होगी जब तक वह जिहाद में शामिल नहीं हो जाता। उसने एकदम वापस लौटने का फैसला कर लिया। उसने आफिया को उठाया। वह जली -भुनी उसके साथ कार में बैठ गई और वे वापस चल पड़े। घर आकर जब अमजद ने सभी को आफ़िया की जैशे मुहम्मद वाली बात बताई तो उसका पिता बहुत ही चिंतित होते हुए बोला , “कहीं यह न हो कि हम देखते ही रह जाएँ और पता तब चले जब यह आतंकवादियों के किसी गिरोह से जा मिलें। “

“अमजद के अब्बू , फिर इसका क्या इलाज है ?“ जाहिरा खां उदास लहजे में बोली।

“तुम अमजद को मेरे सामने बुलाओ। “

अमजद को बुलाया गया। वह यहाँ अकेला ही आया था। एबटाबाद से लौटते हुए आफिया बच्चों को लेकर मायके चली गई थी। अमजद आया तो नईम खां कठोर लहजे में बोला , “अमजद, तू तुरंत फ्लाइट लेकर अमेरिका रवाना हो जा। “

“और अब्बू , आफिया ?“

“फिलहाल तू सब कुछ भूल जा और वहाँ जाकर अपनी पढ़ाई पूरी कर। बाद में देखते हैं कि क्या होता है।“

अमजद ने अगले दिन की ही टिकट ले ली। इसके बाद उसने आफिया को फोन करके इतना ही बताया कि यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के कारण वह वापस जा रहा है और कल शाम की उसकी फ्लाइट है। अगले दिन आफिया बच्चों सहित उसको एअरपोर्ट पर विदा करने आई। दोनों की बीच कोई ख़ास बात नहीं हुई। आफिया हद से ज्यादा उदास थी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 12

(12)

अमजद अमेरिका आ तो गया ,पर उसका आफिया और बच्चों के बग़ैर ज़रा भी दिल नहीं लगता था। दिन के समय तो काम पर होने के कारण जैसे तैसे समय बीत जाता था ,परंतु रात के समय उसको घर काटने को दौड़ता था। कभी उसको बच्चों की किलकारियाँ सुनाई देने लगतीं और कभी आफिया इधर-उधर चलती-फिरती दिखाई देती। एक दिन रात के समय फोन आया। फोन उसकी अम्मी का था। अमजद के फोन उठाते ही जाहिरा खां बोली ,“बेटे ,मैं जानती हूँ कि तू इस वक़्त किन हालातों में से गुज़र रहा होगा। पर इस सब की मैं ही ज़िम्मेदारी हूँ।“

“अम्मी ,ऐसी बात नहीं है। और फिर तुम क्यों अपने आप को दोष दे रही हो?“

“क्योंकि आफ़िया मेरी ही पसंद है। मैंने ही इसे तेरे लिए चुना था। पता नहीं क्या बात हो गई। यह तो बहुत ही ज़हीन लड़की थी। मेरी तो समझ में नहीं आता कि इसको हो क्या गया है।“

“अम्मी ,तू यूँ ही फ़िक्र न कर।“

इतना कहकर अमजद सोचने लगा कि उसकी माँ ने तो आफिया को कुछ देर या कुछ दिन के लिए देखा होगा, मगर वह तो कितने ही सालों से उसके साथ रहता आ रहा है। और क्या वह खुद उसको अच्छी तरह जानता है। उधर अमजद को फ़ोन पर चुप-सा हुआ देखकर ज़ाहिरा खां बोली, “अमजद बेटे, तू मेरी बात सुन रहा है न?“

“हाँ-हाँ, अम्मी तू बात कर। मेरा ध्यान तेरी बातों में ही है।“

जाहिरा खां दुबारा बोलने लगी, पर अमजद का ध्यान फिर आफ़िया की ओर चला गया। उसके मन में ख़याल आया, ‘आफिया नाइन एलेवन के बाद एकदम इतना डर क्यों गई थी। वह क्यों खड़े पांव भाग जाने के लिए उतावली पड़ गई थी। फिर वहाँ जाकर वह कुछ दूसरी ही तरह की स्कीमें बनाने लगी। सीधे ही जिहादियों के संग जा मिलने की बातें करने लग पड़ी। और वह बता रही थी कि हमारे विवाह से पहले भी एफ.बी.आई. वाले उसको तलाश रहे थे। यह तो ख़ैर हो सकता है कि उसके चैरिटी के काम के संबंध में वे उसके साथ कोई बातचीत करने आए होंगे।’ उसकी मन में चलती बात बीच में ही रह गई जब उधर से माँ की ऊँची आवाज़ उसके कानों में पड़ी, “बेटे तू ऐसा कर कि एक बार आफिया को फोन करके कह दे कि वह तेरे पास आ जाए। औरत को कई बार मानसिक कारणों से बहुत सारे हालातों से गुज़रना पड़ता है। अब वह ठीक हो चुकी होगी। तू मेरे बेटे, उसको अपने पास बुला ले। अल्लाह सब ठीक कर देगा।“ माँ ने नसीहतें देकर फोन काट दिया। पर अमज़द का मन फिर से पहले चल रही सोचों की ओर चला गया। उसको एक नया ही ख़याल आया और वह सोचने लगा, ‘कहीं आफिया यह सब ड्रामा तो नहीं कर रही। हो सकता है कि वह मुझसे अलग होना चाहती हो और सिर्फ़ बहाने घड़ रही हो ताकि मैं उसकी बात से इन्कार कर दूँ और उसको अलग हो जाने का बहाना मिल जाए। हाँ, यही बात है। लगता है कि वह मेरे साथ खुश नहीं है। वैसे उसके बर्ताव से तो लगता है कि वह मुझे बहुत प्यार करती है, मगर हो सकता है कि यह सब दिखावा ही हो।’

ख़ैर, कुछ भी था उसने अपनी माँ की बात मानते हुए आफिया को फोन करने का मन बना लिया। उधर आफ़िया का पिता देख रहा था कि अमज़द के जाने के बाद से आफिया का चेहरा मुरझाये फूल जैसा हो गया था। उसने ढंग से खाना-पीना छोड़ दिया था। सारा दिन उदास-सी बैड पर पड़ी रहती थी। सुलेह सद्दीकी सब समझता था। उसने आफ़िया को पास बुलाया और उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला, “बेटी, मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा, बस इतना ही कि औरत का पहला फ़र्ज़ अपना परिवार बचाना होता है। तुम्हारे बीच सिर्फ़ तनाव है, और कुछ नहीं। मैं तुझे सलाह दूँगा कि तू अमज़द के पास चली जा।“

“पर अब्बू, उसने तो जाकर एक बार भी फोन नहीं किया?“

“बेटी, कई बार इन्सान काम में उलझ जाता है और...।” वह बात कर ही रहा था कि फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाते हुए हैलो कही तो उसके चेहरे पर रौनक आ गई। वह फ़ोन को आफिया की ओर बढ़ाते हुए बोला, “ले बात कर, अमजद का फोन है।”

आफिया चहक उठी और दूसरे कमरे में जाकर बात करने लगी। आधे घंटे बाद फ़ोन बंद करके वह बाहर निकली तो उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था। उसने उसी समय टिकटें बुक करने के लिए कह दिया और तीसरे दिन बच्चों को लेकर अमेरिका के बॉस्टन लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर जा उतरी। अमजद उसको लेने आया खड़ा था। वह घर पहुँच गए। घर आकर आफिया का चेहरा एकदम बदल गया और वह गुस्से में काँपने लगी।

“तूने मुझे इतने दिन फोन भी नहीं किया। तू अपने आपे को समझता क्या है?” वह ऊँचे स्वर में बोलती हुए अमजद के गिरेबान को चिपट गई। इधर-उधर खींचती वह उसकी छाती में मुक्के मारने लगी। अमजद ने बिल्कुल विरोध न किया। आख़िर, आफिया थक गई और वह मुक्के मारना छोड़ अमजद की छाती से लिपट गई। अमजद ने उसको अपनी बांहों में जकड़ लिया। आफिया इतना रोई कि अमजद की कमीज़ भीग गई। उसकी आँखों में भी आँसू आ गए। इसके साथ ही उसके मन के अंदर का वह ख़याल कि शायद आफिया बहाने से उससे तलाक लेना चाहती है, कपूर की भाँति उड़ गया।

उधर, अफगानिस्तान में अमेरिका का आतंकवाद के विरुद्ध लड़ा जा रहा युद्ध लम्बा खिंचता जा रहा था। तालिबान सरकार तो पाँच-छह हफ़्तों में ही ढह-ढेरी हो गई थी। पर ओसामा बिन लादेन और उसका समस्त अलकायदा संगठन तोरा बोरा पहाड़ियों के पीछे से होकर पाकिस्तान की ओर निकल चुका था। वहाँ जाकर उन्होंने कराची में अड्डे जमाने प्रारंभ कर दिए। अमेरिका समझ गया था कि अफगानिस्तान में कच्चे घरों अथवा सूखे पहाड़ों पर बम फेंकने बेकार हैं। जिन्हें पकड़ने के लिए यह सबकुछ किया गया था, वे तो सब बचकर निकल गए। इस कारण अमेरिका युद्ध का मुहाज़ अफगानिस्तान से इराक की ओर मोड़ने के लिए तैयार होने लग पड़ा। तोरा बोरा पहाड़ियों में से भागे अलकायदा के सदस्यों को संभालने वाले पाकिस्तान में बहुत बैठे थे। इनमें से सबसे अधिक सक्रिय बलोची परिवार था। रम्जी यूसफ़ जो कि 1993 के नॉर्थ टॉवर वाले बम धमाके का आरोपी था, इसी परिवार से था। इस परिवार के अग्रज का नाम था - खालिद शेख मुहम्मद। जिसे सभी उसको निक नेम अर्थात के.एस.एम. से बुलाते थे। जो लोग अलकायदा सदस्यों को संभालने में लगे हुए थे, उनमें स्त्रियों का एक ग्रुप भी था। आफिया की माँ इस्मत भी इसी ग्रुप में काम कर रही थी। इतना ही नहीं, अल बलोची परिवार के कई मेंबर उसके घर मेहमान बनकर ठहर भी चुके थे। जब अफगानिस्तान में से भाग निकले अलकायदा सदस्यों को भलीभाँति संभाल लिया गया तो के.एस.एम. अपनी अगली

योजना पर काम करने लगा। वह चाहता था कि जब तक अमेरिका नाइन एलेवन वाली चोट से उभरे, तब तक इससे भी बड़ा झटका अमेरिका को एक और दिया जाए। इस दूसरे हमले के लिए के.एस.एम. ने ऐसे लोगों की खोज शुरू कर दी जो कि पहले ही अमेरिका में रह रहे थे। इसके लिए उसने अमेरिका में अपने सम्पर्कों के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों की भर्ती प्रारंभ कर दी। इनमें नए रंगरूटों में होज़े पदीला नाम का एक व्यक्ति पहले अमेरिकन था। वह फ्लोरिडा का रहने वाला था और किसी बड़े गैंग का सदस्य रहा था। उसको समझा-बुझाकर मुसलमान बनाया गया और फिर अलकायदा में लाया गया। प्रशिक्षण के लिए उसको पाकिस्तान ले जाया गया। इस प्रकार आगे से आगे के.एस.एम. को और लोग मिलते चले गए जो कि उसके काम में सहायक हो सकते थे। होज़े पदीला को इस तरफ लाने वाला एडम हुसैन था जो कि बोनेवोलैंस इंटरनेशनल में काम करता था। एडम हुसैन आगे सुलेमान अहमर को जानता था। सुलेमान की आफिया से जान-पहचान थी। यही कारण था कि आफिया बोनेवोलैंस के एक अन्य सक्रिय सदस्य अदनान शुक्रीजुमा के सम्पर्क में आई थी। आफिया के अमेरिका से लौट आने से सभी में फिर से तालमेल होने लगा। ज़ाली ई मेल के ज़रिये अथवा कोई अन्य गुप्त तरीके से ये लोग आपस में सम्पर्क बनाये रखते थे।

जब आफिया वापस आई तो वह कई दिन बहुत बढ़िया मिज़ाज में रही। वह अमजद के साथ बड़ी मुहब्बत से पेश आती थी। अमजद को लगा कि उसके अंदर परिवर्तन हो रहा है। वह खुश था। इसी खुशी के कारण वह अगले इतवार बच्चों को लेकर एक मंहगे होटल में रात ठहरने के लिए चला गया। वहाँ पहुँचते ही आफिया भड़क उठी, “अमजद, तुम्हें शर्म आनी चाहिए। अफगानिस्तान जैसे मुल्कों में हमारे मुसलमान भाई गरीबी से मर रहे हैं और तुम्हें अय्याशी की पड़ी है।“

“आफिया, अय्याशी वाली इसमें क्या बात है। मेरी कमाई के पैसे हैं। मैं किसी गलत जगह पर नहीं खर्च कर रहा। मैं अपने परिवार की खुशी के लिए खर्च कर रहा हूँ। यह मेरा हक भी है कि हलाल की कमाई से अपने बच्चों को ज़रा बाहर घुमा फिरा दूँ।“

“तुझे कभी समझ नहीं आ सकती। मैं यहाँ नहीं रहूँगी। चल, घर वापस चलें।“

आफिया वहाँ न रुकी और अमजद को साथ लेकर घर लौटकर ही उसने साँस लिया। अमजद परेशान हो गया। उसने सोचा था कि पुरानी कड़वाहटें भूलकर नई ज़िन्दगी शुरू करेगा, पर आफिया तो वहीं अटकी हुई थी। फिर कुछ दिनों बाद अमजद ने उससे कहा कि बच्चों को अब स्कूल भेजने का समय है। अब तो इन्हें प्री-स्कूल जैसी क्लासों में डाल दें तभी कहीं ये दूसरे स्कूलों में जाने योग्य हो सकेंगे। परन्तु आफिया ने जवाब दिया कि अभी वह उन्हें

स्कूल नहीं भेजेगी। वह घर में ही उन्हें मज़हबी शिक्षा देगी। अमजद मनमसोस कर रह गया। कुछ दिनों के बाद अमजद एक दिन जल्दी घर आया तो वह बड़ा हैरान हुआ। आफ़िया टी.वी. पर वो कुछ देख रही थी जो कि जंग के मैदान में हो रहा था। आसपास मारा मारी हो रही थी। समीप ही लाशों के ढेर लगे हुए थे। अमजद से यह सब देखा न गया। पर जब उसने देखा कि आफिया ने बच्चों को भी अपने क़रीब बैठा रखा है तो उसके सब्र का प्याला छलक गया। वह गुस्से में आकर बोला, “आफ़िया, यह क्या है?“

“क्यों, क्या हुआ? जो सच है, वह सच है। फ़िर उसको देखने में क्या हर्ज़ है।“

“बात यह नहीं है। बात यह है कि तू इन बच्चों को इतनी ख़तरनाक घटनाएँ दिखा रही है। इनके मन पर क्या असर पड़ेगा।“

“मैं तो चाहती हूँ कि इनके मन पर असर पड़े। ताकि ये बड़े होकर तेरी तरह अमेरिकी भक्त न बनें।“

“यह सही नहीं है। और फ़िर मैंने अमेरिकी भक्त बनने वाली क्या बात कर दी?“

“तुझे अपनी नौकरी करने और पैसा बनाने तक ही मतलब है। तुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि आसपास मुसलमानों के साथ क्या हो रहा है।“

“अब मुसलमानों के साथ क्या अलग होने लग पड़ा जो तू आज इतनी संजीदा हुई बैठी है?“

“अमेरिका, इराक पर हमला करने की तैयारी कर रहा है।“

“यह तो एक दिन होना ही था।“

“क्यों ? क्यों होना था यह एक दिन ? सिर्फ़ इसलिए कि अमेरिका दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली है ?“ आफिया के माथे पर बल पड़ गए।

“नहीं, यह बात नहीं है। तू याद कर, जब 1991 में पहली इराक जंग डज़र्ट स्ट्रोम खत्म हुई थी तो जंगबंदी अहदनामे में यह मद शामिल थी कि इराक अपने बायलोजिकल और केमिकल हथियार खत्म करेगा। पर वो उसने खत्म ही नहीं किए और न ही करना चाहता है।“

“जब इराक ने कह दिया है कि उसके पास इस किस्म के हथियार है ही नहीं तो बात खत्म हो जानी चाहिए।“

“वो झूठ बोल रहा है। उसके पास ये सारे हथियार हैं।“

“तेरे पास क्या सबूत है ?“

“यह तो तुझे भी पता ही है कि इरान-इराक युद्ध आठ दस साल चलता रहा। पर जब खत्म होने पर आया तो एक दिन में ही खत्म हो गया। ऐसा पता है, क्यों हुआ था ?“

“क्यों ?“

“क्योंकि इराक ने युद्ध के मैदान में केमिकल हथियारों का प्रयोग किया था। हज़ारों इरानी फौजी मोर्चों में बैठे बैठे ही सदा की नींद सो गए। इस कारण विवश होकर इराक को लड़ाई बंद करनी पड़ी थी। सबको पता है कि इराक के पास अभी भी वो हथियार हैं। उनका इस्तेमाल करके वह लाखों लोगों को मौत के घाट उतार सकता है। साथ ही, यह फ़ैसला यू.एन.ओ. का है न कि अमेरिका का कि इराक को उन घातक हथियारों से मुक्त किया जाए।“

“यह तो सब बहाने हैं। असली मसला तो कुछ और है।“ आफिया उसकी किसी बात से सहमत नहीं हो रही थी।

“असली बात क्या है तू बता फिर ?“

“अमेरिका , इज़राइल को महा इज़राइल बनाने के लिए उसके करीबी मुल्कों को खत्म करके सबको इज़राइल में शामिल कर देगा। सारे अरब मुल्क खत्म हो जाएँगे। अकेला इज़राइल रह जाएगा और अरब के सारे तेल भंडारों पर अमेरिका का कब्ज़ा हो जाएगा। “

“यह मुमकिन नहीं है। यह सब कोरी अटकलें हैं। “

“क्यों मुमकिन नहीं है। पहले भी यही कुछ तो हुआ था। “

“पहले कब ?“

“जब यह सो-कॉल्ड इज़राइल बना था। तब भी ऐसी ही जबरदस्ती की गई थी। “

“मैं जानता हूँ कि तू क्या कहना चाहती है , पर मैं उस बात को भी अलग नज़रिये से देखता हूँ। तब इज़राइल नाम का कोई देश नहीं था। सिर्फ़ फलस्तीन नाम का देश था जो कि उस वक़्त अंग्रेजों का गुलाम था। फलस्तीन के यहूदी अधिक अधिकारों वाला सूबा मांगते थे। क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि अपने घर के बग़ैर उनका अस्तित्व कायम नहीं रह सकता। दूसरी बड़ी ज़ंग के समय ही हिटलर ने आधे से ज़्यादा यहूदी आबादी खत्म कर दी थी। उन्होंने जद्दोजहद करके अधिक अधिकारों वाला सूबा इज़राइल , फलस्तीन के अंदर ही ले लिया। जब अंग्रेज़ चले गए तो सारे अरब देशों ने मिलकर उस पृथक सूबे इज़राइल में से यहूदियों को भगाने की मुहिम शुरू कर दी। पर यहूदियों को इस बात का पहले ही अहसास था कि ऐसा होगा। उन्होंने भी अपनी तैयारी की हुई थी। जब हालात अधिक ख़राब हो गए तो अरब मुल्कों ने एकत्र होकर यहूदियों के खिलाफ़ मोर्चा खोल दिया। तू तो जानती ही है कि यह 1948 की इज़राइल -अरब देशों की पहली लड़ाई की बात है। उस लड़ाई में अरब मुल्क हार गए। फिर इज़राइल ने अपने आप को तगड़ा करना शुरू कर दिया। क्योंकि उसको पता था कि जो कुछ अब हुआ है , यह आगे भी होगा। और इस तरह हुआ भी। आगे चलकर 1973 में फिर इज़राइल और अरब देशों के बीच युद्ध हुआ। इस बार भी इज़राइल विजयी रहा। असली बात यह है कि यदि इज़राइल कमज़ोर हो तो अरब देश उसको एक दिन में ही खत्म कर दें। सो , अपने आप को बचाने का तो हरेक का पहला हक है। “

“अमजद, यह तू नहीं बोल रहा , तेरे अंदर का अमेरिकी व्यक्ति अमजद बोल रहा है। “ आफिया ने व्यंग्य कसा।

“जब तुझे कोई उत्तर नहीं सूझता तो तू मुझे यह ताना मार देती है। “

बातें करती आफिया ने इस तरह महसूस किया मानो उसके पेट में दर्द उठा हो और वह नीचे फ़र्श पर बैठ गई। अमजद ने शीघ्र ही एंबूलेंस को कॉल किया और उसको अस्पताल ले गया। परन्तु अस्पताल वालों ने किसी बीमारी की बजाय उनको ख़ुशी की ख़बर दी। आफिया तीसरे बच्चे की माँ बनने वाली थी। वे खुश-खुश घर लौट आए। घर आकर आफिया सोफे पर टेढ़ी होकर लेट गई। अमजद कुर्सी खींचकर उसके पास बैठ गया। आफिया उसके मुँह की ओर एकटक देखती रही। फिर आँखें भरकर बोली , “अमजद, मेरा यहाँ दिल नहीं लगता। “

“क्यों ऐसी क्या बात है ?“

“बस, पता नहीं क्या बात है। मैं चाहती हूँ कि हम पाकिस्तान वापस लौट चलें। “

अमजद कुछ न बोला। वह चुपचाप उसके मुँह की ओर देखता रहा तो आफिया फिर बोली , “तू कोई जवाब क्यों नहीं देता ?“

“आफिया, वहाँ जाकर तू पहले की तरह फ़िर मेरे पर ज़ोर डालेगी कि जिहाद में शामिल हो। “

“अमजद, मैं तो बीच में फंस गई हूँ। “ काफ़ी देर चुप रहने के बाद दीवार की ओर देखते हुए आफिया बोली।

“वो कैसे ?“

“एक तरफ तू है और दूसरी तरफ पाक पवित्र जिहाद। “

“आफिया, एक बात पूछूँ ? सच सच बताना। “

“हाँ पूछ। “ आफिया ने मुँह उसकी तरफ कर लिया।

“अगर कभी तुझे चुनाव करना पड़े तो तू किसका चुनेगी ? मुझे या जिहाद को ?“

“अमजद, अगर ऐसे चुनाव का वक़्त कभी आता है तो यह मेरे लिए बड़ा दुखदायी होगा। पर सच्ची बात पहले ही बता देती हूँ कि आख़िर मैं चुनूँगी तो जिहाद को ही। “ इतना कहते हुए आफ़िया ने आँखें मूंद लीं और सीधी होकर सोफे पर लेट गई। अमज़द उदास -सा उठकर बाहर चला गया।

अगले दिन सवेरे किसी फोन की घंटी ने आफिया को नींद से ज़गाया। फोन सुहेल का था। वह बताने लगा कि एफ .बी .आई. द्वारा केयर ब्रदर्ज़ और बोनेवोलैंस इंटरनेशनल के कई अन्य सदस्यों को पूछताछ के लिए पकड़ा था। पर लम्बी इंटरव्यू के बाद सब को छोड़ दिया गया। सुहेल ने आफ़िया को सावधान किया कि वह अपनी असली ई मेल पर कुछ भी संदेहास्पद न लिखे। साथ ही फोन का प्रयोग करते समय एतिहात बरते। कोशिश करे कि अधिक बात वह उसको दिए गए गुप्त फोन पर करे। सुहेल को लगा कि आफ़िया नींद में होने के कारण शायद बात नहीं करना चाहती। उसको सोने के लिए कहकर उसने फ़ोन काट दिया। आफिया को दुबारा नींद आने ही लगी थी कि फोन फिर बजा। उसने स्क्रीन पर देखा। सुहेल ही दुबारा फोन कर रहा था। उसने फ़ोन ऑन किया तो सुहेले बड़े उत्साह में बोला ,
“मैं जो कुछ बताने जा रहा था , वो तेरी नींद और तेरी सुस्ती सब मिटा देगा। “

“अच्छा !“

“मुझे अभी अभी अदनान शुक्रीजुमा का मैसज मिला है। “

“मेरे साथ भी उसकी रात ही बात हुई थी। पर अब वह क्या कह रहा है ?“

“आफिया, तुझे याद है न कि पिछले दिनों एक यहूदी पत्रकार ने पाकिस्तान जाकर जैशे मुहम्मद के लीडर की इंटरव्यू की थी और बाद में उसने जैशे

मुहम्मद के बारे में काफ़ी कुछ ऐसा भी लिखा था जो कि हमारे उस लीडर को पसंद नहीं आया था। “

“मुझे पता है। तू डेनियल पर्ल की बात कर रहा है। “

“हाँ, उसी की। उसको उसकी आख़िरी मंज़िल पर पहुँचा दिया गया है। “

“क्या मतलब?“ आफिया उछलकर खड़ी हो गई।

“तू यह एड्रेस इंटरनेट पर डालकर इस वेबसाइट को खुद देख। “ एड्रेस लिखवा कर सुहेल ने फ़ोन काट दिया। आफिया ने कंप्यूटर ऑन करके सुहेल द्वारा बताई गई वेबसाइट खोली और वीडियो चला दी। वीडियो शुरू हुई तो वह बड़े ध्यान से देखने लगी। दो ढके चेहरों वाले व्यक्ति डेनियल पर्ल को एक खुले आँगन में लेकर आते हैं। फिर उसकी बाहें पीछे से बाँध दी जाती हैं। ढके चेहरे वाला एक व्यक्ति आगे बढ़ता है और डेनियल पर्ल की जीभ काट देता है। फिर बायें हाथ से उसके बाल पकड़कर सिर को पीछे की ओर खींचता है और दायें हाथ से धीरे धीरे उसकी गर्दन इस तरह काटता है जैसे बकरे को हलाल किया जाता है। सब कुछ करीब दो मिनट की वीडियो में ही घटित हो जाता है। आफिया इन दो मिनटों में आँखें नहीं झपकती। पहले उसका चित्त खराब होने लगता है। फिर उसको अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा मारे जा रहे जिहादी याद आते हैं तो उसका मन बदलने लगता है। आख़िर में वह उन जिहादियों पर गर्व महसूस करती है जो डेनियल पर्ल की हत्या करते हैं।

अगले दिन यह घटना अख़बारों की मुख्य सुर्खी बन गई। असल में डेनियल पर्ल कई दिनों से पकड़ा हुआ था। उसकी गर्भवती पत्नी ने टी.वी. पर जाकर जिहादियों से विनती भी की थी कि उसके पति की जान बख़्श दी जाए। उसने कहा था कि और किसी के लिए नहीं तो इस नन्हीं जान के लिए ही सही, जो कुछ ही महीनों बाद जन्म लेने वाली है। कम से कम इसको पिता से वंचित न किया जाए। पर उसकी मिन्नतों का कोई असर न हुआ। आतंकवादियों ने पर्ल की सिर्फ़ हत्या ही नहीं की, बल्कि उसको मारते समय की वीडियो इसलिए बनाई ताकि अन्य पत्रकारों डराया जा सके।

अमेरिका युद्ध का मुँह हालांकि इराक की तरफ मोड़ रहा था, पर उसने अलकायदा सदस्यों का पीछा करना और तेज़ कर दिया था। आख़िर, मार्च 2002

में अमेरिका को उस वक़्त सफलता मिली जब उन्होंने बहुत ही उच्च कोटि का अलकायदा सदस्य अबू जुबेद पकड़ लिया। पहली बार अबू जुबेद ने ऐसी जानकारी दी कि अमेरिकी सरकार के होश उड़ गए। उसके अनुसार नाइन एलेवन की सारी कार्रवाई को अंजाम देने की जिम्मेदारी खालिद शेख मुहम्मद की थी जिसको कि आमतौर पर के.एस.एम. कहा जाता था। और 1993 में नॉर्थ टॉवर के पॉर्किंग लॉट में बम धमाका करके छह जनों की मौत और सैकड़ों को ज़ख़्मी करने वाला रम्ज़ी यूसफ इसी के.एस.एम. का भतीजा है। अमेरिकी एंजेसियाँ जो अब तक नाइन एलेवन को लेकर अँधेरे में ही तीर मार रही थीं, अब सारी कहानी समझ गईं। वे जान गईं कि कैसे के.एस.एम. ने ओसामा बिन लोदन के साथ मिलकर नाइन एलेवन वाली घटना का खाका बनाया। फिर इसको अंजाम देने की सारी जिम्मेदारी भी के.एस.एम. ने ही पूरी की। उसने सारे आतंकवादियों को अमेरिका में पहुँचाने में मदद की और उन्हें ट्रेनिंग दी। अबू जुबेद बहुत थोड़े टार्चर के बाद ही बहुत कुछ उगल गया। उसने के.एस.एम. की भविष्य की स्कीमों के बारे में भी बता दिया। अबू ने बताया, “के.एस.एम. अपनी इस नाइन एलेवन की प्राप्ति से बहुत उत्साहित है। वह इस लड़ाई को ज़ोर-शोर से आगे बढ़ाते हुए दूसरे बड़े हमले की तैयारी कर रहा है। उसकी आगे की योजना यह है कि अमेरिका में रेडियो एक्टिव बमों के साथ हमला किया जाए। अमेरिका की प्राकृतिक गैस लाइनों को आग लगा दी जाए जिससे एक ही बार में लाखों लोग मर जाएँगे। या फिर वह चाहता है कि अमेरिका के पानी के सिस्टम में ज़हर मिला दिया जाए। इससे भी बहुत लोग मरेंगे। अमेरिकी एटमी ऊर्जा प्लांट भी उसके निशाने पर हैं।“

अबू ज़ुबेद ने यह भी बताया कि इस दूसरे हमले के लिए के.एस.एम. ने भिन्न तरीका अपनाया है। इसके लिए वह पहले से ही अमेरिका में रह रहे लोगों में से जिहादियों की भर्ती कर रहा है। इस काम के लिए उसने होज़े पदीला जैसे कई लोग चुन भी लिए हैं। इसके अलावा अबू ज़ुबेद ने आगे बताया कि अगली सारी योजनायों को अंजाम देने के लिए के.एस.एम. ने अदनान शुक्रीजुमा को जिम्मेदारी सौंपी है। वही अमेरिका में रहते हुए आगे के आपरेशनों को अंजाम देगा। अबू ज़ुबेद से जिनके बारे में जानकारी मिली, एफ.बी.आई. उन सबके पीछे लग गई।

13